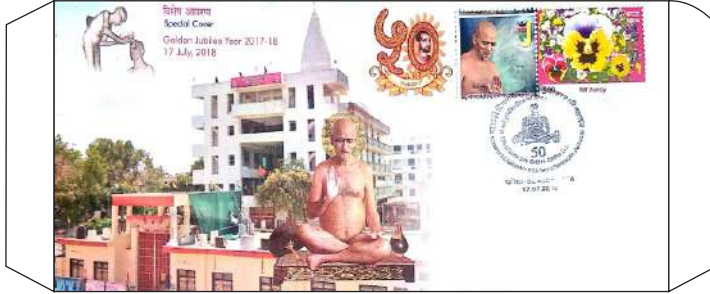


इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बरार्च्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वरूप महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री सकल दिगम्बर जैन समाज समिति कोटा (राज.) के माध्यम से दिनांक 17-07-2018 को भारतीय डाक विभाग के राजस्थान डाक परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रुपये में जारी किया गया।



संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि (मार्च फाल्गुन शुक्ल)	नक्षत्र	तीर्थकर कल्याणक
16	शनिवार	दशमी	पुनर्वसु	24 मार्च : भगवान पार्श्वनाथ - ज्ञान कल्याणक
17	रविवार	एकादशी	पुष्य	25 मार्च : भगवान चन्द्रप्रभ - गर्भ कल्याणक
18	सोमवार	द्वादशी	आश्लेषा	28 मार्च : भगवान शीतलनाथ - गर्भ कल्याणक
19	मंगलवार	त्रयोदशी	मघा	29 मार्च : भगवान आदिनाथ - जन्म-तप कल्याणक
20	बुधवार	चतुर्दशी/पूर्णिमा (चैत्र कृष्ण)	पूर्वाफाल्गुनी	05 अप्रैल : भगवान अनन्तनाथ - ज्ञान-मोक्ष कल्याणक
21	गुरुवार	प्रतिपदा	उत्तराफाल्गुनी	05 अप्रैल : भगवान अरुनाथ - मोक्ष कल्याणक
22	शुक्रवार	द्वितीया	हस्त	06 अप्रैल : भगवान मल्लिनाथ - गर्भ कल्याणक
23	शनिवार	तृतीया	चित्रा	08 अप्रैल : भगवान कुन्थुनाथ - ज्ञान कल्याणक
24	रविवार	चतुर्थी	स्वाति	10 अप्रैल : भगवान अजितनाथ - मोक्ष कल्याणक
25	सोमवार	पंचमी	विशाखा	11 अप्रैल : भगवान संभवनाथ - मोक्ष कल्याणक
26	मंगलवार	षष्ठी	अनुराधा	15 अप्रैल : भ. सुमतिनाथ - जन्म-ज्ञान-मोक्ष कल्याणक
27	बुधवार	सप्तमी	ज्येष्ठा	
28	गुरुवार	अष्टमी	मूल	
29	शुक्रवार	नवमी	पूर्वाषाढ़	
30	शनिवार	दशमी	उत्तराषाढ़	
31	रविवार	एकादशी	श्रवण	
1	सोमवार	द्वादशी (अप्रैल 2019)	धनिष्ठा	20 मार्च : अष्टान्हिका व्रत पूर्ण
2	मंगलवार	त्रयोदशी	शतभिषा	20 मार्च : षोडशकारण व्रत प्रारंभ
3	बुधवार	चतुर्दशी	पूर्वाभाद्रपद	06 अप्रैल : लब्धिविधान व्रत प्रारंभ
4	गुरुवार	अमावस	उत्तराभाद्रपद	09 अप्रैल : लब्धिविधान व्रत पूर्ण
5	शुक्रवार	(चैत्र शुक्ल)	रेवती दिन/रात	09 अप्रैल : दशलक्षण व्रत प्रारंभ
6	शनिवार	प्रतिपदा	रेवती	10 अप्रैल : पुष्पांजलि व्रत प्रारंभ
7	रविवार	द्वितीया	अश्विनी	10 अप्रैल : रोहिणी व्रत
8	सोमवार	तृतीया	भरणी	14 अप्रैल : पुष्पांजलि व्रत पूर्ण
9	मंगलवार	चतुर्थी	कृत्तिका	
10	बुधवार	पंचमी	रोहिणी	
11	गुरुवार	षष्ठी	मृगशिरा	
12	शुक्रवार	सप्तमी	आर्द्रा	
13	शनिवार	अष्टमी	पुनर्वसु	
14	रविवार	नवमी/दशमी	पुष्य/आश्लेषा	
15	सोमवार	एकादशी	मघा	
शुभ मुहूर्त				
दुकान प्रारंभ : मार्च-17,21,23, अप्रैल-5,6,10,13				
वाहन क्रय : मार्च-17,21,25,31, अप्रैल-10,11,12				
मशीनरी प्रारंभ : मार्च-16,17,23, अप्रैल-7,10				
विद्यारंभ मुहूर्त : मार्च-18,17, अप्रैल-7				
17 मार्च : 06/38 बजे से 24/12 बजे तक ।				
23 मार्च : 09/06 बजे से 30/31 बजे तक ।				
25 मार्च : 07/04 बजे से 30/21 बजे तक ।				
30 मार्च : 15/39 बजे से 30/24 बजे तक ।				
05 अप्रैल : 06/20 बजे से 30/19 बजे तक ।				
07 अप्रैल : 06/18 बजे से 08/45 बजे तक ।				
09 अप्रैल : 06/16 बजे से 10/20 बजे तक ।				
10 अप्रैल : 06/15 बजे से 30/14 बजे तक ।				
12 अप्रैल : 09/55 बजे से 30/12 बजे तक ।				
14 अप्रैल : 06/11 बजे से 08/41 बजे तक ।				



संस्कार सागर

• वर्ष : 20 • अंक : 239 • मार्च 2019

• वीर नि.संवत् 2545 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1939

लेख

- बहुत याद आते हैं मुनि क्षमासागर जी 09
- जैन वाङ्मय में आयुर्वेद 12
- प्रथमोपशम सम्यक्त्व एक अनुचिंतन 16
- संवेदना: पुस्तक नहीं आईना है 21
- मां तो बस मां होती है, मां तुझे सलाम 22
- विज्ञान और अध्यात्म के सेतु नैनागिरि के संत क्षमासागर जी 27
- जैन व्यक्तित्व डॉ. इन्द्र चंद्र शास्त्री 44
- जैनदर्शन में वस्तु स्वातंत्र्य 46
- स्थिरता और अनुशासन के प्रतीक भगवान बाहुबली 55
- सायेटिका का रोग कारण व नियंत्रण 58

बाल कहानी

- ठगी चार लाख की 59

कविता

- मानवता का दम 08
- नफरत की नहीं अब जरूरत है प्यार की 11
- प्रदूषण (पेड़ पौधों की हत्या) 15
- वो सुबह 26
- सत्य को चुनना भाई 33
- मैं मोर हूँ 40

कहानी

- दो वेंत 41

नियमित स्तंभ

- पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 12
- चलो देखें यात्रा : 25 • आगम दर्शन : 29 • पुराण प्रेरणा : 31 • माथा पच्ची : 31
- कैरियर गाइड : 32 • दुनिया भर की बातें : 34 • इसे भी जानिये : 38 • दिशा बोध : 39
- आओसीखें : जैन न्याय : 40 • डाकटिकटों पर जैन इतिहास : 44 • हमारे गौरव : 54 • हास्य तरंग : 59
- बाल संस्कार डेस्क : 60 • संस्कार गीत व बाल कविता : 61 • समाचार : 62

प्रतियोगिताएं

: अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : 65 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा - परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री
विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल-9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, सादूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

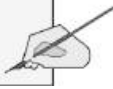
* आंतरिक सज्जा *
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

- लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए
- कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

• श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मांदि प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का बाकी सदस्यता शुल्क जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें। बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।
सदस्यता शुल्क -आजीवन : 2100/- (15 साल) परम संरक्षक : 15000/-
अपनेशहर के • स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (संस्कार सागर) खाता क्र. 63000704338 (IFSC: SBIN0030463) • भारतीय स्टेट बैंक (ब्र. जिनेश मलैया) खाता क्र. 30682289751 (IFSC: SBIN0011763) • ओरिएण्टल बैंक ऑफ कामर्स खाता क्र. 07882151004198 (IFSC: ORBC0100788) • आईडीबीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ) खाता क्र. 155104000037022 • आईसीआईसीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ) खाता क्र. 004105013575 (IFSC: ICIC0000041) में भी अपनेपूर्ण पतेसहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय कोसूचित कर सकते हैं।
कार्यालय संस्कार सागर श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 फोन नं. : 0731-2571851, 4003506 मो. : 89895-05108, 8717924109 website : www.sanskarsagar.org e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

पाती
पाठकों
की....



• सम्पादक महोदय, विगत दिसम्बर में विधानसभा चुनाव 5 राज्यों में हुआ जिनमें सरकारों का गठन हुआ छत्तीसगढ़ एवं म.प्र. के मंत्रीमण्डल में एक भी जैन मंत्री नहीं जबकि म.प्र. मंत्रीमंडल पिछले सत्र में 4 जैन मंत्री थे कांग्रेस पार्टी अगर जैन समाज के महत्व की कमी महसूस करे तो इस दिशा में प्रयास भी कर सकती है जैसे कि जब 1993 में विधानसभा में एक भी मुस्लिम विधायक नहीं था तब कुरैशी साहब के लिये मानद पद प्रदान करके मुस्लिम समाज का अस्तित्व बनाये रखा था ऐसा ही मुख्यमंत्री कमलनाथ जी जैन समाज के लिये कर सकते हैं जैन समाज को भी अपना पक्ष माननीय कमलनाथ के सामने रखना चाहिये जिससे जैन प्रतिनिधि का समावेश सरकार में हो सके।

अरूण जैन (सागर)

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के फरवरी अंक में डॉ. पंकज जैन का लेख दृष्टि गोचार हुआ जिसका शीर्षक था **जैनधर्म सामाजिक योगदान** प्रथम दृष्टया ऐसा लगा कि प्रस्तुत लेख कुछ अलग ही सोच का होगा जिसमें मात्र ऊपर ऊपर ही की बातें होंगी किन्तु यह आलेख सार गर्भित है। परन्तु सही मायने में शोधलेख होने से इसका विस्तार होना स्वाभाविक ही है समाज की प्रथम ईकाई परिवार है। जब परिवार से धर्म संस्कारों की विदाई हो जाती है तब समाज का स्वरूप खंडित हो जाता है। आज परिवार सुरक्षा काफी महत्वपूर्ण है। ऐसे समय पर जैनधर्म का समाज के लिये जो योगदान है उसे मानस पटल पर लाना एक सम सामायिक पहल है।

अनिल जैन (महरौनी)

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर को कहानी की पत्रिका में मानने को तैयार पत्रिका

प्रत्येक अंक एक कहानी के साथ बाल कहानी ने भी पाठकों पर गहरा प्रभाव डाला है अपनी 20 वर्ष की यात्रा पूर्ण करने को तैयार संस्कार सागर ने अंधविश्वास मुक्ति, व्यसन मुक्ति तथा संस्कार निर्माण का अभियान सोद्देश्य कहानियाँ के माध्यम से संचालित किया गया है संस्कारों की विजय पताका लेकर मार्च पास्ट करने वाली पत्रिका ने अध्यात्म नाद घोष करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी है। अब प्रस्तुत पत्रिका को एक काम करना ही शेष रहा है कि 2021 में होने वाली राष्ट्रीय जनगणना जैन जगत को मात्र जैन लिखने की प्रेरणा दे।

कमल चौधरी (राहतगढ़)

• सम्पादक महोदय, कुछ दिनों बाद लोकसभा चुनाव की घोषणा होने वाली है राजनीति के कारोबारी टिकट मंडी टिकट खरीदने के लिये लाईन में लग चुके हैं। वे करोड़ों रुपये खर्च करके किसी दल का टिकट खरीदना चाहते हैं और वे टिकट खरीद कर चुनाव में जब करोड़ों रुपये लगायेंगे तो वे उससे कहीं अधिक ही तो कमायेंगे ऐसे वे सिर्फ भ्रष्टाचार को ही बढ़ावा देंगे। वे भगवान से मात्र यही प्रार्थना करेंगे कि भगवान भारत में मजबूर सरकार आये ताकि हम बिकाऊ सांसद बन सकें अच्छा मुनाफा कमा परिवारवाद जातिवाद क्षेत्रवाद को बढ़ावा देने में सफल हो सकें। पर निवेदन देश के मतदाताओं से है कि ऐसे जनप्रतिनिधि उम्मीदवारों की पहचान करके उनका बहिष्कार करें भारतदेश के लिये मजबूत सरकार दें ताकि शोषण अन्याय भ्रष्टाचार को ताकत से रोका जा सके।

अंशुल पारासर (लटेरी)

भक्ति तरंग सच्ची संपत्ति



शिवमगदरसावन रावरो दरस
परमपद- चाह- दाह- गद- नाशन
तुम बच भेषज-पान सरस
गुणचितवत निज अनुभव प्रगटै
विघटै विधिठग दुविध तरस
दौल अवाची संपत्ति सांची
पाय रहै थिर राच सरस

हे भगवान आपके दर्शन-मोक्षमार्ग-प्रकाशक हैं, मोक्ष का मार्ग दिखाने वाले हैं।

पुद्गल की चाहरूपी दाह के बिष-रोग का नाश करने वाले आपके सुवचन-परम औषधि रूप हैं, जिनका सेवन, चिन्तन, मनन, अनुगमन आनन्द देने वाला है। रस से भरा हुआ है।

आपके गुण-चिंतन से निज के गुणों का भान होता है। हममें भी वे गुण प्रकट होते हैं और पाप-पुण्य रूपी कर्म-ठग तरस कर भाग जाते हैं।

दौलतराम कहते हैं कि अव्यक्त अकथ व अवर्णनीय-जिसका कथन नहीं किया जा सकता ऐसी आत्मगुणों की संपत्ति को पाकर उसमें स्थिर हो जाओ अर्थात् अपने निज स्वरूप में लीन हो जाओ जो आत्मानंद रूपी रस से भरपूर है।



भारत में विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है 90 करोड़ भारतीय मतदान कर सकते हैं। मतदान का दिन लोकतंत्र का महापर्व होता है। जब आप मतदान करने जा रहे हो तब आपके मन में एक विकल्प उमड़ा घुमड़ता रहता है कि अपना अमूल्य मत किसे दिया जायें? उस समय क्षेत्र, जाति, पंथ, धर्म, सम्प्रदाय का मोह मतदाता का मन में राष्ट्र के महत्व को पीछे धकेल देता है। सच भी है क्योंकि मोह एक ऐसी बिडम्बना है जो व्यक्ति को यथार्थ से भटकाने का काम करता है। व्यक्ति को स्वार्थी अहंकारी बना देता है। स्वार्थ साधना की आंधी में मनुष्य और राष्ट्र, आत्म, मोक्ष जैसे महत्वपूर्ण शाश्वत तथ्यों को ओझल कर देता है पर हमें विचार करना है कि जिस समय लोकसभा की चुनाव प्रक्रिया में हम मतदान करने जा रहे हों उस अवसर पर व्यक्तिगत लाभ परेशानियों, अपेक्षाओं, तंगियों आदि को राष्ट्र के विकास व सुरक्षा के लिये उत्सर्ग करना ही होगा।

सरकार से अपेक्षा हर नागरिक को होती है और होनी भी चाहिये परन्तु राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे पर समझौता किया जाना एक बहुत बड़ी चूक होगी जिस चूक का परिणाम बहुत ही विकराल हो सकता है। राजनीति कूटनीति की स्थापना इसलिये नहीं की गई वे राष्ट्र को पीछे धकेल कर सत्ता-स्वार्थ के लिये ओछे हथकंडे अपनाते रहें। सत्ता पर काबिज लोग कभी स्थायी नहीं हो सकते हैं और किसी भी राजनैतिक दल की सत्ता पर स्थाई पकड़ नहीं रही है। वह तो कपड़े की तरह बदलती रहती है। हाँ राष्ट्रीय धर्म, संगठन, लोकतंत्र, संविधान सदैव शाश्वत हैं उनके मूल्य को कम नहीं आंका जा सकता है। लोकसभा चुनाव के समय तदाता को किसी भी तरह से भ्रमित होकर राष्ट्र के मूल्य को कम नहीं होने देना चाहिये।

बुद्धिजीवियों, राजनैतिकों, नेताओं, मीडिया के चैनलों से प्रसारित होने वाले विचारों को सुनकर वाट्स एप, फेसबुक सोशल मीडिया की फेक न्यूज पेड़-न्यूज से हम प्रभावित अवश्य होते हैं और हमारे मन में लालच, आशा, क्रोध, भय पैदा हो जाता है, बस एक यही समय है जब हमें अपनी सदबुद्धि को जीवित रखना है। उस पर अवसरवादिता को हावी नहीं होने देना है। बस एक ध्येय हमारा रहे कि राष्ट्रीय सुरक्षा से खिलवाड़ और सौदा करने वाले प्रत्याशी को अपना समर्थन और मत नहीं देना है क्योंकि एक दिन मतदाता का होता है और 5 साल धूर्त राजनीतिज्ञों, अहंकारी और छलिया लोगों के होते हैं। मतदाता का विवेक, स्वार्थ त्याग बलिदान और राष्ट्रीय भावना के साथ किया गया मतदान ही हमारी भारत माता के सम्मान को विश्व में सर्वोच्च स्थान प्रदान करायेंगा।

जो राजनैतिक दल और प्रत्याशी भारत को विकास के साथ सत्य-अहिंसा के लक्ष्य तक ले जाने का संकल्प ले तथा मतदाता को झूठे वादे करके लुभावने सब्जवाग न दिखायें। हकीकत के धरातल पर खड़ा होकर मानवता राष्ट्रीय विकास और चरित्र चिंतन को साकार करें ऐसे ही प्रत्याशी के पक्ष में आप मतदान करें। समस्त बलिदानों को आहूति देकर हमारे राष्ट्र निर्माताओं, ऋषियों और संतो ने सदैव राष्ट्र का मस्तिष्क ऊँचा करने का प्रयास किया है। बस आपको एक ही पहचान करना है कि कौन राष्ट्र को सर्वोपरि मानकर अपने त्याग समर्पण के आधार पर भारत का गौरव दिन रात प्रयास करके गगन चुम्बी बना सकता है। परिवार के लिये नहीं राष्ट्र के लिये समर्पित दल को ही आप चुने तो राष्ट्र के हित में आपका बहुत बड़ा योगदान होगा।

कविता

मानवता का दम

✽ इन्द्रकुमार जैन (शशीन्द्र) बाकल वाले ✽



आधुनिक युग में हम उड़ रहे हैं अविरल अखंड सपनों में
अपनत्व खो रहे दिन प्रतिदिन पल प्रति पल अपनों में
हकीकत के दायरों से बन रहीं है,
इन हालातों से अथाह दूरियाँ
प्रबल इच्छा शक्ति खतम होती
श्रद्धा भक्ति निर्मित कर रहीं मजबूरिया
चोरी, डकैती भ्रष्टाचार ईमानदारों पर
अत्याचार बेईमानों को पूरियाँ
ये हैं आधुनिक युग की मजबूरियाँ ? जी हाँ
इसी कारण ही हम जीतें जी तोड़ रहे हैं
बेबस तड़फती इस आधुनिक भारत की मानवता का दम।

बहुत याद आते हैं मुनि क्षमासागर जी

✽ डॉ. अनिल कुमार जैन, जयपुर ✽

आचार्य श्री विद्यासागर जी के परम शिष्य मुनि श्री क्षमासागर जी आज हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन उनकी सोच, उनके विचार, उनके कार्य आज भी उतने ही प्रासंगिक बने हुये हैं। जितने इनके समय में थे। उनकी कार्य पद्धति अन्य संतो से भिन्न थी। उनका मानना था कि यदि हम बच्चों और युवाओं में धर्म के संस्कारों का बीजारोपण आज कर दें तो यह मानिये कि जैन धर्म पचास-साठ वर्षों के लिये सुरक्षित हो गया। और यदि इन युवाओं को कुछ इस प्रकार प्रशिक्षित कर दें कि बड़े होने पर वे अपने से कम उम्र के या छोटे बच्चों को भी इसी प्रकार के संस्कार दे पायें नो धर्म में निरन्तरता बनी रहेगी तथा सदियों तक जैन धर्म सुरक्षित रह सकेगा। ज्ञानवान होना अच्छी बात है, चारित्रवान होना उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। जब जैन धर्म को मानने वाले चरित्रवान होंगे तभी तो जैन धर्म भी सुरक्षित रहेगा। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुये मुनि श्री ने बच्चों और युवाओं के लिये विशेष कार्य किये।

मुनि श्री का मानना था कि यदि हम बच्चों से बात कर रहें है तो हमें बच्चों जैसा बनना पड़ेगा तभी वह हमारी बात को समझेंगे और मानेंगे। इसी प्रकार यदि हम युवाओं को संबोधित करें तो उस भाषा में ही करें जिसमें युवा अपने को सहज महसूस करें। यदि वे विज्ञान की भाषा में सहज अनुभव करें तो विज्ञान की भाषा में धर्म के महत्व को बतायें।

पांच-छह साल के बच्चे भी मुनि श्री के पास आने में कोई संकोच नहीं करते थे। मुनि श्री भी इन्हें कभी नजर अन्दाज नहीं करते थे। बच्चे निःसंकोच मुनि श्री को णमोकार मंत्र या कोई छोटी जैन कविता सुनाकर स्वयं प्रसन्नता का अनुभव करते थे। मुनि श्री उन बच्चों को एक पेन या पेंसिल दे देते थे। इस प्रकार बच्चों का मुनि श्री से एक मधुर सम्बन्ध स्थापित हो जाता था। जो बच्चे कुछ नहीं सुना पाते थे, मुनि श्री उन्हें भी यह कर पेंसिल दे देते थे कि अगली बार याद करके आना। छोटी-छोटी ये बातें बच्चों पर गहरा असर करती थी। फिर मुनि श्री उन बच्चों को धर्म की छोटी-छोटी बातें भी बताते थे।

दसवीं- बारहवीं के बच्चों को तथा युवाओं को भी मुनि श्री ने जैन धर्म से जोड़ने में सफल प्रयास किया। **मैत्री समूह** नायक एक ग्रुप तैयार किया। इस ग्रुप में प्रत्येक वह सदस्य बन सकता था जो जैन धर्म में विश्वास रखता हो तथा सदाचारी हो। पर मैत्री समूह अपने आप में एक अनूठा प्रयोग था। न इसकी कोई सदस्यता शुल्क, न कोई पदाधिकारी और न ही कोई धन का संग्रह। यदि कभी धन की आवश्यकता हुई तो इसके सदस्य अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार इतना ही धन संग्रह करने जितने की आवश्यकता होती। मुनि श्री का मानना था कि अधिक धन संग्रह होने पर आपस में लोग झगड़ते हैं, अतः ऐसा काम ही न करो जिससे लोग धर्म सीखने के बजाय झगड़ा करने लगें। प्रारम्भ में इस प्रकार की विचारधारा कुछ अटपटी लग रही थी कि बिना पैसे और बिना पदाधिकारियों के यह संस्था क्या कर सकेगी। लेकिन इस संस्था के अन्तर्गत अनेक

महत्वपूर्ण कार्य हुये। पुस्तकों का प्रकाशन, बच्चों की **यंग जैना अवार्ड** जरूरतमन्द बच्चों की आर्थिक सहायता आदि सभी कार्य सुचारू रूप से चलते रहे। किसने कितनी सहयोग राशि दी, किसी को कुछ पता नहीं।

यंग जैन अवार्ड: स्कूलरशिप तथा आर्थिक सहायता बहुत सफल कार्यक्रम रहे। अनेक युवा इन कार्यक्रमों के कारण मुनि श्री से अनायास ही जुड़ गये। मुनि श्री इन बच्चों की बहुत ही प्रोफेशनल तरीके से संस्कारित करते। बच्चों को हमेशा जैन धर्म जुड़े रहने के लिये प्रेरित करते। चूँकि बच्चों को धर्म की बातें वैज्ञानिक तरीके से तथा सामान्य भाषा में समझाई जाती थी जिन्हें वे सहज तरीके से स्वीकार कर लेते थे तथा सन्तुष्ट हो जाते थे। आज यह देखकर बहुत प्रसन्नता होती है कि ये अवार्ड बच्चे देश-विदेश में अच्छे-अच्छे पदों पर कार्यरत हैं। आज के ये युवा मुनि श्री द्वारा दी गई शिक्षा को भूले नहीं है तथा एक चारित्रवान और संस्कारित जीवन जी रहे हैं। इन युवाओं ने मुनि श्री की अनुपस्थिति में एक और बीड़ा उठाया है। अब ये युवा स्वयं **यंग जैना अवार्ड** का आयोजन करते हैं इसी उत्साह और लगन के साथ जैसा मुनि श्री के सामने होता था। कभी किसी से पैसा मांगते नहीं देखा। जितनी क्षमता है उतना अपने बलबूते पर स्वयं ही करते हैं।

महामस्तकाभिषेक 2018 के अवसर पर मुझे श्रवणबेलगोला जाने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। वहाँ प्रदर्शनी स्थल पर कई बूथ लगे हुये थे। इस बूथ में मुनि श्री के जीवन की कुछ फोटो तथा उनकी कुछ प्रसिद्ध कविताओं को प्रदर्शित किया गया था। साथ ही मुनि श्री द्वारा रचित साहित्य भी था। मुनि श्री के बारे में बताने के लिये वहाँ कार्यकर्ता भी थे। यह वे कार्यकर्ता थे जो किसी न किसी रूप में मुनि श्री से जुड़े हुये थे या फिर यंग जैना अवार्ड से जुड़े थे। ये युवा अपने-अपने काम से छुट्टी लेकर आये थे तथा बारी-बारी अपनी इयूटी दे रहे थे। मुनि श्री के प्रति ऐसी श्रद्धा व समर्पण देखकर हृदय गद्गद हो गया। मुनि श्री ने जो संस्कार इन्हें दिये थे उन्हें ये आज भी पालन कर रहे हैं।

विज्ञान से जुड़े व्यक्ति प्रायः धर्म की बातों को नजर अन्दाज करते हैं। मुनि श्री ने ऐसे व्यक्तियों को भी जैन धर्म से जोड़ा। धर्म और विज्ञान पर कई संगोष्ठियाँ भी आयोजित कराई। इन संगोष्ठियों का एक मात्र उद्देश्य यह स्थापित करना था कि जैन धर्म एक वैज्ञानिक धर्म है। ये संगोष्ठियाँ बहुत ही सफल रहीं। सभी संगोष्ठियाँ बहुत ही भव्यता के साथ सम्पन्न हुई।

मुनि श्री ने प्रश्नोत्तर के कार्यक्रम आयोजित किये। चाहें बच्चे हो या बड़े, सभी को बहुत ही सरल व सुबोध उत्तर देकर सन्तुष्ट कर देते थे। उनके सभी प्रश्नोत्तर को संग्रहित नहीं करा जा सका है, अन्यथा यह भी एक महत्वपूर्ण दस्तावेज होता। मुनि श्री ने अनेक कविताओं का सृजन किया। मुनि श्री द्वारा रचित अनेक पुस्तकें आज भी उपलब्ध हैं तथा बहुत ही लोकप्रिय भी हैं।

उस समय टेलीविजन पर कार्यक्रमों को प्रसारित करने का प्रचलन नहीं था, लेकिन मैं इतना निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि मुनि श्री के सान्निध्य में आयोजित प्रत्येक कार्यक्रम भव्यता लिये हुये एक दम अपने आप में परिपूर्ण (Perfect) होते थे। इस पूर्णता का कारण था कार्यकर्ताओं की मुनि श्री के प्रति श्रद्धा व समर्पण। सभी कार्यकर्ता बिना किसी अपेक्षा के अपनी

सेवा देते थे। मुनि श्री के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम नई-नई ऊँचाईयाँ छू रहे थे। मुनि श्री जब अपने चरम पर थे तभी अशुभ कर्म के उदय से उनका स्वास्थ्य खराब हो गया तथा निरन्तर गिरता ही चला गया। यह हमारा दुर्भाग्य ही रहा कि वे हमारे बीच और अधिक न रह सके और 13 मार्च 2015 को समाधिस्थ हो गये।

मुनि श्री के सान्निध्य में आयोजित प्रत्येक कार्यक्रम आज भी हमारी आँखों के सामने हैं। उनका प्रत्येक कार्य कुछ उद्देश्य को लेकर था। उन्हें स्वयं प्रसिद्धि की कोई चाह नहीं थी। वे प्रत्येक कार्य अपने गुरु पूज्य श्री विद्यासागर जी को समर्पित करते थे। उनके प्रत्येक कार्य मील का पत्थर सिद्ध हुये। कई संत मुनि श्री क्षमासागर जी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

मुनि श्री क्षमासागर जी को उनके द्वितीय समाधि दिवस (दिनांक 13 मार्च 2018) के अवसर पर मैं श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ।

कविता

नफरत की नहीं अब जरूरत है प्यार की



नफरत की नहीं अब जरूरत है प्यार की
एकता की हर दम बजती सितार की
पेट की रोटियाँ तक जिनको नसीब नहीं
मुफलियों की बस्ती में क्या कीमत मीनार की
पत्तों की जुबां से मैंने सुनी पतझड़ की आहटें
क्या सुनाये दास्ता उनके बहार की
आजकल वो निकलते हैं जैसे जानते नहीं
अनसुनी वो कर गये बातें पुकार की
जिन्दगी की मोड़ पर कहीं भी मिल जाना
आँखो को आदत है आजकल इंतजार की

गंगा के आगे

जैन वाङ्मय में आयुर्वेद

* डॉ. सुशील जैन (मैनपुरी उ.प्र.) *

महर्षि पूज्यपाद ने वैद्यक ग्रन्थ का निर्माण किया है। प्रकृत ग्रन्थ में भी आचार्य ने पूज्यपाद के ग्रंथ का उल्लेख किया है। इसके अलावा शिलालेखों में भी उल्लेख मिलता है।

पूज्यपाद के पहले महर्षि समंतभद्र हर एक विषय में अद्वितीय विद्वत्ता को धारण करने वाले हुये। आपने न्याय सिद्धान्त के विषय में प्रौढ़ प्रभुत्व को प्राप्त किया था। आपके द्वारा सिद्धान्त **रसायन कल्प** नामक ग्रन्थ की रचना अठारह हजार श्लोक परमिट हुई थी। परन्तु आज वह कीटों का भक्ष्य बन गया है। कहीं कहीं उसके श्लोक मिलते हैं, जिनको संग्रह करने पर दो तीन हजार श्लोक सहज हो सकते हैं।

सिरि भूवल्लय नामक एक जैन ग्रन्थ है। यह विश्व में एक अति प्राचीन अद्भुत और महत्वपूर्ण माना जाता है। यह ग्रन्थ भगवान आदिनाथ ने सुन्दरी को उपहार के तौर पर दिया था। यह ग्रन्थ संख्याओं में लिखा हुआ है। ये संख्यायें 64 ध्वनियाँ होकर ब्राह्मी लिपि के रूप में हैं। जैनाचार्य कुमुदेंदु आचार्य ने 680 के समीप सिरि भूवल्लय ग्रन्थ का सिर्फ अंकों के द्वारा ही प्रचार किया। इस ग्रन्थ के 56 खण्ड हैं। जिनमें 363 दार्शनिक पद्धतियाँ और 64 तकनीकी पद्धतियाँ हैं। इसमें आयुर्वेद का विस्तार से वर्णन किया है। इसमें स्वर्ण व प्लेटिनम को बनाने की रासायनिक विधि भी दी गयी है। इसमें आयुर्वेद की 7 पद्धतियों का विवरण दिया गया है। आयुर्वेद की पुष्प चिकित्सा जिसमें 18000 अलग अलग फूलों के उपयोग का चिकित्सीय विवरण दिया गया है। **अभी तक पुष्पायुर्वेद का निर्माण जैनाचार्यों के सिवाय किसी और ने नहीं किया है।**

अनेकों ऐसी वनस्पतियाँ वर्णित हैं जो कि शारीरिक सुन्दरता हेतु प्रयुक्त होती थी। जैसे- नागचम्पा के पुष्पों से बनी रस मणि का काम शारीरिक सौन्दर्यता, आयु, शक्ति एवं यौवन वृद्धि हेतु प्रयुक्त किया जाता था। तीर्थंकर ऋषभदेव की पत्नी यशस्वती देवी न्योग्रोध के पुष्पों को केशों में धारण करती थी। कामदेव बाहुबलि भी इस पुष्प को धारण करते थे। भरत चक्रवर्ती की पत्नी कुसमा देवी ने भी अपने सभी अलंकरण न्योग्रोध पुष्प पहिने थे। केतकी पुष्प को कामदेव बाहुबलि अपने हाथों में धारण करते थे।

कुछ पुष्पों के उदाहरण निम्न हैं -

1. पनस पौधे से रसादि तैयार कर आकाश गमन हेतु प्रयुक्त करना।
2. गिरिकार्णिका नाम पुष्प के रस से पारा शुद्ध होता है। जिसके द्वारा आकाश-पाताल गमन एवं चमत्कारिक कार्य किये जा सकते हैं।
3. अशोक पुष्प के रस को सिद्ध कर तैयार रसमणि की सहायता से रवेचस्व सिद्धि, जलगमन, दुलेरी इत्यादि क्रियाओं में उपयोग।
4. मादल बिजौरा के पुष्प पद्मावती देवी के सिर के स्पर्श से प्रभावशाली हो जाते थे। इन पुष्पों से अनेक चमत्कारिक कार्य करने का वर्णन उल्लेखित है। इसके पुष्पों के रस को सिद्ध करने की विधि का पारस रस सिद्ध नाम दिया गया।

5. दारू वृक्ष की जड़ से तैयार रस मणि के स्पर्श मात्र से लोह स्वर्ण बन जाता है।

इसके अतिरिक्त कुछ आचार्यों ने वनस्पतियों का उल्लेख पद्मपुराण, हरिवंश पुराण आदि ग्रन्थों में किया है।

पूज्यपाद के बाद भी वैद्यक ग्रंथकार हुये हैं। उन्होंने तद्विषयक पांडित्य से अनेक आयुर्वेद ग्रन्थों का निर्माण किया है। इसका उल्लेख अनेक ग्रन्थों में मिलता है।

श्री गुम्फदेव मुनिराज ने **मेरूतंत्र नामक** वैद्यक ग्रन्थ की रचना की है। प्रत्येक परिच्छेद के अंत में उन्होंने श्री पूज्यपाद स्वामी का बहुत आदर पूर्वक स्मरण किया है।

श्री सिद्धनागार्जुन स्वामी श्री पूज्यपाद के भानजे थे। इन्होंने **नागार्जुन कल्प नागार्जुन कक्षपुट** आदि ग्रन्थों का निर्माण किया। इसके अलावा मालूम होता है कि इन्होंने **वज्रखेचरघुटिका** नामक स्वर्ण बनाने की रत्नगुटिका तैयार की थी।

जब ये औषध को तैयार करने के संकल्प से आर्थिक मदद मांगने के लिये किसी राजा के पास गये थे, तब राजा ने पूँछा यदि आपके कहने के अनुसार गुण न आवे तो आपका प्रण क्या रहेगा? नागार्जुन ने उत्तर दिया कि मेरी दोनों आँखें निकाल सकते हैं। राजा ने उनको सहायता दी, उन्होंने प्रयत्न कर एक वर्ष के अन्दर इस औषध को तैयार करके एवं उसकी तीन मणियों को बनाकर उन पर अपने नाम को खोदा। बाद में जब नदी में ले जाकर उन मणियों को वह धो रहे थे जब हाथ से फिसल कर नदी में गिर पड़ी। राजा ने प्रतिज्ञानुसार दोनों आँखें निकल वापसी। नागार्जुन दोनों आँखों से अन्धे हुये व देशान्तर चले गये। एक वेश्या स्त्री को उन मणियों को निगली हुई मछली के मिलने पर चीर कर देखी तो मणियाँ मिल गयीं। वेश्या ने उन्हें ले जाकर झूले पर रखी तो झूले पर लटके हुये लोहे की सांकल सोने की बन गयी। तदनंतर वह वेश्या रोज लोहे को सोना बनाया करती थी। बड़े-बड़े पहाड़ के समान उसने सोना बनाया एवं विपुल धन व्यय कर एक अन्न सत्र का निर्माण कर उसका नागार्जुन ऐसा नाम दिया। नागार्जुन ने फिरते फिरते आकर सत्र को अपने नाम मिलने कारण पूँछा। मालूम होने पर उन्होंने उन रत्नों को पुनः पाकर उनके बल से गई हुई आँखों को पुनः पाया एवं राज सभा में जाकर उसके महत्व को प्रकट किया। आयुर्वेदीय औषध में कितना सामर्थ्य है यह जान सकते हैं।

उपर्युक्त विद्वानों के अलावा कर्नाटक भाषा में अनेक विद्वानों ने वैद्यक ग्रन्थ की रचना की है। उनमें **कीर्तिवर्म का गौवट्टी, मंगराज का खगेन्द्रमणिदर्पण, अभिनवचंद्र का हृदयशास्त्र, देवेन्द्र मुनि का बालग्रह चिकित्सा, अमृतनंदि का वैद्यक निघंटु, जगदेकमहामंत्रवादि श्रीधर देव का 24 अधिकारों से युक्त वैद्यामृत, साळव के द्वारा लिखित रस रत्नाकर व वैद्य सांगत्य आदि ग्रन्थ विशेष उल्लेखनीय हैं।** जगद्वल सोमनाथ ने पूज्यपादाचार्य के द्वारा लिखित कल्याणकारक ग्रन्थ का कर्नाटक भाषा में भाषांतर किया है। यह ग्रन्थ भी बहुत महत्वपूर्ण हुआ है। यह ग्रंथ पीठिका प्रकरण, परिभाषा प्रकरण, षोडश ज्वर चिकित्सा निरूपण प्रकरण आदि अष्टांग से संयुक्त है। यह ग्रन्थ कर्नाटक भाषा में वैद्यक ग्रन्थों में सबसे प्राचीन है। एक जगह कर्नाटक कल्याणकारक में सोमनाथ ने उल्लेख किया है।

सुकरं तानेने पूज्यपादमुनिगळ, मुंपेळ्द कल्याणक

रकमं वाहटसिद्धसारचरकाद्युमकृष्टमं सद्गुणा -

धिकमं वर्जितमद्यमांसमधुवं कर्णाटदि लोकर-

क्षकमाचित्रमदागे चित्रकवि सोमं पेळ्दनि तळियिं॥

इससे स्पष्ट है कि पूज्यपाद के ग्रंथ में मद्य, मांस व मधु का प्रयोग बिल्कुल नहीं किया गया है। इस प्रकार अनेक जैन वैद्यक ग्रन्थ कार हुये हैं जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय निस्पृहता से ग्रन्थ निर्माण के कार्य में किया। **क्रमशः अगले अंक में**



संयम स्वास्थ्य योग

सावधान ! आप सब्जी, फलों, दूध में मिश्रित रसायनों से कितने सुरक्षित ?

हमारा जीवन का संचालन मुख्यतः साग, सब्जी, फूल, दूध, अन्न, पानी, हवा से होता है और इनके ग्रहण से हमारे शरीर पर इनका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता ही है और भी है इनके पाचन से शरीर के विकास में प्रभाव पड़ता है यदि ये दूषित या प्रदूषित हों तो हमारा शरीर रूग्ण होता है। जनसंख्या वृद्धि से मांग और आपूर्ति के असंतुलन को कम करने के लिये हमारे वैज्ञानिक ने कुछ ऐसे रसायनों का प्रयोग करने की सलाह देते हैं जिससे उत्पादन वृद्धि के साथ उनकी सुरक्षा भी होती है पर इससे जो सामग्री हमें मिलती है वह रासायनिक उर्बरकों आदि के कारण कितनी जहरीली होती है इससे हम अनजान होते हैं और तो और सब्जी फलों जो रंग और चमक दिखाई जा रहे हैं उनसे प्रायः सभी स्वयं रोग ग्रस्त हो रहे हैं।

इस कुचक में हम स्वयं जिम्मेदार हैं यानी किसान, फसल उत्पादक, शासन जिसका काम है उनका नित्य निरीक्षण परीक्षण करना ही कर्मचारियों की कमी या कर्तव्य पालन में उदासीनता और यहाँ बड़ी विचित्र स्थिति है एक तरफ सरकार जैविक खेती को बढ़ावा देती है और दूसरी तरफ वह रसायनों के प्रयोग को प्रोत्साहित करती है इसका प्रमाण आकाशवाणी द्वारा प्रसारित कार्यक्रम में आप भलीभांति सुन सकते हैं।

वर्तमान में इतने अधिक रसायनों का प्रयोग किया जा रहा है कि जो आप कल्पना नहीं कर सकते हैं। अधिक मुनाफे के चक्कर में दुकानदार हरी सब्जियों और फल पर जहरीले रसायनों का रंग चढ़ा कर बेच रहे हैं। इसके साथ दूध और दाल चावल भी इन रसायनों से मुक्त नहीं है। और इसमें सरकारी मुहकमा भी दोषी है जिसके द्वारा कोई भी प्रभावकारी कदम नहीं उठाये जाते हैं।

जैसे फलों में कैल्शियम कार्बाइड एसिटिलीन फल पकाने चमक बनाने, सब्जियों में ऑक्सीजन, मेलेकाइट ग्रीन जल्द पकाने और हरा रंग देने, दूध पनीर में यूरिया और शैम्पू गाढ़ा और चिकनाई बढ़ाने, दाल में मेटानिन यूरो चमकदार और पीला रंग करने और चावल में टाट्रामिन आदि का उपयोग चमकदार बनाने के लिये करते हैं इन रसायनों के उपयोग करने से किडनी, आंतों, पेट का कैंसर के अलावा नपुंसकता की संभावना रहती है।

इसका मतलब हम स्वयं इन खतरनाक बीमारियों को अनचाहे आमंत्रित करते हैं। इसके बचाव के लिये सबसे पहले फल सब्जियों को बाजार से खरीदकर लाने के बाद नमक के पानी में डुबोकर रखे और पानी से धोकर सुखाकर रखे जिससे कुछ सीमा तक हम बच सकते हैं। दूध पनीर के लिये समय समय पर सरकारी स्तर पर जांच कर, अशुद्ध पाये जाने पर कठोरतम कार्यवाही की जावे। दाल वगैरह बिना चमक वाली ले तो अच्छा। चावल के मामले में सामान्य किस्म के चावलों में बासमती चावल जैसे सेण्ट मिलाकर चमक के लिये रसायन मिलाकर बेचा जा रहा है।

इसके अलावा हमारे उत्पादक किसान लोग नाले नालियों के पानी का उपयोग करके सब्जी आदि पैदा करते हैं क्या वे स्वयं अपनी सब्जी नहीं खाते होंगे या खाते हैं तो वे खुद

बीमारियां बुलाते हैं और स्वयं ग्रसित हो रहे हैं। हम उपभोक्ता हर वस्तु की खरीदी के लिये असली नोट/पैसा देते हैं तब किसान दुकानदार हम लोगों को नकली सामान क्यों देते हैं या फिर यह एक प्रकार का सुसंगठित गिरोह जनसामान्य के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं।

ऐसा लगा है कि भारत देश में एक सामान्तर सरकार चल रही है जो खतरनाक, नकली, जहरीले, उत्पादनों को बढ़ावा दे रही है असली सरकार मौन और मूक दर्शक बानी सब कुछ देख रही है। उपभोक्ता की मजबूरी है वह जो सामग्री बाजार में उपलब्ध होगी उसे खरीदने को मजबूर है स्थानीय शासन और प्रशासन की उदासीनता के कारण जहरीले सामान बिक रहे हैं। इन पर अंकुश लगाने का काम शासन का है। इसलिये हम लोगों को रूग्णता से बचाने इस दिशा में काम करना चाहिये और नित्य अचानक निरीक्षण और जांच कर दण्डित करने की कार्यवाही की जाना उचित होगा अन्यथा देश पूरा का पूरा रूग्ण होकर पूरा धन डॉक्टरों को देने के लिये बाध्य होगा। क्या ये सब लोग आबादी नियंत्रण में अपनी महती भूमिका तो नहीं निभा रहे हैं ?

डॉ. अरविन्द जैन संस्थापक, भोपाल

कविता

प्रदूषण (पेड़ पौधों की हत्या)

क्या बिगाड़ा है हमने, जो किया हमारा वध
बेची लकड़ी खा गये पैसे,
फिर क्यों चिल्लाते हो,
प्रदूषण, प्रदूषण, प्रदूषण,
हम तो हैं तुम्हारे हितकारी
पीते हैं अशुद्ध हवा कार्बनडाय आक्साइड
देते हैं स्वास्थ्यवर्धक प्राणवायु आक्सीजन
देते हैं शीतल छाया, ठंडी हवा,
प्राणियों को भी आवास
फल-फूल, पते, जड़ छाल,
तना सब ही है उपयोगी
फिर भी तुम से नहीं मांगते हैं
बूंद भर भी पानी,
फिर क्या बिगाड़ा है हमने,
जो किया हमारा वध
क्या हमारी हरी भरी हरियाली
भी आपको नहीं भाई ?



प्रथमोपशम सम्यक्त्व एक अनुचिंतन

❖ ब्र. विनोद जैन सर्वदर्शनाचार्य (छतरपुर) ❖

जीवन जड़ नहीं गतिमान है। अतः आवश्यक है कि उस गति को उचित ढंग से इस भाँति नियमित और नियंत्रित किया जाय कि जीवन का अन्तिम लक्ष्य प्राप्त हो सके। जीवन का उद्देश्य केवल जीना नहीं है, बल्कि इस रूप में जीवन यापन करना है कि इस जीवन के पश्चात् जन्म और मरण चक्र से छुटकारा मिल सके।

जो मोक्ष का मार्ग है, वह धर्म है और मोक्ष का मार्ग रत्नत्रय-सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र्य रूप है। इस धर्म का मूल स्तम्भ सम्यग्दर्शन है। सम्यग्दर्शन के अभाव में न तो ज्ञान ही सम्यक् होता है और न चारित्र्य ही। सम्यग्दर्शन आत्म सत्ता की आस्था है स्वरूप विषयक दृढ़ निश्चय। मैं कौन हूँ, क्या हूँ, कैसा हूँ इसका निर्णय सम्यग्दर्शन द्वारा ही होता है।

जड़ चेतन की भेद प्रतीति भी सम्यग्दर्शन से ही होती है। स्व और पर, आत्मा और अनात्मा, चैतन्य एवं जड़ की स्व-स्व स्वरूपोपलब्धि का साधन भी सम्यग्दर्शन है सम्यग्दर्शन की निम्नलिखित परिभाषायें उपलब्ध होती हैं।

हिंसारहिण् धम्मो अट्ठा रह दोस वज्जिए देवे।

णिगंथे पव्वयणे सद्धहणं होइ सम्मत्तं ॥

अर्थ- हिंसादि रहित धर्म, अठारह दोष रहित देव, निर्गन्ध प्रवचन अर्थात् मोक्षमार्ग व गुरु इनमें श्रद्धा होना सम्यग्दर्शन है। (मोक्ष पाहुडू मू/90) 2

छप्पंचणवविहाणं अत्थाणं जिणवरोवइट्ठाणं।

आणाए अहिगमेण य सद्धहणं होइ सम्मत्तं ॥

अर्थ- जिनवरों के द्वारा उपदिष्ट छह द्रव्य, पांच अस्तिकाय और नौ पदार्थों का आज्ञा या अधिगम से श्रद्धान करना सम्यक्त्व है। (ध. 1/151) 3

तच्चरुई सम्मत्तं।

तत्त्व रूचि सम्यग्दर्शन है।

शुद्धात्मैवोपादेय इति श्रद्धानं सम्यक्त्वम्

शुद्धात्मा ही उपादेय है। ऐसा श्रद्धान सम्यक्त्व है। (स.सा.ता.वृ.138) 4

जिस प्रकार रोगी मनुष्य को रोग, उसके कारण, रोगमुक्ति और उसके कारण इन चारों का ज्ञान आवश्यक है। उसी प्रकार जीव को संसार-संसार के कारण मुक्ति और मुक्ति के कारण इन चारों का परिज्ञान अपेक्षित है।

सम्यग्दर्शन के भेद :- सर्वप्रथम सम्यग्दर्शन की प्राप्ति किस विधि से होती है। यह दिखलाते हुये निमित्त भेद से उसके तीन भेद किये गये हैं यथा.... औपशमिक सम्यग्दर्शन क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन और क्षायिक सम्यग्दर्शन तात्पर्य यह है कि दर्शन मोहनीय के अन्तरकरण उपशम और अनन्तानुबंधी चतुष्क के अनुदय रूप उपशमपूर्वक मिथ्यात्व रूप पर्याय का अभाव होकर जो आत्मविशुद्धि प्राप्त होती है वह औपशमिक सम्यग्दर्शन है। उक्त सात प्रकृतियों में से छह प्रकृतियों के क्षयोपशम और सम्यक् प्रकृति के उदयपूर्वक जो आत्मविशुद्धि प्राप्त होती है वह क्षयोपशमिक सम्यग्दर्शन है तथा उक्त सातों प्रकृतियों के क्षयपूर्वक जो आत्मविशुद्धि प्राप्त होती है वह क्षायिक सम्यग्दर्शन है। करणानुयोग के अनुसार इन तीनों सम्यग्दर्शनों की, उत्पत्ति के प्रकार है। इन तीनों

सम्यग्दर्शनों में आत्मविशुद्धि मुख्य है। जाति ओर स्वाद की अपेक्षा उनमें भेद नहीं है। भेद केवल कर्मों के सद्भाव और असद्भाव को मुख्य कर किया गया है।

प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन :- प्रथम प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन है। यह मुख्य और भूमिस्वरूप है। मुख्य इसलिये है क्योंकि सर्वप्रथम मोक्षमार्ग का दरवाजा इसके द्वारा ही उद्घाटित होता है। और भूमिस्वरूप इसलिये है, क्योंकि मोक्षमार्ग पर आरूढ़ होने के लिये सर्वप्रथम यह जमीन का काम देता है।

प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन का पात्र :- प्रथमोपशम सम्यक्त्व की प्राप्ति के लिये कतिपय योग्यताओं की आवश्यकता है। पहली योग्यता तो उस जीव का भव्य होना है। भव्य को ही सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है, अभव्य को नहीं, यह योग्यता स्वाभाविक है, प्रयत्न साध्य नहीं, इस योग्यता के साथ संज्ञी पर्याप्तक तथा पांच लब्धियों से युक्त होना अपेक्षित है। सारांश यह है कि सम्यग्दर्शन संज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्तक भव्य जीव को होता है अन्य को नहीं। भव्यों में भी यह उन्हीं हो प्राप्त होगा, जिनका संसार परिभ्रमण का काल अर्द्ध पुद्गल परावर्तन के काल से अधिक अवशिष्ट नहीं है। लेश्याओं के विषय में यह कथन है कि मनुष्य और तिर्यञ्चों के तीन शुभ लेश्याओं में से कोई भी लेश्या रह सकती है। देव और नारकियों में जहाँ जो लेश्या है उसी में औपशमिक सम्यग्दर्शन होता है। कर्म स्थिति के विषय में कहा है कि जिसके बध्यमान कर्मों की स्थिति अन्तः कोड़ा कोड़ी प्रमाण हो तथा सत्ता में स्थित कर्मों की स्थिति संख्यात हजार सागर कम अन्तः कोड़ा कोड़ी प्रमाण रह गई हो वही प्रथमोपशम सम्यग्दर्शन प्राप्त कर सकता है। इससे अधिक स्थिति बंध पड़ने पर सम्यग्दर्शन प्राप्त नहीं हो सकता है।

सम्यग्दर्शन प्राप्त करने की योग्यता चारों गति वाले भव्य जीवों को होती है। क्षयोपशमिक, विशुद्धि, देशना, प्रायोग्य और करण ये पांच लब्धियाँ भव्य को प्राप्त होती हैं। इनमें चार लब्धियाँ तो सामान्य हैं क्योंकि भव्य और अभव्य दोनों को प्राप्त होती है। पर करण लब्धि विशेष है। यह भव्य को ही प्राप्त होती है और इसके प्राप्त होने पर नियमतः सम्यग्दर्शन होता है। उपर्युक्त लब्धियों का स्वरूप इस प्रकार है -

1. क्षायोपशमिक लब्धि :- पूर्व संचित कर्मों के मल रूप पटल अनुभाग स्पर्धक जिस समय विशुद्धि के द्वारा प्रतिसमय अनंतगुण हीन होते हुये उदीरणा को प्राप्त होना क्षायोपशमिक लब्धि है इस लब्धि के द्वारा जीव के परिणाम उत्तरोत्तर निर्मल होते जाते हैं। क्षुल्लक जिनेन्द्र वर्णी जी ने इसका वर्णन इस प्रकार किया है- समझने और समझाने की शक्ति प्राप्त हो जाना क्षायोपशमिक लब्धि है- गुरुजनों के द्वारा दिये गये उपदेश को अथवा शास्त्रोल्लिखित अर्थ को बुद्धि के द्वारा अवधारण कर लेना ही क्षायोपशम लब्धि कही जाती है- प्रायः सभी सामान्य जीव इस उपलब्धि को लौकिक विषयों को समझने-समझाने में नष्ट कर देते हैं।

पूर्वोपार्जित किसी पुण्य के उदय से जिन्हें कदाचित इसका सदुपयोग करने की बुद्धि जागृत हो जाती है तो वे अपनी इस उपलब्धि से लाभान्वित होने के लिये शास्त्राध्ययन में पठन पाठन मनन-चिंतन अथवा उपदेश श्रवण में प्रवृत्त होते हैं, और बुद्धि के द्वारा तत्त्व निर्णय करने में सफल हो सकते हैं।

विशुद्धि लब्धि :- सातावेदनीय आदि प्रशस्त प्रकृतियों के बन्ध के कारण भूत परिणामों की प्राप्ति को विशुद्धि लब्धि कहते हैं।

इसका भावात्मक निरूपण इस प्रकार उपलब्ध होता है - पूर्वोपार्जित किसी पुण्य का उदय से अथवा पूर्व भव में की गयी साधना के संस्कारवश यदि कोई दूसरों को उपदेश देने की बजाय

क्षयोपशम लब्धि का प्रयोग अपने को उपदेश देने में करें जिसके कारण वह बराबर आत्मनिन्दन, ग्रहण, पश्चाताप और प्रायश्चित आदि के द्वारा आत्म शोधन करता रहता है -उसे परिणाम अधिक अधिक विशुद्ध होने लगते वह अपनी सकल प्रकृतियों को लोकोपकार में लगाने लगता है। निःस्वार्थ सेवा या लोकोपकार उसका जीवन बन जाता है। वह स्व दुःख सहिष्णु और पर दुःखकातर बन जाता है इस प्रकार परिणामों में प्रतिक्षण असंख्यातगुणी विशुद्धि होते जाना ही विशुद्धि लब्धि का लक्षण है।

देशना लब्धि :- छहों द्रव्य और नौ पदार्थों के उपदेश को देशना कहते हैं। उक्त देशना से परिणत आचार्य आदि की उपलब्धि को और उपदिष्ट अर्थ के ग्रहण धारण तथा विचार की शक्ति की प्राप्ति को देशनालब्धि कहते हैं।

इसका भावात्मक निरूपण इस प्रकार से है पूर्व पुण्योदय के फलस्वरूप तथा लौकिक जगत में अनेक विसंगतियों दर्शन से कषाय की मंदता के कारण पारमार्थिक जगत के चिंतन में चित की सहज ही प्रकृति होने लगती है तथा ऐसे लोगों का सान्निध्य प्राप्त करने का उत्सुक रहता है- जो आलौकिक शांति के प्रेम में रत हैं उसे गुरु चरणों में आत्म समर्पण करने का भाव जाग्रत हो जाता है इसमें प्रायः तत्त्वोन्मुखी अभिलाषा जाग्रत हो जाती है।

प्रायोग्य लब्धि :- आयुर्कर्म को छोड़कर शेष कर्मों की स्थिति को अन्त कोड़ा कोड़ी सागर प्रमाण कर देना और अशुभ कर्मों में धातियाँ कर्मों के अनुभाग को लता और दारू इन दो स्थानगत तथा अधातियाँ कर्मों के अनुभाग को नीम और कौजी इन दो स्थानगत कर देना एवं प्रशस्त प्रकृतियों का अनुभाग प्रतिसमय अनन्तगुणा बढ़ता हुआ बंधना प्रायोग्यलब्धि है।

इस लब्धि में एक क्षण में कर्मों की स्थिति का 70 कोड़ कोड़ी से घटकर एक कोड़ा कोड़ी सागर में भी कम रह जाना प्रायोग्य लब्धि का स्वरूप है। सम्यग्दर्शन के अभाव में भी स्थिति की इस प्रकार क्षति हो जाना किसी साधारण हेतु से नहीं हो सकता। हृदय से प्रविष्ट हुई देशना से यह विश्वास जाग्रत हो जाता है। कि जिनेन्द्र शासन के द्वारा ही मेरा कल्याण होगा और शीघ्र होगा। इसी प्रकार का आत्मविश्वास हो जाना ही कर्मों की स्थिति का घट जाना है यही प्रायोग्यलब्धि है इसके बिना तात्त्विक क्षेत्र में प्रवेश पाना सम्भव नहीं है।

जो भव्य जीव हैं वे ही इन लब्धियों के होने पर यथासंभव करण लब्धि को प्राप्त करते हैं।

करण लब्धि :- करण शब्द का अर्थ परिणाम है इसलिये उत्तरोत्तर वृद्धिगत परिणाम विशुद्धि ही इस लब्धि का लक्षण है। अतः सम्यग्दर्शनादि प्राप्त कराने वाले परिणामों की प्राप्ति को करण लब्धि कहते हैं। ज्यों ज्यों परिणाम विशुद्धि होते जाते हैं त्यों-त्यों संस्कारों का आवरण हटता जाता है और परिणाम विशुद्धि होते जाते हैं यहाँ तक कि इस लब्धि की पूर्णता हो जाने पर व्यक्ति तत्त्व का साक्षात् करने में सफल हो जाता है।

तत्त्वोन्मुखी अन्तरंग पुरुषार्थ ही इस लब्धि का स्वरूप है इसलिये यह तत्त्वोपलब्धि का साक्षात् हेतु है जबकि अन्य चार लब्धियाँ इसकी साक्षात् हेतु न होकर परम्परा हेतु हैं। प्रधान पुरुषार्थ होने के कारण पाँचों लब्धियों में यह सर्व प्रधान है। क्षयोपशम लब्धि के द्वारा केवल तत्त्वों को बौद्धिक निर्णय किया गया था। विशुद्धि लब्धि के द्वारा उसे आत्म दोष और पर गुण दर्शन होने लगते हैं। जिसके कारण वह पश्चाताप प्रायश्चित आदि के द्वारा आत्म शोधन करने लगते हैं देशना लब्धि में आकर उसे गुरु की अन्तः प्रेरणा प्राप्त हो जाती है जिसके कारण उसके मन बुद्धि आदि का आमूलचूल

परिवर्तन हो जाता है तत्फलस्वरूप उसे आत्मोत्कर्ष की अनुभूति होती है।

इतनी कुछ भूमिका बन जाने के पश्चात् जब वह करणलब्धि में प्रवेश पाता है तो अपने चित्त की वृत्तियों को बाहर से समेटकर उसी प्रकार भीतर की ओर खींच लेता है जिस प्रकार कि कछुआ अपने सब अंगों को बाहर से समेट कर भीतर खींच लेता है ऐसा करने से उसकी वे सकल शक्तियाँ जो कि चित्त के माध्यम से बाहर जगत में यत्र तत्र बिखर कर व्यर्थ नष्ट हो रही थी अब आत्मानुसन्धान के प्रति नियोजित हो जाती है।

बह्य जगत् के इन्द्रिय विषयों के प्रति यद्यपि उसे अभी पूरा वैराग्य नहीं आया है तदपि गुरु कृपा से देशना लब्धि के द्वारा इतना वैराग्य अवश्य प्राप्त हो गया है कि वह बाहर विषयों को निःसार देखते हुये इनकी कुछ देर के लिये उपेक्षा कर सके फलस्वरूप परिणामों की विशुद्धि उत्तरोत्तर वृद्धिगत होने लगती है।

परिणाम विशुद्धि के इस विकास को लक्ष्य में रखकर हम करण लब्धि के स्वरूप को दो दृष्टियों से अध्ययन कर सकते हैं एक जीव की अपेक्षा और अनेक जीवों की अपेक्षा एक जीव अपेक्षा अध्ययन करने पर हम देखते हैं कि प्रतिक्षण उसके परिणाम अधिक अधिक विशुद्ध होते जाते हैं साथ ज्यों- ज्यों ऊपर जाता है विशुद्धि वृद्धि की गति भी बढ़ती जाती है अनेक जीवों की अपेक्षा अध्ययन करने पर हम देखते हैं कि करण लब्धि में युगपत् प्रवेश करने वाले अनेक जीवों के परिणामों में तारतमता पाई जाती है कुछ के परिणाम कम विशुद्ध होते हैं कुछ के अधिक और कुछ के परस्पर समान परन्तु ज्यों- ज्यों ऊपर जाते हैं त्यों-त्यों यह तारतमता घटती जाती है यहाँ तक कि अन्त में जाकर सबके परिणामों की विशुद्धि समान हो जाती है।

इस विषय को अधिक स्पष्ट करने के लिये आचार्यों ने इस लब्धि के स्वरूप को उत्तरोत्तर उन्नत तीन सोपानों में विभक्त करके दर्शाया है अधःकरण अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण।

1. अधः प्रवृत्तिकरण- जो परिणाम पूर्व में प्राप्त न हुये हो उन्हें अधः प्रवृत्तिकरण कहते हैं। इसका दूसरा नाम अधःकरण भी है। जिसमें आगामी समय में रहने वाले जीवों के परिणाम पिछले समयवर्ती जीवों के परिणामों के सदृश होते हैं। वह अधः प्रवृत्तिकरण है। इसमें एक समयवर्ती और भिन्न समयवर्ती जीवों के परिणामन समान और असमान दोनों प्रकार के होते हैं। इस करण का काल अन्तर्मुहूर्त है और उसमें उत्तरोत्तर समान वृद्धि को लिये असंख्यात लोकप्रमाण करण परिणाम होते हैं।

2. अपूर्वकरण - जिसमें प्रत्येक समय अपूर्व अपूर्व नये नये परिणाम होते हैं। उसे अपूर्वकरण कहते हैं। जैसे पहले समय में रहने वाले जीवों के यदि एक से लेकर दस नम्बर तक के परिणाम होते हैं। तो दूसरे समय में रहने वाले जीवों के ग्यारह से बीस नम्बर तक के परिणाम होते हैं। अपूर्वकरण में एक समयवर्ती जीवों के परिणाम समान और असमान दोनों प्रकार के होते हैं, परन्तु भिन्न समयवर्ती जीवों के परिणाम असमान ही होते हैं। जैसे- पहले समय में रहने वाले और दूसरे समय में रहने वाले जीवों के परिणाम कभी समान नहीं होते, परन्तु एक समय में रहने वाले जीव के परिणाम समान भी हो सकते हैं और असमान भी हो सकते हैं।

यह कथन नाना जीवों की अपेक्षा है। इसका काल भी अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है, परन्तु यह अन्तर्मुहूर्त अधः प्रवृत्तिकरण के अन्तर्मुहूर्त से छोटा है। इस अन्तर्मुहूर्त प्रमाण काल में भी उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होते हुये असंख्यात लोकप्रमाण परिणाम होते हैं।

3. अनिवृत्तिकरण- जहाँ एक समय में एक ही परिणाम होता है उसे अनिवृत्तिकरण कहते हैं।

इस कारण में समसमयवर्ती जीवों के परिणाम समान ही होते हैं और विषम समयवर्ती जीवों के परिणाम परस्पर समान ही होते हैं। इसका कारण है। कि यहाँ एक समय में एक ही परिणाम होता है। इसलिये एक समय में जितने जीव होंगे उन सबके परिणाम समान ही होंगे और भिन्न समयों में जो जीव होंगे उनके परिणाम भिन्न ही होंगे। इसका काल भी अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। परन्तु अपूर्वकरण की अपेक्षा छोटा अन्तर्मुहूर्त है। तीनों करणों में परिणामों की विशुद्धता उत्तरोत्तर बढ़ती रहती है।

उपर्युक्त तीन करणों में से प्रथम अधः करण में गुणश्रेणी निर्जरा, गुणसंक्रमण, स्थितिकाण्डकघात और अनुभाग काण्डक घात ये चार कार्य नहीं होते किन्तु प्रत्येक समय में उत्तरोत्तर अनन्तगुणी विशुद्धि होने से अप्रशस्त कर्मों के अनुभाग में अनन्तगुणी हानि, प्रशस्त कर्मों के अनुभाग में अनन्तगुणी वृद्धि होती रहती है। प्रत्येक समय में कर्मबन्ध की स्थितिबन्ध होता है, उसके अन्तिम समय में वह घटकर संख्यात गुणा हीन हो जाता है। यदि वही जीव प्रथम सम्यक्त्व के साथ देशसंयम और सकलसंयम को प्राप्त करता है तो उक्त स्थितिबन्ध असंयत के जितना होता है उससे और भी संख्यात गुणा हीन हो जाता है।

अपूर्णकरण में निम्नलिखित आवश्यक होते हैं- 1. सत्ता में स्थित पूर्व कर्मों की स्थिति प्रत्येक समय उत्तरोत्तर घटती जाती है अतः स्थितिकाण्डक घात होता है। 2. प्रत्येक समय उत्तरोत्तर पूर्व कर्म का अनुभाग घटता जाता है, इसलिये अनुभाग काण्डक घात होता है और 3. प्रत्येक समय गुणश्रेणी निर्जरा होती है। इस अपूर्वकरण में गुण संक्रमण नाम का आवश्यक नहीं होता, किन्तु चारित्र मोह का उपशम करने के लिये जो अपूर्वकरण होता है उसमें होता है।

अनिवृत्तिकरण में गुणश्रेणी निर्जरा, गुण संक्रमण, स्थितिकाण्डक घात और अनुभाग काण्डक घात ये चारों आवश्यक होने के पश्चात् अनिवृत्तिकरण के संख्यातवें भाग काल शेष रहने पर दर्शन मोहनीय का अन्तरकरण प्रारम्भ होता है। विवक्षित कर्मों की अधस्तन और उपरिम स्थितियों को छोड़कर मध्यवर्ती अन्तर्मुहूर्त मात्र स्थितियों के निषेकों का परिणाम विशेष के द्वारा अभाव करने को अन्तरकरण कहते हैं। अन्तरकरण के माध्यम से अनिवृत्तिकरण के पश्चात् उदय आने योग्य मिथ्यात्व कर्म के निषेकों का अन्तर्मुहूर्त के लिये अभाव रूप किये हुये निषेकों के उपर जो मिथ्यात्व के निषेक उदय में आने वाले थे उन्हें उदय अयोग्य किया जाता है। साथ ही अनन्तानुबन्धी चतुष्क को भी उदय के अयोग्य किया जाता है। इस प्रकार उदययोग्य प्रकृतियों का अभाव होने से प्रथमोपशम सम्यक्त्व होता है। पश्चात् प्रथमोपशम सम्यक्त्व के प्रथम समय में मिथ्यात्वप्रकृति के तीन खण्ड करता है ऐसा कहा गया है। तदनन्तर सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और सम्यग्मिथ्यात्व इन तीन प्रकृतियों तथा अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया और लोभ इन चार प्रकृतियों का इस प्रकार सात प्रकृतियों के उदय का अभाव होने पर प्रथमोपशम सम्यक्त्व होता है। यही भाव षट्खण्डागम (धवला पुस्तक 6) में से भी प्रगत होता है।

द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन- क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन को धारण करने वाला कोई जीव जब सातवें गुणस्थान के सातिशय अप्रमत्त भेद में उपशम श्रेणी माडने के सम्मुख होता है तब उसके द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन उत्पन्न होता है। इस सम्यग्दर्शन में अनन्तानुबन्धी चतुष्क की विसंयोजना में दर्शन मोहनीय की तीन प्रकृतियों का उपशम होता है। इस सम्यग्दर्शन को धारण करने वाला जीव उपशम श्रेणी चढ़कर ग्यारहवें गुणस्थान तक जाता है और वहाँ से पतन कर नीचे आता है। पतन की अपेक्षा चतुर्थ पंचम और षष्ठ गुणस्थान में भी इसका सद्भाव रहता है।

संवेदना: पुस्तक नहीं आईना है

✽ श्री सुरेश जैन सरल (जबलपुर) ✽

अब जब हिन्दुस्तान में प्रतिदिन शताधिक पुस्तकें प्रकाशित होकर सामने आ रही हैं, तो ऐसे में अच्छी पुस्तक और अच्छे लेखको पाठकगण ईमानदारी से समय नहीं दे पाते। वे ऊहापोह में रहते हैं- क्या पता कौन-सी पुस्तक ठीक होगी। आपको भी ऐसे क्षणों से गुजरना पड़ा होगा। मगर जब कोई समर्पित लेखक अपना नूतन ग्रंथ अपने हाथ से किसी मनीषी को भेंट करता है, तो हर हालत में ग्रंथ पढ़ना ही पड़ता है।

हाल ही में मेरे चर्चित पुस्तक संवेदना आई, तो मुझे भी मनोयोग से पढ़ना पड़ा। पुस्तक लेखक श्री सुनील साँधेलिया, जो कि पेशे से इंजीनियर हैं, एम.बी.ए. भी किया है, मेरे संपर्क में आये, तब मैंने उनके द्वारा लिखित पुस्तक संवेदना आद्योपांत पढ़ी। पुस्तक पढ़ते हुये उनका भाषा-सौष्ठव देखकर विश्वास नहीं हुआ कि इंजीनियर प्रशस्त-हिन्दी कैसे लिख पाया होगा। पुस्तक में एक अति सामान्य कहानी है, जिसमें लेखक चिंतन विभिन्न रंग प्रस्तुत करता है और सिद्ध करता है, कि एक सामान्य व्यक्ति जब पथच्युत हो जाता है और जिसकी सुसभ्य बनने की किसी को आशा नहीं रहती, वैसा व्यक्ति भी अच्छी-संगति पा करके एक दिन वास्तव में सही-आदमी बन जाता है।

जिन लोगों ने महाकवि आचार्य विद्यासागर जी कृत मूकमाटी ध्यान से पढ़ी होगी, वे विचार करेंगे कि श्री सुनील जी की भाषा और चिंतन महाकाव्य मूकमाटी से प्रभावित है, जो उनका उज्ज्वल पथ जाहिर करता है। श्री सुनील जी ने प्रस्तुत ग्रंथ में जबलपुर नगर के भूगोल को उजास देते हुये, अनेक नगरों को स्पर्श किया है और सिद्ध किया है कि एक खलनायक प्रवृत्ति का व्यक्ति अनचाहे ही स्नेहिल व्यवहार पा करके इस तरह श्रेष्ठ बन जाता है, जैसे उसकी पर्याय बदल गई हो। मैं कहानी का रहस्य स्पष्ट करूंगा तो पाठकों की प्यास को बढ़ा नहीं पाऊंगा, इसलिये निवेदन करता हूँ कि पाठकगण प्रयास करके पुस्तक **संवेदना** अवश्य पढ़ें। **124 पृष्ठ की यह पुस्तक मात्र 150 रुपये की है**, जो उच्च आदर्श और उच्च भाषा की करण्डिका कही जावेगी।

पुस्तक का समापन सुनील जी ने एक लघु कविता से किया है जिसे पढ़कर कोई भी विद्वान गद्गद् हो जावेगा। लेखन ने अभी तक छह काव्य-संग्रह एक उपन्यास और तीन कहानी-संग्रह लिखे हैं, जो समय पर प्रकाश में आवेंगे। कुछ लघु रचनाओं का अनुवाद भी किया है। यह पुस्तक दिल्ली सहित जबलपुर में बिक्री के लिये उपलब्ध है।

पता -वी.एल. मीडिया साल्यूशन्स, बी-33, सैनिक नगर, उत्तर नगर, नई दिल्ली-110059, भारत संपर्क सूत्र- 8010207580, जबलपुर का पता- प्रेम बुक डिपो, सदर, जबलपुर

जो विशिष्ट पाठक श्री सुनील साँधेलिया से संपर्क करना चाहें, वे जबलपुर में उपलब्ध होंगे, उनका मोबाईल नम्बर 9425800692

मां तो बस मां होती है, मां तुझे सलाम

✽ डॉ. सुनील जैन संचय (ललितपुर) ✽

मां तो बस मां होती है, बच्चों को भरपेट खिलाती खुद भूखी ही सोती है, मां तो बस मां ही होती है। बच्चों की चंचल अठखेली देख-देख खुश होती है, मां तुझे प्रणाम।

वेलटाइन डे पर जिस तरह बाजार में रौनक रहती है और बाजारवादी तमाम तरह के ग्रीटिंग कार्ड बेचने में लगे रहते हैं और प्रेमी प्रेमिका भी अपने प्रेम का इजहार करने के लिये अति व्याकुल हो जाते हैं तथा मीडिया भी बढ़-चढ़कर वेलेंटाइनडे के प्रचार प्रसार में जुट जाता है लेकिन दुर्भाग्य है कि उसी तरह के ताम-झाम के साथ इस देश में मदर-डे नहीं मनाया जाता।

मां पर कौन पढ़ता है कविता, कहानी या अन्य साहित्य। लोगों को पसंद है व्हाइट टाइगर या सेक्स और रोमांस की किताबें। पत्नी या प्रेमिका का स्वार्थपूर्ण प्रेम लोगों को पसंद हो सकता है, लेकिन मां का निःस्वार्थ प्रेम आज की पीढ़ी को पसंद नहीं। उनके दिल में मां के प्रति संवेदनार्य नहीं, क्योंकि हमारी शिक्षा और हमारा समाज मां के महत्व को नहीं समझता।

जब तुम रोते थे, रात-रात भर, वो जागती थी आंचल में लेकर।

अब वह रोती रात-रात भर, तुम सोए रहते हो चादर ओढ़कर।।

फिल्मों में मां का किरदार रस्म अदायगी भर का होता है, क्योंकि सारी फिल्मों प्रेमिका और प्रेमी के आस-पास ही घुमती रहती है।

मां तुम्हारी चाय बनाने के लिये है। मां सिर्फ खाना बनाने के लिये है। मां तुम्हारे कपड़े प्रेस करने के लिये है। तुम घुमते रहते हो दुनिया भर में अपने ऐशो-आराम के लिये लेकिन मां तुम्हारी तरक्की के लिये कामना करती रहती है। तुम्हें घर में चाहिये ऐसा जो तुम्हारे घर की देखभाल कर सके।

कभी तुमने देखा कि बर्तन मांजते-मांजते उसके हाथ बठरा गये। बटन टॉकते-टॉकते आंखों में मोतियाबिंद हो गया, लेकिन तुम्हें अभी फुरसत नहीं है डॉक्टर के पास जाने की। दो दिन से उसे चक्कर आ रहे हैं, तुमने ग्लूकोज पीने की सलाह देकर मामला टरका दिया, क्योंकि तुम अपनी पत्नी के साथ कुल्लू मनाली घूमने की प्लानिंग बना रहे हो।

खैर.... एक दिन मां चली जाती है अपनी सारी इच्छायें दिल में ही रखकर भगवान के घर और उस दिन छूते हो तुम उसके पैर जबकि वह जिंदा थी तो एक बार भी तुमने उसके पैर छू लिये होते तो उसकी सारी इच्छायें पूरी हो जाती या फिर मदर-डे पर कह भी देते मां तूने मेरे लिये जो किया उसके लिये धन्यवाद.... प्रणाम....।

सम्बंध नहीं है मां केवल सम्पर्क नहीं है, आदर्श जीवन का केवल संबोधन नहीं है, जन्मदात्री है वो मात्र इंसान नहीं है व्यक्तित्व बनाती है, केवल पहचान नहीं है, ममता की

प्रतिमा है, केवल नारी का एक रूप नहीं है, स्नेह की छाया है, केवल कठोरता की धूप नहीं है। हृदय है इसका प्रेम का सागर, जिसकी कोई थाह नहीं है। आघातों से पीड़ित है फिर भी दुख पर आह नहीं है। कृतघ्न हैं वो जो माता को आहत करते हैं, कर्तव्यों से मुंह मोड़ अधिकारों का दावा करते हैं। संतान के रक्षण हेतु माता ने न जाने क्या-क्या करती है, पीड़ाओं को सहकर आंचल की छाया देती है।

दुनिया के हर बच्चे के लिये सबसे खास सबसे प्यारा रिश्ता है मां। उस मां को सम्मानित करने के लिये मई माह के दूसरे रविवार को विशेष दिवस मनाया जाता है, मदर्स-डे।

ओमव्यास ओम की कविता की कुछ पंक्तियां दिल को छूने वाली हैं।

मां, मां-मां संवेदना है, भावना है, अहसास है।

मां, मां जीवन के फूलों में खुशबू का वास है।।

मां, मां लोरी है, गीत है, प्यारी सी थाप है।

मां, मां पूजा की थाली है, मंत्रों की जाप है।।

मां, मां कलम है, दवात है, स्याही है।

मां, मां परमात्मा की स्वयं एक गवाही है।।

मां, मां अनुष्ठान है, साधना है, जीवन का हवन है।

मां, मां जिंदगी के मोहल्ले में आत्मा का भवन है।।

मां, माताजी, आई, मम्मी, अम्मा से लेकर मम्मा तक हर मां एक भीने-भीने रिश्ते का प्रतीक है। मातृ-दिवस पर हर बच्चे की यह जिम्मेदारी है कि वह मां के प्रति अपने प्यार का, अपने सम्मान का और अपनी रेशमी छलछलाती अनुभूतियों का इजहार करें।

समाज में मां का रूप सबसे शक्तिशाली और सबसे कोमल होता है। वह मां ही होती है जिसकी गोद में बच्चा पहला अक्षर बोलता है-माँ।

माँ के रूप में महिलायें अपनी भावनायें जताने के लिये कई रास्ते जानती हैं। कभी गाती हैं, कभी कहानियां कहती हैं, तो कभी कपशप। आप पायेंगे कि मातायें हमारे जीवन के लिये जो भी करती हैं, जो भी देती हैं वह हमेशा ही खूबसूरत होता है।

हमारे समाज में मां, दीदी, नानी जैसे सम्बोधन बने हैं, इन सम्बोधनों का समुचित आदर आज के प्रैक्टिकल समाज में दिखता है। यह सिर्फ कहने की बात नहीं है कि बच्चे को पहली शिक्षा उसकी मां और नानी दादी की गोद में मिलती है। घर में मां और दादी में बच्चे में संस्कार भरती है। दादी, नानी की कहानियां, उनके पुचकार में शिक्षा होती है। बच्चे को जीवनशैली का ज्ञान महिलायें ही कराती हैं।

जब तक माताओं को सम्मान देना नहीं सीखेंगे, कुछ भी बदलना मुश्किल है।

महिलाओं में अपना घर संभालते हुये समाज को नई दिशा देने की ताकत है। अतीत का कोई उदाहरण उठाकर देख लीजिये आप। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का अपने दत्तक पुत्र के लिये प्रेम को या फिर आदिवासी महिला कर्मी-सोरेन-त्याग का सर्वोच्च उदाहरण मां के रूप में महिलायें रखती आई हैं। वे कितनी दृढ़ निश्चयी और बलिदानी होती हैं।

आधुनिक कहे जा रहे समाज में बहुत से परिवारों में बड़े होने पर बेटियां व बेटे शायद ही कभी अपनी मां के पास वक्त निकालकर बैठते हैं और उसे खुशी पहुंचाने वाली बातें करते हैं। मां और बच्चों के बीच दूरी बढ़ने लगी है। कम पढ़ी-लिखी या अनपढ़ मां के साथ बच्चे किस विषय पर संवाद बनायें यह उन्हें समझ नहीं आता।

इसलिये उनके साथ सारे संवाद, दैनिक जरूरत आधारित ही हो जाते हैं। किसी का मन पढ़ने के लिये, प्यार देने के लिये संवाद बनाने के लिये किसी खास तरह की भाषा की जरूरत नहीं पड़ती है केवल गहरे प्यार सम्मान की आवश्यकता होती है। मां की रोजाना खबर खैरियत लेते रहें तो शायद मदर्स-डे का यह नजराना प्यार का नहीं बल्कि तकाजा है बाजार का

मां, एक शब्द शहद की मिठास से भरा। मां, एक रिश्ता परिभाषाओं की परिधि से। मां बेशुमार संघर्षों में अनायास खिल उठने वाली एक आत्मीय मुस्कान, एक शीतल एहसास। मां न पहले किसी उपाधियों की मोहताज थी, न आज किसी कविता की मुखपेक्षी।

निरंतर देकर जो खाली नहीं होती, कुछ ना लेकर भी जो सदैव दाता बनी रहती है उस मां को इस एक दिवस पर क्या कहें और कितना कहें। यह एक दिवस उसकी महत्ता को मंडित करने के लिये पर्याप्त नहीं है। हो भी नहीं सकता। हमारे जीवन के एक-एक पल-अनुपल पर जिसका अधिकार है उसके लिये मात्र 365 दिन भी कम हैं, फिर एक दिवस क्यों?

लेकिन नहीं, यह दिवस मनाना जरूरी है। इसलिये कि यही इस जीवन का कठोर और कड़वा सच है कि मां इस पृथ्वी पर सबसे ज्यादा उपेक्षित और अकेली प्राणी है। कम से कम इस एक दिन तो उसे उतना समय दिया जायें जिसकी वह हकदार है। उसके अनगिनत उपकारों के बदले कुछ तो शब्द फूल झरे जायें।

वक्त जिस गति से विकृत होता जा रहा है ऐसे में क्या इस दिन पर हर युवक अपनी मां को स्पर्श कर यह कसम खा सकता है कि नारी जाति का अपमान न वह खुद करेगा और न कही होते हुये देखेगा। मातृ दिवस पर बेटियों का सम्मान और सुरक्षा देने का वचन दीजिये ताकि आने वाले कल में भावी-मां का अभाव न हो सकें। हे माँ! तुझे प्रणाम।

सुपुत्रों से आज मेरा नम्र निवेदन।

दुख न दें, भले न दे सुख का आँगन॥

चलो देखें यात्रा

राजरथान प्रांत के अजमेर जिले के प्राचीन अतिशय क्षेत्र एवं मंदिर

* इंजी. आई. एम. जैन (पहाड़िया) इन्दौर *

चौथे काल तथा उसके बाद के समय अर्थात् एक हजार वर्ष एवं उससे अधिक पूर्व की तथा भूगर्भ से प्राप्त प्रतिमाओं के दर्शन करने की इच्छा रखते हैं तो आप राजस्थान राज्य के अजमेर जिले में निम्न जैन तीर्थ क्षेत्र एवं जिनालय है, जिन्हें श्रावकों ने श्रद्धा-भक्ति से बनवाये हैं, तथा मुनि पुंगव सुधासागर जी महाराज की प्रेरणा से जीर्णोद्धार भी हुआ है, उन क्षेत्रों पर विराजित वीतराग तीर्थंकरों प्रभुओं की महामनोज्ञ और सुन्दर प्रतिमाओं के दर्शन अवर्णनीय आनंद प्रदान करेगा।

जिला अजमेर के यहाँ सिर्फ तीर्थों के नाम, और उनके संपर्क सूत्र, आवास एवं भोजन व्यवस्था की जानकारी प्रेषित कर रहे हैं। क्षेत्रों का पूरा इतिहास, जानकारी, अतिशयों के बारे में अगले अंकों में क्षेत्रवार जानकारी के साथ प्रस्तुत करेंगे।

1. सावर अतिशय क्षेत्र- नेमीश्वर अतिशय क्षेत्र एवं पार्श्वनाथ जिनालय कुल दो प्राचीन मंदिर, यह क्षेत्र केकड़ी शहर से 25 किमी. और देवली से 32 किमी. दूरी पर स्थित है, रोड़ पर साईन बोर्ड लगा है। आवास एवं भोजन व्यवस्था नहीं है।

संपर्क सूत्र- 9460146906, 8058575964

2. गुलगांव-श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन गुणोदय अतिशय क्षेत्र, तहसील केकड़ी भूगर्भ से प्राप्त 12 प्रतिमाओं को विशाल परिसर में मुनि पुंगव सुधासागर जी महाराज की प्रेरणा से क्षेत्र का निर्माण किया जा रहा है। यह क्षेत्र सावर केकड़ी रोड़ पर स्थित है रोड़ पर विशाल बोर्ड लगा हुआ है। संपर्क सूत्र- श्री धनश्याम जी पाराशर मो. 9636475800

3. केकड़ी- 1. श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर घंटाघर के पास संपर्क सूत्र-श्री श्याम सुन्दर जी 9214042737, 2. श्री चन्द्रप्रभु जैन चैत्यालय केकड़ी संपर्क सूत्र -श्री शीतल जी कटारिया 9887080465, यह सांवर, गुलगांव केकड़ी सरवाड अजमेर मार्ग पर स्थित है। आवास की साधारण व्यवस्था तथा भोजनशाला नहीं हैं। परन्तु नगर में शाकाहारी भोजनशाला हैं।

4. चांपानेरी अतिशय क्षेत्र- अतिशयकारी संभवनाथ एवं पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन कांच का मंदिर/यह क्षेत्र सरवाड़ से रघुनाथपुरा, बडगांव नागोला से विजयनगर रोड़ पर 6 किमी. पर चांपानेरी ग्राम में है। केकड़ी 35 किमी. देवली 42 किमी. सम्पर्क सूत्र- श्री पारसमल जी अजमेरा अध्यक्ष- 9929648683

5. सरवाड़- श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र सरवाड़ (9352710023) यह क्षेत्र अजमेर-कोटा मार्ग पर स्थित है, अजमेर से 60, सांवर से 40, चांपानेरी से 20, बघेरा से 34 किमी. पर है। कस्बे में मंदिर संख्या-3, चतुर्थकाल की श्री आदिनाथ भगवान की अद्भुत प्रतिमा/मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य प्रगती पर है।

6. बघेरा अतिशय क्षेत्र तहसील केकड़ी, जिला अजमेर मूलनायक श्री 1008 श्री शांतिनाथ भगवान/ कुल दो मंदिर आमने-सामने सरस्वती की

प्रतिमा दर्शनीय है। क्षेत्र केकड़ी से 18 किमी.। संपर्क सूत्र- मंदिर जी के पास भंवरलाल जी जैन-9950259258

7. **टोडारायसिंह**-बघेरा से 18, देवली से 35 किमी. पर कस्बे में 7 मंदिर 1 मंदिर पहाड़ नसिया जी पर, कस्बे के दो जिनालय प्रसिद्ध एवं दर्शनीय है, मंदिर भव्य एवं कलात्मक है, शास्त्रों और यंत्रों का भंडार है जैन भवन में साधारण आवास व्यवस्था है। जैनीयों के काफी घर है। कस्बे के विनोद कुमार अग्रवाल जैन मंदिर जी से मंदिर जी देखने की सुविधा प्राप्त हो सकती है। संपर्क सूत्र 7737476525

8. **मोराझडी अतिशय क्षेत्र**- भगवान पार्श्वनाथ का सुन्दर कलात्मक मंदिर क्षेत्र सरवाड से 30, नसिराबाद से 20 किमी. पर है। संपर्क सूत्र श्री धरमचंद जी कोषाध्यक्ष 9001211430

9. **देराटु अतिशय क्षेत्र**- श्री पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र/ कस्बे में दो जैन मंदिर यहाँ किशनगढ़, अजमेर, नसिराबाद से पहुंचा जा सकता है।

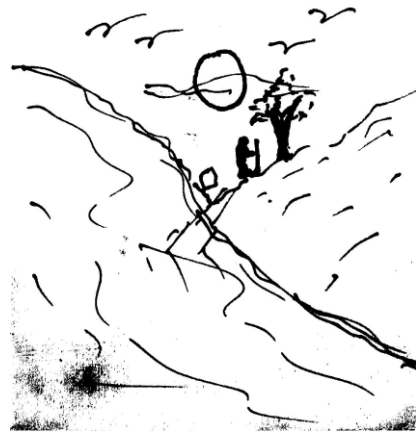
मोराझडी से देराटु 24 किमी. सम्पर्क सूत्र- श्री हुकमसेठी अध्यक्ष- 9414824701

उपरोक्त क्षेत्रों के दर्शन, आवास एवं भोजन व्यवस्था के लिये उनके निकटवर्ती प्रसिद्ध क्षेत्र देवली, मालपुरा, आवाजी, अजमेर, नारेली, जहाजपुर, एवं टोंक में रूककर (रात्री विश्राम) कर आसानी से किये जा सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिये लेखक इंजी. आई. एम. जैन से मोबाईल 9893062480 पर प्राप्त की जा सकती है। यहाँ प्रसिद्ध तीर्थ अजमेर, नारेली, पुष्कर जी नहीं दी गई है।

कविता वो सुबह

इन काली सदियों के सर से
जब रात का आंचल ढलकेगा
जब दुख का बादल पिघलेगा
जब सुख का सागर छलकेगा
जब अम्बर झूम के नाचेगा
जब धरती नगमे गायेगी
वो सुबह कभी तो आयेगी
वो सुबह कभी तो आयेगी
जिस सुबह के खातिर जुग जुग से
हम सब मर मर के जीते हैं
जिस सुबह की अमृत की धुन में
हम जहर के प्याले पीते हैं इन भूखी प्यासी रूहों पर
एक दिन तो करम फरमायेगी वो सुबह कभी तो आयेगी....



विज्ञान और अध्यात्म के सेतु नैनागिरि के संत क्षमासागर जी

✽ सुरेश जैन (आई.ए.एस) भोपाल ✽

क्षमासागर जी अपनी प्रत्येक क्रिया में पेशन से ज्यादा कंपैशन को अधिक महत्व देते रहे। उत्साह और उमंग से अधिक करुणा को वे अपने जीवन में अपनाते रहें। वे सदैव यह कहते रहे कि करुणा से ही रिश्ते लंबे और मजबूत बनते हैं। ठोस और स्थाई बनते हैं। उन्होंने अपनी दैनिक धार्मिक क्रियाओं पर परंपरागत नियमों, रस्मों और रिवाजों को हावी नहीं होने दिया। अपनी सोच में सकारात्मक बदलाव लाने के लिये सदैव हम सबको प्रेरित करते रहें।

2. वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखते हुये क्षमासागर जी लगातार सवाल-जबाब करते थे। वे सहज ही अपना और अपने शिष्यों को नजरिया बदल कर सकारात्मक कर देते थे। वे वैज्ञानिक सिद्धांतों की तुलना धर्म से करते थे। वे धार्मिक ही नहीं मुनि बनकर भी धार्मिक सिद्धांतों की तुलना विज्ञान से करते रहें। उन्होंने मंदिर जाने, घण्टी बजाने, प्रभु को प्रणाम करने, अभिषेक करने, द्रव्य चढ़ाने और पूजन करने जैसी दैनिक क्रियाओं की वैज्ञानिक विवेचना की और प्रत्येक श्रोता को इस वैज्ञानिक विवेचना के अनुरूप इन क्रियाओं को करने के लिये प्रेरित किया। उन्होंने विज्ञान के साथ जैन धर्म के गहन और रचनात्मक संबंध स्थापित किये। उन्होंने सुस्थापित किया कि आधुनिक विज्ञान हमें सोचने के लिये नई-नई प्रणालियाँ और पद्धतियाँ उपलब्ध करता है। उन्होंने जैन

संस्कृति की अनेक अवधारणाओं की वैज्ञानिक रूप से व्याख्या की और ऐसी अवधारणाओं को वैज्ञानिक दृष्टि से सुसंगत बनाया।

3. क्षमासागर जी महान वैज्ञानिक संत थे। उन्होंने हमारी साइकोलॉजी और स्प्रियुचलिटी के बीच जीवंत संबंध स्थापित किये। आत्मानुशासन के बल पर अपने विचार, भावनाओं और प्रतिक्रियाओं पर नियंत्रण रखने की सीख दी। अपनी सोच में बदलाव लाकर अविवेकपूर्ण धार्मिक परंपराओं में सुधार किये। वे लगातार आगे बढ़ने और बेहतर काम करने पर फोकस करते रहें। उन्होंने बताया कि विज्ञान का मूल्य विहीन उपयोग करने से अनेक समस्याएँ जन्म लेगी। नकारात्मक मूल्यों को हमें छोड़ना होगा। विज्ञान के सकारात्मक परिणाम प्राप्त करने के पूर्व हमें चेतना के स्तर पर ऊँचा उठना होगा। सकारात्मक मूल्य ही हमारे अच्छे जीवन का निर्माण कर सकेंगे। क्षमासागर जी की यह मान्यता यही है कि धार्मिक विश्वास हमारी केन्द्रीय भावना है। उसके बिना जीना संभव नहीं है। तदपि उन्होंने अपनी आध्यात्मिक शक्तियों के माध्यम से विज्ञान को जैन धर्म के रास्ते से अपने कदम पीछे खींचने के लिये लाचार नहीं किया। उन्होंने जैन संस्कृति की अवधारणाओं को विज्ञान सम्मत मानने और मनवाने के लिये प्रतिस्पर्धा नहीं की अपितु उन्होंने विज्ञान के साथ जैन धर्म के मैत्री पूर्ण रिश्ते बनाये।

4. क्षमासागर जी शिशु और किशोर के रूप में नियमित रूप से नैनागिरि आते रहे। भगवान पार्श्वनाथ के नियमित दर्शन कर अपने मन में सांसारिक और आध्यात्मिक भावबोध भरते रहे। सुख, दुख, आनन्द, विरह, तेज और संताप के बोध से वे आपूरित होते रहे। अपने अंदर उठने वाली भावतरंगों को गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त करते रहें।

5. क्षमासागर जी ने नैनागिरि में दीक्षा लेकर आध्यात्मिक जन्म लिया। प्रकृति के बदलते घने प्रभाव को पहली बार अपने नग्न शरीर पर झेलने का अद्भुत साहस दिखाया। इस तीर्थ की भीषण गर्मी की उष्णतम हवा ने उनकी वस्त्र विहीन देह को बुरी तरह से झुलसाया। ग्रीष्म के प्रचण्ड ताप ने उनके शरीर को संतप्त किया। कभी वर्षा की नन्हीं - नन्हीं बूंदों और फुंहारों ने उनकी देह को अभिसंचित किया। सूर्य की प्रातः कालीन सुरम्य किरणों ने उनके मन में पवित्र मंगल भावनाओं के फूल खिलायें। रात्रि में चन्द्रमा की अमृत मिश्रित किरणों ने उनके मन को माधुर्य से आपूरित किया। अगहन और पौष की प्राणों को प्रकंपित कर देने वाली वायु में वे अपनी स्वर-माधुरी में डूबते और उतराते रहें। उन्होंने ऋतुओं के बदलते रूप को सर्वप्रथम नैनागिरि के स्वाभाविक परिवेश में देखा। भयंकर जंगल, तरह-तरह के वृक्षों और रंग विरंगे पशु-पक्षियों को अवलोकन किया।

6. वृहत वरदत्तर वन में बहती हुई पहाड़ी सेमरा पठार नदी के सिद्ध जल कुण्ड और झरनों के जल का क्षमासागर जी ने अपने नंगे पैरों से स्पर्श किया। प्रकृति और अध्यात्म की क्रीडा स्थली नैनागिरि की ग्रीष्म, वर्षा, शरद,

शिशिर, हेमंत और बसंत ऋतुओं में उन्होंने आत्म कल्याण और जनकल्याण की भावनाओं से ओतप्रोत अपने गीतों को जन्म दिया। जन-मन को इन गीतों से अनुरंजित किया। उनके मधुर गीतों के कथ्य और शिल्प तथा उनके मन में उठने वाली भाव लहरियों का हमने अनुपम आनंद लिया। उनके हृदय में भाव परिवर्तन के साक्षी बने। अपने गुरु के प्रति अटूट लगन और संघस्थ साधुओं के अपरिमित प्रेम और सौहार्द के साक्षी बने।

7. क्षमासागर जी की कविताओं की विलक्षणता अनगिनत कवियों, लेखकों और विचारकों को बड़ी गहनता से प्रभावित करती है और उनके हृदय, मन और मस्तिष्क से समा जाती है। मैत्री और प्रेम की सुगंध में लिपटी उनकी कवितायें हमें आंतरिक सुरक्षा प्रदान करती हैं। संवदेनात्मक ऊँचा देती हैं। नकारात्मक विचारों से छुटकारा दिलाती हैं। हमारे अवसाद को क्षणों को हर्षोल्लास के क्षणों में परिवर्तित करती हैं। आध्यात्मिक जगत को सुन्दरता प्रदान करती हैं। इन कविताओं के माध्यम से क्षमासागर जी ने हमारे हृदय में ऐसी जगह बनाई है कि उनकी छवि को बिसार पाना संभव नहीं है। क्षमासागर जी धन और सम्मान बटोरने की फिराक में कभी नहीं रहें। नये तीर्थ और आश्रम बनाने से दूर रहें। वे अपने व्यक्तित्व में सदैव शाश्वत जीवन मूल्यों को अपनाते रहें। विकसित करते रहें। इन मूल्यों को अपनाने के लिये हम सबको आत्मीयता पूर्वक प्रेरित करते रहें। हम सबके जीवन में बदलाव लाने के ठोस प्रयास करते रहे। उन्हें हमारा शत-शत प्रणाम।



सर्तक भक्ति का पर्याय पात्र केसरी स्तोत्र

पात्र केसरी स्तोत्र एक ऐसा स्तोत्र जो रचयिता के नाम से प्रसिद्ध हुआ आचार्य पात्र केसरी जी ब्राह्मण परिवार से थे। आप देवागम स्रोत से अधिक प्रभावित थे आप ने जब यह स्रोत को सुना तो बस आप जैन धर्मानुयायी हो गये थे। आपकी प्रभावना का काल आचार्य पूज्यपाद से उत्तरवर्ती और आचार्य अकलंकदेव से पूर्ववर्ती है। पात्र केसरी स्तोत्र में 50 पृथ्वीछंद का प्रयोग करके ग्रंथ निबद्ध किया है।

ग्रंथ का मंगलाचरण अति मनमोहक और सारगर्भित है जिनेन्द्र गुणों की थोड़ी भी स्तुति अच्छी तरह से की जाये तो समस्त कर्मों का नाश करती है। कर्मनाश का कारण होती है इस प्रकार से मेरी/भक्त की बुद्धि निश्चित होती है। अतः मैं भक्त अत्याधिक आदर के साथ है सुगत आप स्पष्ट अर्थ और नयों के कुशल प्रवक्ता आपकी स्तुति करूँगा इस प्रतिज्ञा के साथ मंगलाचरण किया गया है।

प्रस्तुत स्तोत्र में भगवान को स्वयं भू घोषित किया गया है। वीतरागी होने पर भी भगवान का त्रिभुवन के बन्धु सिद्ध किया गया है भगवान केवलज्ञानी समस्त जीवों के रक्षक सुख दुख दाता अतीन्द्रिय ज्ञानी मुनि सम्प्रदाय से पूज्य, भगवान के वचन परमेष्ठीपने के द्योतक है भगवान निर्दोष पने से सिद्ध हैं।

इस स्तोत्र में कुछ दार्शनिक चर्चायें भी की गई हैं। जिनमें परलोक की सिद्धि वेद को पौरुषेय माना है पुनर्जन्म की सिद्धि चार्वाक मत का खंडन सर्वज्ञ सिद्धि आप्त का लक्षण मात्र भगवान के जिनेन्द्र के ही सिद्ध होता है। तथा स्वरूप आनंददायक सिद्ध किया है। एकान्तवादियों के निर्वाण की सिद्धि नहीं

होती है। उनके मोक्ष का अभाव होता है। अतः जिनेन्द्र देव का शासन ही सुसंस्कृत है।

बौद्ध मत के द्वारा मान्य अभाववाद के साथ वन्दना आदि क्रियायें संभव नहीं होती हैं। भगवान का स्वरूप मनुष्यों से विलक्षण होता है। मनुष्य मात्र के भगवान नहीं होने का कारण बताया गया है। भगवान के जन्म मृत्यु बुढ़ापा नहीं होता है। भगवान का सुख विषयातीत होता है। नृत्य आदि करने वाले भगवान नहीं होते हैं। माँस मदिरा का सेवन करने वाले भगवान नहीं होते। परिग्रह रहित भगवान होते हैं। भगवान को सृष्टि के उत्पादक और संहारक नहीं माना है। जिनेन्द्र देव से भिन्न आप्त नहीं होते हैं। अनायतन की सेवा नरक का कारण होता है। शुभ अशुभ प्रवृत्ति कर्म बन्ध का कारण होती है। स्वर्ग मोक्ष का उपदेश भगवान देते हैं श्रुत प्रमाण से सभी क्रियाओं का बोध होता है। जिनेन्द्र मत बहुत गम्भीर गहन बताया है तथा वे ही जिन हैं।

श्वेताम्बर मत का खंडन करते हुये कहा गया है कि परिग्रहधारी को शुक्लध्यान नहीं होता है। पात्र में भोजन करने के दोष बताये हैं। दिगम्बर के कर्मबंध नहीं होते हैं। प्राणी पीड़ा युक्त तप को भी हिंसा ही कहा गया है। दिगम्बर साधु की चर्या को निर्दोष सिद्ध किया गया है।

मोक्ष का स्वरूप बताते हुये आत्मा में ही केवल ज्ञान मोक्ष उत्पन्न होता है मोक्ष आत्मा के अभाव मात्र नहीं है। भक्ति मोक्ष का साधन है। इस आशय का कथन सिद्ध किया गया है।

प्रस्तुत ग्रंथ में निर्ग्रथ स्वरूप वीतरागी सर्वज्ञ मोक्षमार्गी हितोपदेशी आप्त को ही जिनेन्द्र कहा गया है। ईश्वर के सत्य स्वरूप का बोध कराया गया है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
फरवरी 2019
कुहरे में छुपा हुआ हूँ

प्रथम-

अंधेरे से घिर चुका पूरा
जीवन अब तो बना है अधूरा
पहचान अपनी खो चुका हूँ
क्योंकि कुहरे में छुपा हुआ हूँ
श्रीमति इन्द्रा जैन (इन्दौर)

द्वितीय-

चारों से मुझे घेरा है कुहरे ने

रास्ता दिख नहीं रहा कुहरे में
भटकनों की अटकलों में चह रहा हूँ
रोशनी नहीं कुहरे में छुपा हुआ हूँ
श्रीमति अनिता जैन (गुना)
तृतीय-
मिथ्यात्व जैसे यह कुहरा
उस पर भी अज्ञान है गहरा
अहं और मम के साथ अनजान हुआ हूँ
भूला हूँ कुहरे में छुपा हुआ हूँ
श्रीमति रश्मि जैन (सागर)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
जनवरी 2019 के विजेता

प्रथम : श्रीमति रजनी सेठ (सागर) म.प्र.
द्वितीय : श्री विनय चन्द जैन (विदिशा) म.प्र.
तृतीय : श्रीमति कान्ता जैन (राजस्थान)

वर्ग पहेली क्र. 225
जनवरी 2019 के विजेता

प्रथम : श्री मिलाप चन्द जैन (कोटा) राज.
द्वितीय : श्रीमति इन्दु बड़जात्या (बाकानेर) म.प्र.
तृतीय : श्रीमति कमला जैन (खरगोन) म.प्र.

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : फरवरी 2019 का हल

- | | | |
|----------------|----------------|------------------------------|
| 01. बहुत | 18. जनवाणी | 35. विशुद्ध |
| 02. केवलज्ञान | 19. समतुला | 36. त्याग |
| 03. निखार | 20. प्रयास | 37. स्वाध्याय |
| 04. हृदयस्थ | 23. स्वाध्याय | 38. उपेक्षा |
| 05. कागजी | 24. जागरूक | 39. प्रशम |
| 06. हीरे | 25. अनुभव | 40. अनुयोगकेप्रसंगमें - गणित |
| 07. परमार्थ | 26. समयसार | 41. 426 |
| 08. न्यास | 27. शरीर | 42. 130 |
| 09. उपसंन्यासी | 28. विचारों | 43. 172 |
| 10. उपन्यास | 29. सुख-शान्ति | 44. 57 |
| 11. अनमोल | 30. क्षय | 45. 64 |
| 12. मोह | 31. कर्मकाण्ड | 46. 3 |
| 13. स्वाध्याय | 32. ग्राऊंड | 47. 68 |
| 14. रक्षा | 33. पाठक | 48. 10 |
| 15. जिनवाणी | 34. चारित्र | 49. 89 |
| 16. समाधि | | 50. कुण्डलपुर |
| 17. जिनलिंग | | |



पुराण प्रेरणा

लक्ष्मी से हानि

सर्वतोऽपि सुदुःप्रेक्ष्यां नरेन्द्राणामपि
स्वयम्।

दृष्टिं दृष्टि विषस्येव धिक् - धिक्
लक्ष्मीं भयावहाम्॥

जिस प्रकार दृष्टिविष सर्प की दृष्टि नरेन्द्र
विषवैद्यों के लिये भी सब ओर से स्वयं
अत्यंत दुःख से देखने के योग्य तथा भय
उत्पन्न करने वाली है उसी प्रकार यह
लक्ष्मी भी नरेन्द्र-राजाओं के लिये भी
सब ओर से अत्यन्त दुःप्रेक्ष्य-दुःख से
देखने योग्य तथा भय उत्पन्न करने वाली है
इसलिये इसे धिक्कार हो।

सति बन्धुविरोधे हि न सुखं न धनं
नृणाम्॥

जिस प्रकार मनुष्य लोक में सुख वही है
जो चित्त को सन्तुष्ट करने वाला हो परन्तु
बन्धुजनों में विरोध होने पर मनुष्यों को न
सुख प्राप्त होता है। और न धन ही उनके
पास स्थिर रहता है।

अपवादो हि संहोत रक्तेन न
मनोव्यथा॥

इस प्रकार विचार करते हुये राजा सुमुख ने
उसके हरण करने में मन लगाया सो ठीक
ही है क्योंकि रागी मनुष्य अपवाद को तो
सह सकता है परन्तु मन की व्यथा को नहीं
सह सकता।

(आदिपुराण से)

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर
रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. अर् आ र् अ क् र् स् आ ग् अ स

2. आ त् अ न् म् इ व् ण् ई स

3. अ च् अ अ र् ह् त् व् अ न् अ अ

4. अ र् र् य् अ क् अ ती

5. अ अ न् अ ग् अ ज् ट् जै

परिणाम :

फरवरी 2019: (1) मुनि श्री निशंकसागर जी (2) मुनि श्री निर्भान्तसागर जी
(3) मुनि श्री निरालसागर जी (4) मुनि श्री निराकारसागर जी (5) मुनि श्री निर्मानसागर जी

सोशल मीडिया में रोजगार के अवसर

करियर



इंटरनेट का प्रचलन बढ़ने के बाद पत्रकारिता का भविष्य अब वेब पर आ गया है। वेब यानी ऑनलाइन मीडिया। इसे ही न्यू मीडिया भी कहते हैं। प्रिंट रेडियो और टीवी की चकाचौंध के बीच तेजी से उभरता हुआ यह एक ऐसा मीडिया है, जहां आप बैठे-बैठे ही कोई भी अखबार देख पढ़ सकते हैं। भले ही वे दुनिया भर में कहीं भी प्रकाशित हो रहें हैं। किसी भी भाषा में हो। स्मार्ट फोन के आ जाने से तो आप अब चलते फिरते कहीं भी जहां चाहे वहां खबर पढ़ सकते हैं दिनभर की खबरों से अपडेट रह सकते हैं।

कहां-कहां हैं नौकरिया: इंडिया ब्राण्ड इक्विटी फाउंडेशन की एक हालिया स्टडी के अनुसार वर्ष 2020 तक देश में डिजिटल एड मार्केट करीब 33.5 फीसदी की दर से बढ़ने की उम्मीद है। जबकि प्रिंट इलेक्ट्रॉनिक और रेडियो की एड ग्रोथ रेट क्रमशः 8.6 प्रतिशत, 15 प्रतिशत और 16.9 प्रतिशत तक ही रहने का अनुमान है। जाहिर है आगे भी वेब जर्नलिज्म में संभावनायें बहुत हैं। अब तो ऑनलाइन खबरों को पढ़ने के लिये लोग कम्प्यूटर के अलावा स्मार्ट फोन्स का भी इस्तेमाल करने लगे हैं।

वेब जर्नलिज्म में कामकाज : पत्रकारिता के अन्य प्लेटफार्म की तरह यहां भी आपको फील्ड और डेस्क दोनों तरह का काम होता है। वहीं डेस्क पर खबरों को लिखना और उसकी एडिटिंग का काम करना होता है।

कोर्स ओर योग्यता : आमतौर पर सभी शिक्षण संस्थान पत्रकारिता पाठ्यक्रम के अंतर्गत ही न्यू मीडिया, ऑनलाइन मीडिया, साइबर मीडिया विषयों को भी सम्मिलित करते हैं। जिनके तहत स्टूडेंट को पत्रकारिता के मूलभूत सिद्धांत कम्प्यूटर पर विभिन्न सॉफ्टवेयर का प्रयोग और सूचना प्रौद्योगिकी के विषयों की जानकारी दी जाती है। मास कम्युनिकेशन के तहत डिग्री, पीजी डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्स संचालित हो रहें हैं। डिग्री कोर्स के लिये किसी भी स्ट्रीम में 12वीं होना जरूरी है।

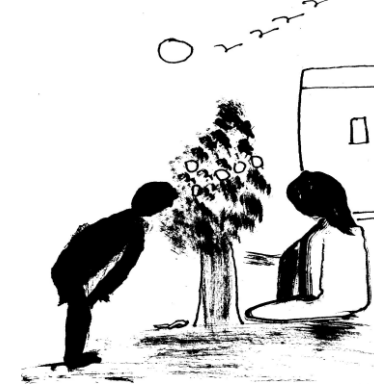
प्रमुख संस्थान

- माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल/नोएडा
www.meu.ac.in
- इंदिरागांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी नई दिल्ली
www.ignou.ac.in
- एडिटवर्क्स, नोएडा
www.editworks.co.in
- एन आर आई स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन, नई दिल्ली
www.nraismc.co

कविता

सत्य को चुनना भाई

* सुभाषचंद्र सरल (अशोकनगर) म.प्र. *



बुरा नहीं देखो, बुरा नहीं बोलो, बुरा नहीं सुनना भाई।
बुरा सोचने की आदत को, जल्दी रोको साँई।
कृत कारित और अनुमोदन में, सत् को चुनना भाई।
बुरा सोचने की

बुरा नहीं देखना है हमको, शीघ्र पलायन करना है।
बुरा बोलने वाले नर से, नेह हमें नहीं धरना है।
बुरा सोचने वाले होते, सचमुच बड़े कसाई।
बुरा सोचने की

कभी किसी का, बुरा न सोचो, बुरा स्वयं का होता है।
बुरा सोचने वाला मानव, अपने भाग्य को रोता है।
काग वंश की काँव-काँव से, नहीं ढोर मरते हैं भाई।
बुरा सोचने की

संसार बुरा है, और है अच्छा, हमको अच्छा बनना है।
अच्छाई के फूल हैं, लाखों, बस उनको ही चुनना है।
सज्जन दर्जुन दोनों जग में, हमें सज्जन बनना भाई।
बुरा सोचने की

दुनिया भर की बातें



जनवरी 2019

■ 1 जनवरी

- इजरायल में टहलते हुये महिला पत्थर से टकराई खनन दौरान 60 किलो वजनी दो मूर्तियाँ 1700 वर्ष पुरानी निकली।

- भोपाल : कांग्रेस सरकार ने कर्मचारियों का वन्देमातरम गान बन्द किया।

- फिल्मी अभिनेता कादिर खान का निधन हुआ वे 81 वर्ष के फिल्म लेखन अभिनेता आज्ञाकारी इंजीनियरिंग के प्रोफेसर थे।

■ 2 जनवरी

- इन्दौर मे मेदांता हॉस्पिटल में पूर्व विधायक कल्पना परूलेकर का निधन हुआ।

- आखिरकार म.प्र. की कमलनाथ सरकार ने मीसा बन्दियों की पेंशन को बन्द किया।

- नेपाल के मुख्य न्यायाधीश चलेन्द्र राणा बने।

■ 3 जनवरी

- सपा. के राष्ट्रीय महासचिव आजम खाँ और उनकी पत्नी राज्यसभा सदस्य तजीन फातमा और विधायक बेटे अब्दुल्ला पर दो दो जन्म प्रमाण बनवाने पर मुकदमा दर्ज हुआ।

- फिलीपिंस में तूफान बाद भूस्खलन से मरने वालों की संख्या 122 हुई।

- इन्दौर : संयोगितागंज इलाके की इमारत का एक हिस्सा गिरने से जैन मंदिर जा रही एस.डी.ओ.पी. दिपाली जैन घायल हुई।

■ 4 जनवरी

- राज जन्म भूमि-बाबरी मस्जिद भूमि विवाद पर सुप्रीम कोर्ट ने 3 जजों की नई पीठ का गठन किया जो 10 जनवरी को सुनवाई करेगी।

- नीमच स्थानीय धनीराम सगर कॉम्पलेक्स में आग लगी।

- इन्दौर : भय्यू महाराज की आत्म हत्या का पर्दा हटा उनके एक युवती अवैध संबंध बने जो शादी का दबाव बना रही थी।

■ 5 जनवरी

- कई बैंकर्स के 9000 करोड़ से अधिक का कर्ज लेकर भागे विजय माल्या को कोर्ट आर्थिक अपराधी घोषित किया।

- केन्द सरकार ने 3 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के विलय करने के लिये मंजूरी दी।

- उ.प्र. के दबंग लेडी अफसर चंद्रकला के 12 ठिकानों पर सीबीआई ने छापा डाले।

■ 6 जनवरी

- मुम्बई : गोरेगांव स्थित सिद्धार्थ नगर की त्रिमूर्ति सोसायटी की 7वीं मंजिल से मीडिया कर्मी आदर्श मिश्र की छत से गिरने से मृत्यु हुई।

- उत्तर भारत बर्फबारी शीतलहर की चपेट में आया कारगिल का 18 तापमान रहा।

- बांग्लादेश के वात्रा गांव में 8-9 लोगों ने हिन्दू मंदिर तोड़ा।

■ 7 जनवरी

- मोदी सरकार ने गरीब सवर्णों को नौकरी शिक्षा में 10% आरक्षण के प्रस्ताव को स्वीकृति दी।

- आस्ट्रेलिया में भारत टेस्ट मैच सीरिज जीतकर विराट एंड कंपनी ने इतिहास रचा।

- पं. गोपाल भार्गव को भाजपा ने प्रतिपक्ष का नेता चुना।

■ 8 जनवरी

- भोपाल: भारी हंगामे, विपक्ष के बहिष्कार के बीच एन.पी प्रजापति विधानसभा

अध्यक्ष निर्वाचित हुआ।

- गरीब सवर्णों को 10 % आरक्षण देने वाला संविधान संशोधन विधेयक लोकसभा में पारित हुआ।

- गुजरात के भाजपा नेता एवं पूर्व विधायक जयंती भानुशाली की चलती ट्रेन में गोली मारकर अज्ञात लोगों ने हत्या कर दी।

■ 9 जनवरी

- आलोक वर्मा ने सीबीआई मुख्यालय जाकर कामकाज संभाला सुप्रीम कोर्ट ने 81 दिन बाद बहाल किया।

- गरीब सवर्ण 10% आरक्षण विधेयक राज्यसभा में पास हुआ।

- नासा में पृथ्वी से तीन गुना बड़ा ग्रह एच.डी. 21749 भी खोजा।

■ 10 जनवरी

- सीबीआई निर्देशक आलोक वर्मा को पद संभालने के 36 घंटों में ही छुट्टी कर दी उन्हें होम गार्ड का डी.जी. बनाया।

- सेना प्रमुख विपिन रावत ने सेना में समलैंगिक संबंधों को अवैध घोषित किया।

- केन्द्र सरकार ने 40 लाख रुपये तक के करोबार को जी.एस.टी.से बाहर रखने की घोषणा की।

■ 11 जनवरी

- सीबीआई पूर्व निर्देशक आलोक वर्मा ने पुलिस सेवा से इस्तीफा दिया।

- सच्चा सौदा डेरा का राम रहीम गुरुमीत सिंह को पत्रकार रामचंद्र क्षत्रपति हत्या मामले में सीबीआई कोर्ट दोषी करार दिया।

- सपा और बसपा के बीच गठबंधन हुआ।

■ 12 जनवरी

- राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने गरीब सवर्ण 10% आरक्षण बिल के लिये स्वीकृति दी।

- सपा. के पूर्व सांसद (चंद्रौली) जवाहर जायसवाल को उत्तर प्रदेश की एस टी एफ ने

दमोह (म.प्र.) से हत्या मामले में गिरफ्तार किया।

- विदेश मंत्री सुषमा स्वराज भारत मध्य एशिया संवाद भाग लेने उजबेकिस्तान यात्रा पर रवाना हुईं।

■ 13 जनवरी

- मुस्लिम महिला विवाह अधिकार संक्षरण कानून 2019 अध्यादेश को राष्ट्रपति ने फिर से जारी किया।

- फिल्म डायरेक्टर राजकुमार हिरानी पर उनकी सहयोगी महिला ने यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया।

- अमेरिकी की कोल्ड स्प्रिंग हार्बर लेबोरेटरी ने रंग भेद टिप्पणी को तो वैज्ञानिक डॉ. जेम्स वाटसन से तीन अवार्ड वापिस लिये आप नोबेल पुरस्कार विजेता है।

■ 14 जनवरी

- दिल्ली पुलिस ने जे.एन.यू. में लगाये गये राष्ट्रविरोधी नारों के मामलों में आरोप पत्र दाखिल किया जिसमें कन्हैया कुमार और उमर खालिद सहित 10 छात्रों को आरोपी बनाया गया है।

- विधानसभा उपाध्यक्ष हिना काँवरे सड़क हादसे में बाल बाल बची काफले के 4 लोगों की मौत हुई।

- कर्नाटक में सत्ता के लिये जोड़ तोड़ शुरू हुई कांग्रेस के तीन विधायक मुम्बई में और भाजपा के 104 गुरुग्राम में शिफ्ट हुये।

■ 15 जनवरी

- प्रयागराज में कुंभमेला प्रारंभ हुआ 1.40 करोड़ लोगों ने स्नान किया संगम स्थल पर ही शाही स्नान हुआ।

- जम्मू : कटुआ के हीरानगर सेक्टर पर पाक ने गोला दागे जिससे एक असिस्टेंट कमाण्डर विनय प्रसाद शहीद हुये।

- बेंगलुरु: कुमार स्वामी सरकार से 2 विधायकों ने समर्थन वापिस लिया।

■ 16 जनवरी

- विश्व हिन्दू परिषद के पूर्व अध्यक्ष विष्णु हरि डालमिया का निधन हो गया वे 91 वर्ष के थे।

- छतरपुर: जिले के घुवारा चौकी क्षेत्र के कछिया खेरा गाँव में नेश में बेकाबू चालक ने चार बच्चियों को कुचला।

- महाराष्ट्र : राष्ट्रपति जाने जस्टिस संजीव खन्ना और दिनेश माहेश्वरी को सुप्रीम कोर्ट का जज बनाया।

■ 17 जनवरी

- यू.पी. के खनन घोटाले के मामले में सीबीआई के बाद अब प्रवर्तन निदेशालय ने आई.ए.एस. अधिकारी बी. चन्द्रकला सहित आरोपियों पर मामला दर्ज किया।

- उ.प्र. पंजाब में 8 जगहों पर एन.आई.ए ने छापेमारी की तथा आई.ए.एस. के नये मॉड्यूल हरकत उलहवे ए-इस्लाम के 5 संदिग्धों को हिरासत में लिया।

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री टेरीजा के विरुद्ध आया अविश्वास प्रस्ताव गिरा संसद में 306 के मुकबले 325 मतों से गिरा।

■ 18 जनवरी

- भारत ने आस्ट्रेलिया को वनडे क्रिकेट सीरिज में हराकर जीती महेन्द्र सिंह धोनी को मेन ऑफ द सीरिज चुना गया।

- आसिफ खो सा पाकिस्तान के नये चीफ जस्टिस बने।

- गुजरात और झारखंड के बाद उ.प्र. में सामान्य वर्ग का 10% आरक्षण लागू हुआ।

■ 19 जनवरी

- मैक्सिको के लाहेलिलपन में पाइप लाईन तेल चुरा रहे लोगों के साथ हादसा हुआ 66 लोगों की मौत हुई 85 लापता।

- नरसिंहपुर : 93 वर्षीय किशोरी से रेप आरोपी पिता को दोहरे आजीवन कारावास की सजा कोर्ट ने सुनाई।

- सूरत: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने होवित्जर तोप में बैठकर मेक इन इंडिया का लोहा दुनिया को मनवाया।

■ 20 जनवरी

- बेंगलुरु: रिजॉर्ट में काँग्रेस विधायकों में आपसी भिड़त हुई आनंद सिंह चोटिल हुये उन्हें अस्पताल में भर्ती किया गया।

- पूर्व क्रिकेटर मनोज प्रभाकर की पत्नी अभिनेत्री फरहीन प्रभाकर से दिल्ली में लूट हुई।

- सेंधवा : वरला तहसील के ग्राम बलबाड़ी में भाजपा मंडल अध्यक्ष मनोज ठाकरे की हत्या अज्ञात लोगों ने करी दी।

■ 21 जनवरी

- लखनऊ : उ.प्र. के डी.जी.पी. ने दहेज मामले तुरंत एफ.आई.आर. करने के निर्देश सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर दिये।

- इजरायल ने ईरान के खिलाफ मोर्चा खोला।

- आतंकी संगठन तालीबान ने अफगान के सैन्य अड्डे पर आत्मघाती हमला किया 12 लोग मरे।

■ 22 जनवरी

- जम्मू कश्मीर हिमाचल ओर उत्तराखंड में भारी बर्फबारी वैष्णो देवी में हिमपात के कारण रोपवे और हेलीकॉप्टर सेवा रूकी।

- रूस : दो जहाजों में ईंधन की अदला बदली में आग लगी 11 लोग मरे।

- आई.सी.सी. के तीनों अंवाई पाने वाले दुनिया के पहले क्रिकेटर बने विराट कोहली।

■ 23 जनवरी

- काँग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने प्रियंका गांधी बाड़ा एवं ज्योतिरादित्य सिंधिया को महासचिव बनाया।

- भारतवंशी सीनेटर कमला हैरिस ने 2020 के राष्ट्रपति चुनाव का उम्मीदवार बनने

की घोषणा की।

- पाकिस्तान के इस्लामाबाद हाई कोर्ट मुम्बई आतंकी हमले की सुनवाई रोकी।

■ 24 जनवरी

- आतंक छोड़ सेना में शामिल हुये लांस नायक वानी को चुना गया नजीर अहमद बानी ने देश भक्ति का महत्व समझा।

- गुरुग्राम के गाँव उल्लावास में एक इमारत गिर जाने से 6 लोगों की मौत हुई।

- सैन्य इंजीनियरिंग सेवा के 5 अधिकारियों को खराब प्रदर्शन के अनिवार्य सेवानिवृत्ति दी गई।

■ 25 जनवरी

- काँग्रेस के संकट मोचक पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी, आर.एस.एस. नाना जी देशमुख एवं असम के कवि भूपेन हजारिका को भारत रत्न सम्मान दिया।

- पत्नी को वेश्या कहने पर पति की हत्या करने वाली महिला को सुप्रीम कोर्ट ने बरी किया।

- हिन्दी की साहित्यकार कृष्णा सोबती का निधन हुआ वे 94 वर्ष की थी।

■ 26 जनवरी

- अयोध्या राम जन्मभूमि मामले में सुप्रीम कोर्ट ने संविधान पीठ के लिये जस्टिस अशोक भूषण को शामिल किया।

- नोएड-ग्रेट-नोएड के बीच मेट्रो ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर उ.प्र. मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी ने शुरू की।

- तीजन बाई इस्माईल उमर अनिल मनिभाई को पद्म विभूषण प्रदान किया गया।

■ 27 जनवरी

- मंडला के हर्षल चौधरी एम.पी.पी.रूस के टॉपर बने।

- पाटीदार आंदोलन के नेता हार्दिक पटेल की शादी किंजन पारीख के साथ हुई।

- आक्सफोर्ड डिक्शनरी ने नारी शक्ति शब्द को 2018 का हिन्दी शब्द चुना।

■ 28 जनवरी

- भारत ने न्यूजीलैंड को हराकर पाँच मैचों की सीरिज 300 से जीती।

- सुमन पवन बोडानी पाकिस्तान की पहली हिन्दू महिला जज बनी।

- आई.ए.एस. राघवेंद्र सिंह आयुक्त उच्च शिक्षा बनाया।

■ 29 जनवरी

- पूर्व रक्षामंत्री जार्ज फर्नांडीस का निधन हुआ वे 88 वर्ष के थे।

- राम जन्म भूमि मामले में केन्द्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में विवादित जमीन छोड़कर जमीन को लौटाने हेतु यथास्थिति हटाने की माँग की।

- उज्जैन : उन्हेल रोड़ पर कुहरा रात विवाह समारोह से लौट रहे 12 लोगों की मृत्यु होने से 12 अर्थी एक साथ निकली।

■ 30 जनवरी

- असम ब्लास्ट मामले में सीबीआई अदालत ने नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडो लैंड प्रमुख रंजन दै मारी सहित 10 लोगों को उम्र कैद की सजा सुनाई।

- समाज सेवी अन्न हजारे ने लोकपाल की माँग लेकर अनशन फिर शुरू किया।

- सुप्रीम कोर्ट ने एस सी एस टी संशोधन कानून पर रोक लगाने से इन्कार किया।

■ 31 जनवरी

- भारत-चीन सीमा पर स्थित उत्तर काशी जिले में 3.5 रेक्टर से भूकम्प के झटके आये।

- सुल्तान अब्दुल्ला सुल्तान अहमदशाह ने मलेशिया के राजा के रूप में शपथ ली।

- अमेरिका में सर्दी प्रकोप से 12 लोगों की मृत्यु हुई तापमान माइनस 30-40।

इसे भी जानिये

भारत की प्रमुख नदियों के किनारे बसे नगर

नगर	नदियाँ	नगर	नदियाँ
आगरा	यमुना नदी	लखनऊ	गोमती नदी
इलाहाबाद	गंगा, यमुना,	लुधियाना	सतलत नदी
	सरस्वती	नासिक	गोदावरी नदी
अयोध्या	सरयू नदी	पटना	गंगा नदी
ब्रदीनाथ	अलकनंदा	सम्बलपुर	महानदी
कोलकाता	हुगली नदी	श्रीनगर	झेलम नदी
कटक	महानदी	श्रीरंग पट्टम	कावेरी नदी
दिल्ली	यमुना नदी	सूरत	ताप्ती नदी
डिब्रूगढ़	ब्रह्मपुत्र नदी	वाराणसी	गंगा नदी
फिरोजपुर	सतलत नदी	विजयवाड़ा	कृष्णा नदी
गुवाहाटी	ब्रह्मपुत्र नदी	सेकोवाघाट.	ब्रह्मपुत्र नदी
हरिद्वार	गंगा नदी	पढ़रपुर	भीम नदी
जबलपुर	नर्मदा नदी	हैदराबाद	मूसी नदी
कानपुर	गंगा नदी	बरेली	रामगंगा नदी
कोटा	चंबल नदी	मथुरा	यमुना नदी
कुर्नूल	तुंगभद्रा नदी	ओरछा	बेतबा नदी
भरूच	नर्मदा नदी	अहमदाबाद	साबरमती नदी
महेश्वर	नर्मदा नदी	ओंकारेश्वर	नर्मदा नदी
उज्जैन	क्षिप्रा पदी	जमशेदपुर	स्वर्णरेख नदी एवं खरकई नदी



दिशा बोध
जीवन क्या है ।



01. शूरवीर कौन है ?
उत्तर. जो स्त्री के नयन रूपी वाणों से घायल न हुआ हो ।
02. कर्ण रूप अंजली से पीने के लिये अमृत क्या है ?
उत्तर. सदुपदेश ही अमृत है ।
03. बड़प्पन का मूल कारण क्या है ?
उत्तर. बड़प्पन का मूल कारण अयाचकवृत्ति है ।
04. जानने में जटिल क्या है ?
उत्तर. जानने में जटिल स्त्री का चरित्र है ।
05. चतुर कौन है ?
उत्तर. जो स्त्री के चरित्र से टूटता नहीं है ।
06. दरिद्रता क्या है ?
उत्तर. सबसे बड़ी दरिद्रता असंतोष है ।
07. सबसे बड़ा ओछापन क्या है ?
उत्तर. याचना की उपलब्धि ।
08. जीवन क्या है ?
उत्तर. निर्दोषता ही जीवन की उपलब्धि है ।

आओ सीखें : जैन न्याय

द्रव्यभाव इन्द्रियवाद की समीक्षा (जैन)

जैन दर्शन ने संसारी जीव के पहचान के चिन्ह को इन्द्रिय कहा है, जो इन्द्र के समान अपने विषय का महत्व रखती है, उसे इन्द्रिय कहते हैं। संवेदना अनुभूति ग्रहण के माध्यम को माना है।

इन्द्रिय के पाँच भेद हैं - स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु, और श्रोत्र इनमें से प्रत्येक इन्द्रिय के द्रव्येन्द्रिय और भावेन्द्रिय के भेद से दो-दो प्रकार है।

द्रव्येन्द्रिय - बाह्य और आभ्यन्तर आकाशरूप परिणत पुद्गलों को द्रव्येन्द्रिय कहते हैं। जैसे - आँख रूप परिणत पुद्गल की सफेद बरौनी सफेद काला मंडल और कदम्ब गोलक आदि आभ्यन्तर रचना है। वे सभी द्रव्येन्द्रिय निवृत्ति अर्थात् (रचना) और उपकरण (सुरक्षा साधन) को द्रव्येन्द्रिय कहते हैं।

भावेन्द्रिय - लब्धि और उपयोग को भावेन्द्रिय कहते हैं। ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम विशेष के बाद जो विषय ग्रहण करने की योग्यता उत्पन्न होती है उसे लब्धि कहते हैं। उसके निमित्त से जो आत्मा का जानने रूप विशेष परिणाम होता है, अथवा स्व और अर्थ को जानने रूप व्यापार को उपयोग कहते हैं। बिना व्यापार के स्पर्शनादि इन्द्रिय स्पर्शनादि को नहीं जान सकती।

उपयोग तो इन्द्रिय का कार्य है फिर उसे इन्द्रिय क्यों कहते हैं? इस प्रकार आशंका होने पर जैनाचार्य कहते हैं कि कारण का धर्म कार्य में देखा जाता है जैसे - घटाकार ज्ञान को घट कहा जाता है। इन्द्र अर्थात् आत्मा के चिन्ह को इन्द्रिय कहते हैं। आत्मा तो सूक्ष्म है इन्द्रिय के द्वारा ही उसका अस्तित्व जाना जाता है इन्द्रिय शब्द का अर्थ उपयोग में मुख्यता घटित होता है क्योंकि जीव का लक्षण उपयोग है अतः उपयोग को इन्द्रिय कहना उचित ही है। इन दोनों इन्द्रियों में द्रव्येन्द्रिय गौण है क्योंकि द्रव्येन्द्रिय के व्यापार करने पर भी प्रकाशादि सहकारी कारणों के होते हुये भी भावेन्द्रिय के बिना स्पर्शादि का ज्ञान नहीं हो सकता है।

कविता

मैं मोर हूँ

* पलक जैन (बाँसवाडा राजस्थान) *

कहानियाँ बनती है मुझ पर, बोलते है राष्ट्र पक्षी मुझे।
रह गया सब सुना-सुना, जब दिखूँ न इस मैघा में ॥1॥
मोर हूँ मैं मोर हूँ, मैं रंग बिरंगा मोर हूँ।
कूँहू-कूँहू कर नाचता हूँ मैं, पंख अपने खोलता हूँ।
धूम-धूम कर चक्कर लगता, गिरते पंख कान्हा कपाल में ॥2॥
मोर हूँ मैं मोर हूँ, मैं रंग बिरंगा मोर हूँ।
किसी के पास अब मैं न आऊँ, साधु के पास चला मैं जाऊँ।
धन्य हो गया जीवन मेरा, जब साधु के संग-संग रहा मैं जाऊँ ॥
मोर हूँ मैं मोर हूँ, मैं रंग बिरंगा मोर हूँ।
पिच्छी-पिच्छी बन जाऊँ, किसी-किसी जीव को मैं न सताऊँ।
शांति पसंद है मुझे इसलिये, मांगी-तुंगी में जीवन-जी जाऊँ ॥4॥
मोर हूँ मैं मोर हूँ, मैं रंग बिरंगा मोर हूँ।



कहानी

दो वेंत

ठंड का मौसम था आज आसमान में चारों ओर घना कोहरा छाया हुआ था। सूर्य की किरणें कोहरे से छन कर जमीन पर अपनी दस्तक देने की कोशिश कर रहीं थी प्रभात के 8 बज चुके थे। परन्तु ठिठुरने अपना प्रभाव समेटने के लिये तैयार नहीं थी। कंपकपी भरा बालक चेनू अपनी झीनी से स्वेटर में ही साइकिल के पीछे अखबारों बन्डल लादे बिना रूके कहीं रूके किसी दरवाजे अथवा शटर के नीचे अखबार खिसका रहा था तो किसी की बालकनी पर रस्सी रोल करके अखबार फेंक रहा था अपने काम में इतना व्यस्त था कि उसके पास से कौन गुजर गया उसे मालूम ही चल पा रहा था। कई कारें, मोटर साइकिल, गुजर गई पर उससे उसे कोई लेना देना नहीं था सुबह की चहल पहल से वह बिल्कुल प्रभावित नहीं होता था चेनू का विद्यालय में शुभम नाम वह अपनी पढ़ाई भी करता था।

अभी अभी उसके शिक्षक पवन जैन रोड से गुजर चुके थे उन्होंने पहली बार शुभम को भारी अखबार का बंडल बाँटते हुये देखा था उन्होंने खाँसकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की कोशिश भी की थी किन्तु शुभम का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने शिक्षक पवन जैन असफल ही रहे कई बार प्रयास के बाद भी वे शुभम का ध्यान अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाये। उन्हें समझने में देर नहीं लगी कि बालक कर्म में विश्वास करता है वे थोड़ी देर सड़क पर ही खड़े होकर सोचने लगे कि यह



वही बालक है जो रोज स्कूल देर से आता है और मेरे दो वेंत रोज खाता है। अनुशासन सिखाने की कोशिश में मैं रोज इसे सजा देता हूँ और इसे मैं ढीट या बेशर्म समझ बैठा था।

पवन जैन को सभी छात्र व नगर के लोग गुड्डा मासब के नाम से पुकारते व जानते थे सभी वर्तमान और पूर्व छात्र उनके प्रत्यक्ष और परीक्ष में सम्मान करते थे स्वभाव से

अनुशासन प्रिय थे उनके पढ़ाने को कुछ अलग ही तरीका था वे कोई भी विषय पढ़ाने के पूर्व अपने घर से पूरी तैयारी करते वे कोचिंग या ट्यूशन करने में कोई विश्वास नहीं करते थे कक्षा में ही इतने अच्छे तरीके पढ़ाते थे कि ट्यूशन की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती थी। उनके पढ़ाये अनेक पूर्व छात्र अच्छे स्तर के अधिकारी थे कोई तो डॉक्टर कोई इंजीनियर तो कोई महत्वपूर्ण जॉब में लगे हुए थे उन्होंने कई बार राष्ट्रपति पुरस्कार ऑफर से अपने आप को दूर क्योंकि वे मानते थे ये सब पुरस्कार उन लोगों को मिलते हैं राजनेताओं की चापलूसी करने में निपुण होते हैं या फिर जिनके पास राजनैतिक जोड़ तोड़ की हुनर होती है।

सुबह की और पूर्ण करके पवन जैन अपने घर पहुँचे रोज के काम निपटाने के अपना अखबार फैलाकर कुर्सी पर बैठ गये परन्तु अखबार पढ़ने में उनका मन नहीं लगा उनकी आँखों में बस शुभम का अखबार बाँटने का दृश्य ही झलकता पवन जैन कई

गरीब असहाय छात्रों की मदद कर उन्हें योग्य बनाने में सफलता अर्जित की है उन्हें किसी असहाय छात्र की सहायता करके उसे किसी योग्य पद तक पहुँचाने में गर्व और आनंद का अनुभव होता था वे सोचते रहे जिस छात्र को मैं रोज दो वेंत की सजा मात्र इस लिये देता रहा कि वह रोज बिलम्ब से कक्षा में आना कई बार पूँछा किन्तु वह मेरे इस सवाल वह प्रायः चुप्पी साध लेता था। व्यर्थ समय न खोकर समय पर अपना काम करना ही मैंने सदैव उचित समझा पर उसकी समस्या का ख्याल नहीं किया।

जब पवन अपने अखबार को समेटकर अपने माथे से हाथ लगाकर चिंता की मुद्रा में बैठे हुये थे। तभी भारती ने आकर पूछा क्या बात है क्या हो गया। पहली बार मैं देख रही हूँ एक सदाबहार इंसान को चिंता में डूबे हुये हैं। वैसे तो भारती पवन जी के कार्यों में कभी हस्तक्षेप नहीं करती थी। वो ऐसा मानकर चलती थी। कि स्कूल का ऑफिस एक ऐसी चीज है जहां कुछ न कुछ तो उठा पटक होती ही रहती है। लेकिन पवन जी के जीवन में जब से सहारा आया तब से वे बहुत खुश रहते थे। वहीं पर सहारा के बेसहारा होने पर नई नई मुशीबतें सामने आने लगी थीं। सहारा इंडिया का पवन ने भारती के नाम पर किया था। और भारती सिर्फ हस्ताक्षर करती थी सारी डीलिंग पवन जी किया करते थे। किन्तु पिछले कुछ वर्षों से सुप्रीम कोर्ट के द्वारा सहारा इंडिया के लेन देन पर प्रतिबंध लगाये जाने से ग्राहकों में पवन जैन पर अपना दबाव बनाना शुरू कर दिया था। वो रोज आकर अपना तगादा किया करते थे। वे कहा करते थे कि मास्टर साहब पैसा तो हमने आपको दिया है हम नहीं जानते सहारा कम्पनी और सुप्रीम कोर्ट क्या है। हम तो आपको जानते हैं। पवन जैन भी अपना सटीक जबाब देते थे। कि यह सच है आपने हमें पैसा दिया है। और हमने आपको

उसकी रशीद भी दी है। आपका काम चलाने के लिये सहयोग कर सकते हैं, किन्तु पूरा पेमेन्ट हम आपको कैसे कर सकते हैं। सुप्रीम कोर्ट से बड़े हम तो नहीं हो सकते और न आप बड़े हो सकते हैं। सुप्रीम कोर्ट का निर्णय जब आयेगा तब पेमेंट सबको मिलेगा। इसके बावजूद भी मेरे जितनी हेसियत है उस अनुसार आपका आर्थिक सहयोग कर सकता हूँ।

सच यह है कि पवन जी नगर के सभी गरीबों का हर समय सहयोग करते थे परन्तु कुछ लोग आये दिन अपनी धमकी की भाषा का प्रयोग करने लगते थे। कुछ पवन जी के दुश्मन थे। उनके पास लोगों को भड़काने का ही काम वे प्रायः कह देते थे कि अब आपका पैसा डूब चुका है। हाँ अब यह आपके ऊपर निर्भर करता है कि आप कैसे वसूल सकते है।

भारती को आशंका थी कि कोई व्यक्ति आज ऊँच नीच बात कह गया है जिससे आज स्वाभिमानी माटसाहब मन किसी अप्रिय वंदना से तड़फ चुका है। भारती ने मन की वेदना निकालने का प्रयास किया और क्यों क्या हुआ। आज फिर कोई कुछ कह गया है पवन ने कहा नहीं तो भारती फिर सवाल दागा तो फिर आपका सुबह सुबह से चेहरा तेजहीन क्यों हो रहा है चेहरे पर चिंता गहराती नजर आ रही है मुझे मालूम है कि आप अपनी चिंता मुझे से छुपाना बखूबी जानते पर आप इस बात का नहीं भूलना कि मुझे आपकी अर्धांगिनी बने 25 वर्ष तो हो ही चुके हैं। मैं आपके स्वभाव व्यवहार से अच्छी तरह से परिचित हो चुकी हूँ मुझसे कोई भी बात छुपाना अब आपके कठिन काम ही होगा। कृपया अब आप मुझे अपनी चिंता और पीड़ा का कारण बता दें ताकि मैं आपकी मनो चिकित्सा कर सकूँ।

अच्छा एक बात आपसे और भी मैं कहना चाहती हूँ कि मूक चिड़िया भी अपने

कलरव से प्रभात की खुशी मनाती हो तब आप उस मंगल प्रभात के अवसर पर भी चुपचाप सुनसान कोना पकड़ने की कोशिश क्यों करते सूर्योदय का समय तो हर प्राणी में उमंग की तरंग भरने वाला होता है। हर कोई मूक पशु पक्षी भी प्रातः काल में खुशी कहीं न कहीं से खोज ही लेता है और एक आप है जो मौन लेकर एक कुर्सी से अपनी पीठ टिकाकर बैठ जाते हैं क्या आपको ऐसा करना अच्छा लगता है आज तो आपको मेरे प्रश्न का ठीक से जबाब देना ही होगा।

पवन ने बात को टालते हुये कहा ऐसी कोई बात नहीं है छोटी सी बात को बड़ी बनाकर कहना प्रायः महिलाओं की आदत होती है। मुझे कुछ समझ में आता आखिर ऐसा क्यों होता है एक भाई एसोआराम से दिन काटता है दूसरे सामने मात्र संघर्ष ही चलता रहता है।

आपको क्या समझाऊँ आज ही ऐलक जी के प्रवचन मैंने सुने उसमें उन्होंने कहा था कि जिन्दगी और विपत्ति का चोली दामन जैसे संबंध है यदि जिंदगी है तो विपत्ति अवश्य होगी जैसे रेहट का एक डिब्बा खाली हो तो दूसरा उसी समय भर जाता है ठीक उसी तरह से मनुष्य की एक विपत्ति व्यतीत हो नहीं पाती की ठीक उससे पहले ही दूसरी विपत्ति सामने खड़ी हो जाती है।

पवन ने कहा ठीक है अब तो लगता है तुम भी मुझे प्रवचन सुनाना सीख जाओगी परन्तु एक बात का ध्यान रखना आज दुनिया में दूसरे को प्रवचन सुनाने वाले ओर उपदेश देने वाले बहुत लोग है परन्तु जब उनके सामने कोई समस्या आती है तो दूसरे समझाने वाले खुद नहीं समझ पाते हैं।

भारती ने कहा मैं आपको प्रवचन सुनाने के योग्य तो नहीं हूँ परन्तु जो संतो के मुखारविन्द से तीर्थंकरों की वाणी वो मैंने तोते की तरह दोहरा दी है आप चाहो तो मेरी मजाक उडा सकते हैं या फिर आप जीवन का सच समझ सकते हैं अथवा इसे वस्तु का स्वरूप

समझ सकते हैं क्योंकि वस्तु स्वरूप विचार खुशी से सब दुख संकट सहा करे। चाहे तो आप मेरी भावना को आत्मसात् कर सकते हैं ये सब आपके विवेक और आपकी समझ पर निर्भर करता है। स्वतंत्रता आपकी है मेरा तो मात्र आग्रह है।

ठीक है भारती ! तुम्हारी भावना को मैं समझ रहा हूँ और समझता रहूँगा।

अब सुनो मेरी समस्या यह है कि मेरी कक्षा में एक शुभम (चेनू) नाम का विद्यार्थी पढ़ता है आज मैंने उसका एक रूप देखा कि घटाटोप कुहरे के बीच अखबार होकर का काम कर रहा उसने मुझे नहीं देख पाया पर मैंने उसे खूब अच्छी तरह पहचान लिया। उसकी अर्थ अभाव की व्यवस्था को समझ गया। मुझे यह पता लगाना है कि उसके घर में कौन है। उसके पिता क्या करते है माँ क्या करती है। यह बालक यदि होनहार होगा तो मैं उसका सहयोग अवश्य करूँगा। क्योंकि बच्चे होनहार होते हैं परन्तु वे अपने परिवार की आर्थिक कमजोर हालत के बालश्रम करने लगते हैं और पढ़ाई पूरी नहीं कर पाते हैं। भारती बस मैं इसी उधेड़ बुन में सुबह लगा हुआ हूँ।

दूसरी बात है कि शुभम रोज़ से स्कूल आता है शायद हो सकता है कि वह अखबार वितरण करने के कारण से बिलम्ब से शाला में आता हो।

पवन ने घड़ी देखी स्कूल समय हो गया वे स्कूल पहुँचे प्रार्थना उपरान्त कक्षा में पहुँचे अपनी पढ़ाई शुरू कर दी कि 10 मिनट बाद शुभम ने जोर से आवाज लगाई मैं आई कम इन सर।

पवन कहा यस कम इन पवन ने अपनी प्यार भरी नजरों से शुभम देखा और पूँछा बेटा तुम्हारे पिता जी क्या करते हैं ?

शुभम ने बड़े ही धीरे कहा सर वो तो एक सड़क दुर्घटना मे स्वर्ग सिधार चुके हैं और शुभम ने अपनी हथेली पवन की तरफ बड़ा दी पवन ने शुभम को अपने गले लगाते हुये कहा नहीं शुभम तुम्हें सजा नहीं मेरी ओर से सहयोग रहेगा। अब दो वेंत नहीं दो बातें होंगी।

डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति



सुरेश जैन

जैन व्यक्तित्व डॉ. इन्द्र चंद्र शास्त्री



जन्म व शिक्षा - इस समय हरियाणा प्रांत के सिरसा जिले की मण्डी डबवाली में 27 मई 1912 को इन्द्र चन्द्र का जन्म हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् आगे शिक्षा ग्रहण करने के लिये बीकानेर चले गये जहां इन्होंने संस्कृत तथा प्राकृत का अध्ययन किया। इनकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी तथा बड़े धार्मिक विचारों वाले व्यक्ति थे। अपने जीवन में अध्यात्मवाद का अनुसरण करने वाले वे जैन अनेकांत से बड़े प्रभावित थे। बीकानेर में पढ़ने के बाद इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. की डिग्री हासिल की तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से वेदांत में शास्त्राचार्य की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री और कलकत्ता से न्यायतीर्थ की उपाधि प्राप्त की। पंडित बालकृष्ण मिश्र ने मार्गदर्शन में इन्होंने पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। शास्त्री की डिग्री मिलने के बाद इनके नाम के पीछे शास्त्री लग गया तथा पी.एच.डी. की उपाधि मिलने के बाद नाम के आगे डॉक्टर लग गया। इस प्रकार वे सारी जिन्दगी डॉ. इन्द्र चन्द्र शास्त्री के नाम से प्रसिद्ध रहे।

एपिस्टेमॉलॉजी ऑफ जैन आगमस (जैन आगमों के सच्चे ज्ञान का अध्ययन) पर इनके शोध निबंध की बड़ी प्रशंसा की गई। जिसमें इनका तुलनात्मक अध्ययन है। इसमें रूढ़िवादिता और वास्तविकता एवं इन दोनों की सहमति और असहमति के मुद्दों का जिस परिपक्वता से आकलन किया गया है वह निश्चय ही इनके जैन धर्म अध्ययन के अग्रणी व्याख्याकार के रूप में ख्याति प्रदान करता है। इस अध्ययन में एक स्वस्थ दृष्टिकोण और हठधर्मिता से मुक्ति की झलक मिलती है।

ज्ञान - अज्ञानता व मतांघता के तम को मिटाती तथा जिज्ञासुओं में जागृति उत्पन्न करने वाली अखंड ज्योतिस्वरूप अमिट छाप छोड़ने वाले डॉ. इन्द्र चन्द्र शास्त्री की ज्ञानशक्ति उनका व्यक्तित्व और वास्तव में उनका संपूर्ण जीवन इस तेजस्विता का प्रतीक था। भारतीय ज्ञान शक्ति की जीती जागती प्रतिमूर्ति कहे जाने वाले एक दार्शनिक, असाधारण लेखक तथा महान कवि, दर्शन धर्म, संस्कृति, भारत-विद्या, भाषा विज्ञान, व्याकरण ज्ञान-मिमांसा आदि में पारंगत थे। उनका महत्वपूर्ण योगदान के प्रमाण पालि, प्राकृत दर्शन (पूर्वी तथा पश्चिमी) भारतीय इतिहास, यूरोपीय भाषाओं आदि क्षेत्रों में प्राप्त हो जाते हैं। वह एक अथक तथा बहुप्रच विचारक थे जिनकी विलक्षण कल्पनाशक्ति में सारगर्भित चिंतन का संगम था। इन्होंने लेखन पर विद्वता की गहरी छाप छोड़ी।

साहित्य - इन्होंने मध्ययुगीन दर्शन पद्धति तथा शास्त्रीय रूढ़िवादिता पर 70 पुस्तकें तथा 600 शोध पत्र लिखे। इन्होंने प्राचीन शास्त्रीय ग्रंथों के ज्ञान का सार निकाल कर उसे आधुनिक परिवेश में पेश किया। इनकी पालि भाषा और साहित्य में तीन प्रस्तावनाओं की श्रृंखला है। विलहेम गाइगर लिखित प्रसिद्ध जर्मन कृति **पालि लिट्रैटर अंद स्प्राचे** की भूमिका का हिन्दी अनुवाद किया। डॉ. इन्द्र चन्द्र शास्त्री ने शताब्दियों से प्रचलित चिंतन धाराओं का तटस्थ आलोचनात्मक विश्लेषण किया। मृतप्राय मान्यताओं को तोड़ने के लिये तर्क को आवश्यक साधन मानते हुये भी इन्होंने मौलिक चिंतन संरचना को अपनाया। उनमें एक अन्वेषक और

सुधारक का अविरल उत्साह था। इसके प्रमाण उनकी कृतियों RELIGIOUS SHOPS (धर्म की दुकानें) और GHOST OF CULTURE (धर्म के ठेकेदार) में उजागर होता है। उनकी अन्य महत्वपूर्ण कृतियों में संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास महाभारत के सूक्ति रत्न, आलोक और उन्माद, हमारी परंपरा, धर्म और राष्ट्र निर्माण, भारतीय आर्य भाषाएँ, जैनियम एंड डेमोक्रेसी (जैन धर्म तथा प्रजातंत्र) आदि शामिल हैं।

समाज सुधार - 1942 में उन्होंने बाल दीक्षा के विरुद्ध अभियान चलाया था। उस समय प्रचलित इस प्रथा के अंतर्गत जैन साधु राजस्थान में गरीब बच्चों को बाल्यकाल में ही दीक्षित कर लेते थे। उन्होंने अपने अभियान में इस बात पर जोर दिया कि कोई भी जैन साधु छोटी उम्र में किसी को भी दीक्षित न करें। इनके इस सफल अभियान के फलस्वरूप बीकानेर विधानसभा में एक विधेयक प्रस्तुत हुआ जिसमें पास हुआ कि जैन साधु किसी नाबालिग गरीब को बाल दीक्षा नहीं देंगे।

इनके ऊपर महात्मा गांधी का बड़ा प्रभाव रहा तथा इन्होंने देश के स्वतंत्रता संग्राम में भी बढ़कर भाग लिया। विभाजन के दौरान इन्होंने सहायता शिविर भी लगाये। वे संगठनात्मक गतिविधियों में भी शामिल रहे। वे एक साहसिक तथा समर्पित व्यक्ति थे और बुद्धिवाद के सदैव समर्थक रहे।

उपलब्धियाँ - 1954-58 तक वे अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन के सचिव रहे। 1957 में इन्होंने ऑल इंडिया ओरियंटल कॉन्फ्रेंस के दिल्ली सत्र का आयोजन किया। दिल्ली, उज्जैन तथा राजगीर के विश्व धर्म सम्मेलन में वे मुख्य वक्ता थे। 1959 में वह देहली विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अध्ययन संस्थान में संस्कृत के पहले विभागाध्यक्ष नियुक्त हुये। आँखों में ग्लूकोमा आने के कारण इनकी दृष्टि चली गई तथा 1961 में इन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। दृष्टि चले जाने के बावजूद उनके विपुल उद्गारों का प्रवाह नहीं थमा और वे श्रुतलेख के माध्यम से अपने भावों और विचारों को महान कृतियों का रूप देने लगे। तत्पश्चात् UNIVERSITY GRANTS COMMISSION की एक योजना के अंतर्गत उन्हें अवकाश प्राप्त प्रोफेसर नियुक्त किया गया। 1967-69 के दौरान उन्होंने धर्म और आधुनिक मनुष्य पर शोध किया। आमंत्रित वक्ता के रूप में वे अनेक विभागों से संबद्ध रहे। इनके बारे में विद्वानों का मत है कि वे सम्पूर्ण ज्ञान के सागर थे।

सम्मान - इन्होंने अपनी असाधारण बुद्धि से सदैव दूसरों का पथप्रदर्शन किया। इसकी प्रतिभावना व रचनात्मक सेवाओं तथा साहित्य के प्रति महान प्रयासों और सृजनात्मक प्रतिभा के सम्मान में हिन्दी अकादमी ने इन्हें साहित्य सेवा सम्मान प्रदान किया था। देहली विश्वविद्यालय के उप-कुलपति द्वारा इनको साहित्य रत्न अलंकरण सम्मान दिया गया तथा भारत के राष्ट्रपति ने 15 अगस्त 1968 को इनकी साहित्यिक सेवाओं के लिये CERTIFICATE OF HONOUR प्रदान किया।

साहस और समर्पण की प्रतिमूर्ति डॉ. इन्द्र चन्द्र शास्त्री मनुष्य के व्यक्तिगत से वैश्विक और मानवतावादी होने तक की आध्यात्मिक यात्रा के हिमायती थे। इनका 74 वर्ष की आयु में 3 नवम्बर 1986 को निधन हो गया। इनके जीवन का सफर सत्य का तीर्थाटन था।

डॉ. इन्द्र चन्द्र शास्त्री पर डाक टिकट - महान समाज सुधारक, साहित्यकार तथा दार्शनिक डॉ. इन्द्र चन्द्र शास्त्री के चित्र वाली एक स्मारक डाक टिकट भारत सरकार के डाक विभाग द्वारा इनके 92वें जन्म दिवस पर 27 मई 2004 को जारी की थी। बिना जल चिन्ह वाले कागज पर हरे रंग, काले रंग तथा हरे-नीले रंग को मिलाकर 4 लाख संख्या में छपा गया था। इसका मूल्य 500 पैसे हैं। इस डाक टिकट का विवरण इंग्लैंड से छपने वाले स्टेनले केटालॉग में नम्बर 2061 पर तथा कामनवेल्थ देशों के केटालॉग में नम्बर 2203 पर दिया गया है।

जैनदर्शन में वस्तु स्वातंत्र्य

✽ डॉ. ब्र. अनिल कुमार जैन, (जयपुर) ✽

जैनदर्शन में प्रत्येक वस्तु के वस्तुत्व का दो दृष्टियों से विचार किया गया है। प्रथम दृष्टि द्वारा प्रत्येक वस्तु की स्वरूपादि चतुष्टय की अपेक्षा स्वतन्त्र अस्तित्व की उद्घोषणा कर परचतुष्चय का उसमें नास्तित्व बतलाया गया है। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक वस्तु का जितना भी स्व है वह सब अस्तित्वमय है। उसमें पर का अत्यान्ताभाव है। सजातीय या विजातीय कोई भी वस्तु अपने से भिन्न स्वरूप सत्ता रखने वाली किसी भी अन्य वस्तु की सीमा को लांघकर उसमें प्रवेश नहीं कर सकती। जैसे किसी किले के वज्रमय कोट का भेदन करना सम्भव नहीं वैसे ही किसी भी वस्तु की सीमा के भीतर किसी अन्य वस्तु का प्रवेश करना सम्भव नहीं है। इसी तथ्य का उद्घाटन करते हुये आचार्य कुन्द कुन्द समयसार में कहते हैं-

जो जम्हि गुणे दब्बे सो अण्णमिह ण संकमे दब्बे ।

सो अण्णमसंकंतो कहं तं परिणामय दब्बं ॥1॥

अर्थात् जो वस्तु विशेष जिस द्रव्य या गुण में है वह अन्य द्रव्य या गुणरूप में संक्रमित नहीं होती। वह अन्य द्रव्या गुणरूप संक्रमित नहीं होती अन्य वस्तु विशेष को कैसे परिणामा सकता है।

इसकी आत्मख्याति व्याख्या में आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं- इस लोक में जो जितनी कोई वस्तु विशेष जितने प्रमाण में जिस किसी चैतन्य-स्वरूप या अचैतन्य स्वरूप द्रव्य या गुण में स्वर से ही अनादिकाल से वर्त रही है वह वास्तव में अपनी अचलित वस्तु स्थिति की सीमा का भेदन करना अशक्य होने के कारण उसी द्रव्य या गुण में वर्तनी रहती है, वह दूसरे द्रव्य या दूसरे गुणरूप से संक्रमित नहीं होती तो अपने से भिन्न दूसरी वस्तु विशेष को कैसे परिणामा सकती है, अर्थात् नहीं परिणामा सकता अतः परभाव का अन्य किसी के द्वारा किया जाना सम्भव नहीं है।

उक्त प्रमाण से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक द्रव्य स्वयं कर्ता होकर अपना कार्य करता है और करण सम्प्रदान अपादान तथा अधिकरण पने को भी वहीं प्राप्त होता है। यही कारण है कि प्रकारान्तर से वस्तु के वस्तुत्व का निर्देश करते हुये बतलाया है कि वह न तो सर्वथा कूटस्थ नित्य है और न ही सर्वथा निरन्वय क्षणिक है, किन्तु वह अर्थक्रियाकरण शील है। वह अपने अन्वयरूप स्वभाव के कारण अवस्थित रहते हुये भी स्वयं उत्पात-व्ययरूप है और व्यतिरेक स्वभाव के कारण सदा परिणमनशील है। यही वस्तु का वस्तुत्व है। तात्पर्य यह है कि वह द्रव्य दृष्टि से ध्रुव है और पर्यायदृष्टि से उत्पाद-व्ययरूप है। इसी तथ्य को प्रवचनसार में इन शब्दों में स्पष्ट किया है -

ण भवो मंगविहिणो भंगो वा णत्थि संभव विहिणो ।

उत्पादो विय भंगो का विणा घोव्वेण अत्थेण ॥2॥

अर्थात् उत्पाद व्यय के बिना नहीं पाया जाता और व्यय उत्पाद के बिना नहीं पाया जाता तथा उत्पाद और व्यय ध्रौव्य स्वरूप अर्थ के बिना नहीं पाया जाता।

यह वस्तु स्थिति है। इसीलिये ही प्रमाण के विषय का स्वरूप निर्देश करते हुये प्रमेयरत्नमाला में यह सूत्र वचन दृष्टिगोचर होता है-

सामान्य विशेषात्मा तदर्थो विषयः

अर्थात् प्रमाण के द्वारा ग्राह्य सामान्य-विशेषात्मक पदार्थ उसका विषय है।

इस वचन द्वारा भी उक्त दोनों प्रकार से निरूपित वस्तुत्व-गर्भित वस्तु का निरूपण किया गया है।

इसका यह अर्थ है कि जैसे वस्तु का सामान्य अंश परमार्थ से स्वतः सिद्ध है उसी प्रकार उसका विशेष अंश भी परमार्थ से परमार्थ से स्वतः सिद्ध है। उसका परस्पर की सिद्धि के लिये अपेक्षा से कथन करना अलग बात है। कोई भी वस्तु या उसका अंश आपेक्षिक नहीं होता।

यद्यपि यह सत्य है कि आगम में उत्पाद-व्यय रूप कार्य को पर सापेक्ष कहा गया है, किन्तु पर्यायार्थिक नय से कार्य अपने काल में स्वयं है। वही कर्ता है, वही कर्म है और करण आदिरूप भी वही है। अन्य कोई उसका कर्ता आदि नहीं है। फिर भी आगम में उत्पाद-व्ययरूप कार्य का जो परसापेण कथन दृष्टिगोचर होता है वह भेद की अपेक्षा किया गया है।

जिस प्रकार जीव एक द्रव्य-वस्तु है, उसी प्रकार पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल भी द्रव्य हैं प्रत्येक द्रव्य में अनन्त शक्तियाँ गुण हैं, प्रत्येक शक्ति ही अवस्था समय-समय पर स्वतः बदलती रहती है। इन छहों द्रव्यों (वस्तुओं) के समुदाय का नाम ही लोक अर्थात् विश्व है। वस्तु अनादि-अनन्त अविनाशी है। प्रत्येक द्रव्य अपनी अवस्थाओं में परिवर्तित होता हुआ अनादि-अनन्त बना रहता है। इसलिए विश्व भी अपनी अवस्थाओं को बदले हुये अनादि-अनन्त बना रहता है। कोई भी द्रव्य किसी का बनाया हुआ नहीं, अतः इस विश्व का भी कोई बनाने वाला नहीं हो सकता। लोक में सभी द्रव्य एक साथ रहते हुये भी अपनी स्वतंत्र सत्ता को कभी नहीं छोड़ते हैं जैसा कि आचार्य कुन्दकुन्द ने कहा भी है-

अण्णोण्णं पविसंता दिंता ओगासमण्णमण्णस्स ।

मेलतां किय णिच्चं सगं सभावं ण विजहंति ॥4॥

अर्थात् लोक में सभी द्रव्य परस्पर एक दूसरे में प्रवेश कर रहते हैं, एक दूसरे को अवकाश देते हैं, और निरन्तर एक-दूसरे में मिले हुये हैं, किन्तु अपना स्वभाव नहीं छोड़ते अर्थात् अपनी स्वतंत्रता को नहीं छोड़ते।

लोक में प्रत्येक द्रव्य की सत्ता स्वतः सिद्ध है। सत्तापना अर्थ अस्तित्वपना ही द्रव्य का लक्षण है। अपनी अवस्थाओं में परिवर्तित होता हुआ भी द्रव्य का अनादि-अनन्त कायम रहता है। जैसा कि आचार्य कुन्द कुन्द ने कहा है-

दब्बं सल्लक्खणियं उत्पादव्वय ध्रुवत्तसंजुत्तं ।

गुणपज्जयासयं वा जं तं भण्णंति सव्वण्हू ॥5॥

अर्थात् जो सत्ता रूप लक्षण से सहित है, उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य से युक्त है तथा गुण पर्यायों का आश्रय है, उसे सर्वज्ञ देव द्रव्य कहते हैं।

इस प्रकार प्रत्येक द्रव्य की सत्ता स्वातंत्र्य है एक द्रव्य की सत्ता का दूसरे द्रव्य की सत्ता में अत्यन्ताभाव है। त्रिकाल में कभी भी एक द्रव्य दूसरे द्रव्य रूप नहीं हो सकता है।

जैसा का पंचाध्यायी में कहा गया है-

तत्त्वं सत्त्वाक्षणीकं सत्मात्रं वा यतः स्वतः सिद्धम् ।

तस्मादनादिनिधनं स्वसहायं निर्विकल्पं च ॥6॥

अर्थात् तत्त्व का लक्षण सत् है या सन्मात्र ही तत्त्व है और जिस कारण से वह स्वतः सिद्ध है, इसलिये वह विनाश रहित अनादि अनिधन है, स्वसहाय है और निर्विकल्प अर्थात् अखण्ड है।

पंचाध्यायीकार ने आगे लिखा है-

इत्थं नो चेदसतः प्रादुर्भूतिर्निरंकुशा भवति ।

परतः प्रादुर्भावो युतिसिद्धत्वं सतो विनाशो वा ॥7॥

अर्थात् यदि ऐसा न माने तो असत् की उत्पत्ति होने लगेगी तथा पर से उत्पत्ति होने लगेगी। पदार्थ,

दूसरे पदार्थ के संयोग से पदार्थ कहलावेगा सत् के विनाश का प्रसंग आवेगा।

परमात्म प्रकाश में द्रव्य की स्वतन्त्रता बताते हुये कहा गया है-

अप्पा अप्पु जि परुजि परु अप्पा परु जि ण होई।

परु जि कयाइ वि अप्पु ण वि णियमें पमणहिं जोइ ॥८॥

अर्थात् निजवस्तु आत्मा ही है, देहादि पदार्थ पर ही हैं। आत्मा तो परद्रव्य नहीं होता और परद्रव्य आत्मा नहीं होता, ऐसा निश्चय कर योगीश्वर कहते हैं।

योगसार में कहा गया है कि-

सर्वे भावाः स्वभावेन स्वस्वभावव्यवस्थिताः।

न शक्यन्तेऽन्यथा कर्तुं ते परेण कदाचन ॥९॥

अर्थात् समस्त पदार्थ स्वभाव से ही अपने स्वरूप में स्थित हैं वे कभी अन्य पदार्थों से अन्यथा नहीं किया जा सकते। प्रत्येक द्रव्य स्वप्रतिष्ठित पने को बताते हुये अकलंक ने कहा है-

एतंभूतनयादेशात् सर्वद्रव्याणि परमार्थतया आत्मप्रतिष्ठानिः।

अन्योन्याधारतां व्याघात इति चेन्न, व्यवहारतस्तसिद्धेः ॥१०॥

अर्थात् एवं भूतनय की अपेक्षा सभी द्रव्य स्वप्रतिष्ठित हैं, इनमें आधार-आधेय भाव नहीं है। व्यवहारनय से ही परस्पर आधार आधेय भाव की कल्पना होती है।

गुणों की अपेक्षा वस्तु स्वातंत्र्य-

सभी गुण द्रव्य के आश्रित रहते हुये भी प्रत्येक गुण का अस्तित्व स्वतंत्र है। प्रत्येक द्रव्य के अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व आदि जो सामान्य गुण हैं। से सभी गुण लक्षण, संज्ञा प्रयोजन आदि की अपेक्षा परस्पर में एक दूसरे से पृथक हैं इसी प्रकार विशेष गुण भी स्वातंत्र्य हैं जैसे जीव द्रव्य के विशेष गुण-ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य ये चारों गुण लक्षण, संज्ञा और प्रयोजन आदि की अपेक्षा स्वतंत्र्य है। इसी प्रकार पुद्गल द्रव्य के विशेष गुण-स्पर्श, रस, गन्ध और वर्ण ये परस्पर स्वतंत्र्य हैं स्पर्श गुण में रस, गन्ध और वर्ण नहीं हैं इसी प्रकार सभी गुण एक दूसरे से पृथक हैं। जैसा की आचार्य उमास्वामी ने भी कहा है-

द्रव्याश्रया निर्गुणाः गुणाः ॥११॥

अर्थात् जो द्रव्य के आश्रित हो और दूसरे गुण से रहित हो वह गुण है। इसी प्रकार पंचाध्यायीकार ने भी कहा है -

तदुदाहरणं चैतज्जीवे यद्दर्शनगुणश्चैकः।

तन्नज्ञानं न सुखं चारित्रं वा न कश्चिदितरश्च ॥

स्वयमुच्छलन्ति तदिमा मिथो विभिन्नाश्च शक्तयोऽनन्ताः ॥१२॥

अर्थात् जीव में जो दर्शन नाम का एक गुण है, वह न ज्ञान गुण है न सुख है, न चारित्र अथवा कोई अन्य गुण नहीं है, किन्तु वह दर्शन गुण दर्शन ही है। इसी प्रकार द्रव्य का जो भी गुण वह भी उससे भिन्न रूप वाला नहीं हो सकता है अर्थात् सभी गुण अपने-अपने स्वरूप में ही रहते हैं इसलिये ये परस्पर भिन्न अनन्त शक्तियां द्रव्य में स्वयं प्रतिभासित होती हैं। इसी प्रकार आगे भी कहा है-

गुणः कोऽपि कस्यापि गुणस्यान्तर्भवः क्वचित्।

नाधारोऽपि च नाधेयो हेतुर्नापीह हेतुमान् ॥

किन्तु सर्वेऽपि स्वात्मीयाः स्वात्मीयशक्तियोगतः।

नानारूपा ह्यनेकेऽपि सता सम्मिलिता मिथः ॥३॥

अर्थात् प्रकृत में कही भी कोई भी गुण किसी भी गुण का अन्तर्भावी नहीं है, आधार नहीं है आधेय भी नहीं है, कारण और कार्य भी नहीं है। किन्तु अपनी-अपनी शक्ति को धारण करने की अपेक्षा

सभी गुण अपने-अपने स्वरूप में स्थित हैं। इसलिये यद्यपि वे नानारूप व अनेक हैं तथापि निश्चयपूर्वक वे सभी गुण परस्पर में एक ही सत् के साथ अन्वयरूप से सम्बन्ध रखते हैं।

पर्याय की अपेक्षा वस्तु स्वातंत्र्य

जिस प्रकार एक द्रव्य दूसरे द्रव्य से पृथक है, एक गुण दूसरे गुण से पृथक है उसी प्रकार एक पर्याय भी दूसरी पर्याय पृथक है। एक पर्याय का दूसरी में अभाव है। पूर्व पर्याय का वर्तमान पर्याय में अभाव है। वर्तमान पर्याय का आगामी पर्याय में अभाव है। ज्ञान गुण की पर्याय का दर्शन गुण की पर्याय में अभाव है। दर्शनगुण की पर्याय में ज्ञानगुण की पर्याय का अभाव है। रूप गुण की पर्याय रस गुण की पर्याय में अभाव है। रस गुण की पर्याय का रूप गुण की पर्याय में अभाव है। स्वभाव पर्याय का विभाव पर्याय में अभाव है विभाव पर्याय का स्वभाव पर्याय में अभाव है।

यद्यपि यह सत्य है कि एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य में अभाव है एक गुण का दूसरे गुण में अभाव है एक पर्याय का दूसरी पर्याय में अभाव है किन्तु एक द्रव्य की सत्ता का दूसरे द्रव्य की सत्ता में अभाव में संभव नहीं है। एक गुण के अभाव में दूसरा गुण संभव नहीं है तथा एक पर्याय के अभाव में दूसरी पर्याय संभव नहीं अतः द्रव्य, गुण और पर्याय की स्वतंत्रता संबंधी पूर्वोक्त कथन सापेक्ष ही समझना चाहिये निरपेक्ष नहीं।

शक्ति की अपेक्षा वस्तु स्वातंत्र्य- आचार्य अमृतचन्द्र ने समयसार की आत्मख्याति व्याख्या में जिन 47 शक्तियों का निर्देश किया है, उनमें में कुछ शक्तियों का उल्लेख करते हैं जिसमें वस्तु की स्वातंत्र्यता का स्पष्ट बोध होता है। 1. एक भाव शक्ति है, जिसमें प्रत्येक द्रव्य अन्वय रूप से सदा अवस्थित रहता है।

2. एक क्रिया शक्ति है, जिसमें प्रत्येक द्रव्य अपने स्वरूप सिद्ध कारकों के अनुसार उत्पाद-व्ययरूप अर्थक्रिया करता है।

3. एक कर्म शक्ति है जिससे प्राप्त होने वाले अपने सिद्ध स्वरूप को द्रव्य स्वयं प्राप्त होता है।

4. एक कर्ताशक्ति है जिससे होने रूप स्वतः सिद्ध भाव का यह द्रव्य भावक होता है।

5. एक कारण शक्ति है जिससे यह द्रव्य अपने प्राव्यमाण कर्म की सिद्धि में स्वतः साधकतम होता है।

6. एक सम्प्रदान शक्ति है जिससे प्राव्यमाण कर्म स्वयं को लिये समर्पित होता है।

7. एक अपादान शक्ति है जिससे उत्पाद-व्यय भाव के उपाय होने पर भी द्रव्य सदा अन्वय रूप से ध्रुव बना रहता है।

8. एक अधिकारण शक्ति है जिससे भाव्यमान समस्त भावों का आधार स्वयं द्रव्य होता है।

उक्त शक्तियों से यह सात होता है कि प्रत्येक द्रव्य की जितनी स्वभाव अर्थ-व्यंजनरूप पर्यायें होती हैं वे सब कारकान्तर निरपेक्ष होती वस्तुतः कारकान्तरों का अन्य द्रव्य के किसी भी कार्य के साक्ष्य के सम्बन्ध नहीं है क्योंकि प्रत्येक द्रव्य में ऐसी भी एक शक्ति है जिससे किसी का अपने से भिन्न अन्य किसी के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। उसका नाम सम्बन्ध शक्ति है। इससे यही सूचित होता है कि प्रत्येक द्रव्य का ध्रुवस्वरूप या उत्पाद-व्ययरूप जितना भी स्व है वह सब वस्तु ही है। न तो वस्तु अपने स्व का उल्लंघन कर अन्यरूप हो सकती है और न ही उसमें अन्य वस्तु का किसी भी अपेक्षा से सम्बन्ध ही हो सकता है। वह निरन्तर अपनी स्वयंसिद्ध वस्तु व्यवस्था है।

षट्कारक में वस्तु स्वातंत्र्य

1. प्रत्येक वस्तु षट्कारकरूप से प्रति पर्याय की उत्पत्ति के समय परिणामन करती रहती है। उसी समय वह स्वयं अपने कार्य का कर्ता है, अभेद दृष्टि में वही कर्म है, वही करण है, वही सम्प्रदान है वही अपादान है और वही अधिकरण है।

प्रवचनसार की तात्पर्यवृत्ति टीका में कहा गया है-

यह आत्मा अनन्तशील युक्त ज्ञायक स्वभाव के कारण स्वतंत्र होने से कर्तृत्व के अधिकार को ग्रहण किया है। परिणमित होने के स्वभाव के कारण स्वयं ही प्राप्त होने से कर्मत्व का अनुभव करता है। परिणमित होने के स्वभाव से स्वयं ही साधकतम होने से करणता को धारण करता है। स्वयं ही अपने कर्म के द्वारा समाश्रित होने से सम्प्रदानता को धारण करता है। विपरिजमन होने के पूर्व समय में प्रवर्तमान विकल ज्ञान स्वभाव का नाश होने पर भी सहज ज्ञान स्वभाव से स्वयं ही ध्रुवता का अवलम्बन करने से अपादानता को धारण करता हुआ और स्वयं परिणमित होने स्वभाव का आधार होने से अधिकरणता को आत्मसात् करता हुआ स्वयंमेव छह कारक रूप होने से अथवा उत्पत्ति अपेक्षा से स्वयं में अविर्भूत होने से स्वयं भू कहलाता है।

विभाव पर्याय और षट्कारक-

आचार्य अमृतचन्द्र ने पंचास्तिकाय की टीका में कहा है निश्चयनय से अभिन्न कारकपना होने से कर्म और जीव स्वयं स्वभाव के कर्ता आदि है यह स्पष्ट करते हैं - कर्म वास्तव में कर्मरूप से प्रवर्तमान पुद्गल स्कन्ध पने से कर्तृत्व को धारण करता हुआ, कर्मपना प्राप्त करने की शक्तिरूप करणपने को अंगीकृत करता हुआ पूर्वभाव का व्यय हो जाने पर भी ध्रुवत्व का अवलम्बन करने से अपादानपने को प्राप्त करता हुआ उत्पन्न होने वाले परिणामरूप कर्म द्वारा समाश्रित होने से सम्प्रदानपने को प्राप्त अधिकरणपने को प्राप्त हुआ इस प्रकार स्वयंमेव षट्कारकरूप से प्रवर्तता हुआ अन्य कारक की अपेक्षा नहीं करता। इसी प्रकार जीव भी भावपर्यायरूप से प्रवर्तमान आत्मद्रव्यरूप से कर्तापने को धारण करता हुआ, भावपर्याय प्राप्त करने की शक्तिरूप से करणपने को अंगीकृत करता हुआ प्राप्त हुई भावपर्यायरूप से कर्मपने को अनुभव करता हुआ, पूर्व की भाव पर्याय का व्यय होने पर भी ध्रुवपने का अवलम्बन होने से अपादानपने को प्राप्त हुआ, उत्पन्न होने वाले भावपर्याय रूप कर्म द्वारा समाश्रित होने से सम्प्रदानपने को प्राप्त हुआ और धारण की जाने वाली भावपर्याय का आधार होने से अधिकरणपने को प्राप्त हुआ इस प्रकार स्वयं ही षट्कारक रूप से वर्तता हुआ अन्य कारक की अपेक्षा नहीं करता।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जहाँ असद्भूत व्यवहार नय से एक द्रव्य का अन्य द्रव्य के साथ निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध कहा जाता है वहीं जब प्रत्येक द्रव्य प्रति समय स्वभाव से स्वयं षट्कारक रूप से प्रवर्तित होता है तब प्रत्येक द्रव्य की स्वभाव पर्याय की उत्पत्ति के समय उसका स्वयं षट्कारकरूप से प्रवृत्त होना सुनिश्चित ही घटित होता है।

जीवद्रव्य और वस्तु स्वातंत्र्य-

छहों द्रव्यों में जानने वाला एक मात्र जीव ही है अर्थात् जिसमें ज्ञान है- चेतना है, जानने की सामर्थ्य है, ऐसा तो मात्र एक जीवद्रव्य ही है, शेष अन्य पाँचों ही द्रव्य अचेतन अर्थात् अजीव द्रव्य हैं उनमें ज्ञान का अभाव होने से जानने की सामर्थ्य नहीं है, अतः वे सुखी-दुखी नहीं हो सकते। अतः हमारा मुख्य प्रयोजन तो एकमात्र जीवद्रव्य की चर्चा करता है, क्योंकि अनाकाल से यह जीव ही अकेला दुखी होता हुआ इस लोक में परिभ्रमण करता चला आ रहा है। आचार्य अमित गति ने कहा है-

स्वयंकृतं कर्म यदात्मना पुरा, फलं तदीयं लभते शुभाशुभम् ॥16

अर्थात् जीव ने स्वयं ही जो पूर्व में कर्म किये हैं उसके शुभ-अशुभ फल को जीव स्वयं ही भोगता है। कर्म के शुभ-अशुभ फल से मुक्ति प्राप्त करने का उपाय जीव स्वयं ही करता है और स्वयं ही मुक्ति को प्राप्त होता है अतः जीव द्रव्यकर्ता- कर्म, भोक्ता, योग्य आदि में स्वतन्त्रता का निरूपण आवश्यक है अतः अनेक प्रकार से जीव की स्वतन्त्रता का विवेचन किया जा रहा है।

शुद्धनय से जीव की स्वतंत्रता

समयसार की टीका में आचार्य अमृतचन्द्र ने स्पष्ट कहा है कि जब हम जीव और पुद्गल की अनादि संयोगपद्य को एक पदार्थ के रूप में देखते हैं तो जीव मनुष्यादि रूप दिखाई देता है, आस्रवभय के भी दृष्टिगोचर होता है, पुण्यमय भी प्रतीत होता है, पापमय भी परिलंबित होता है, बन्धमय भी दृष्टि में आता है निर्जरा आदि रूप से दिखाई देता है, किन्तु जब एकमात्र जीवद्रव्य रूप मूलपदार्थ को दृष्टि में रखकर अवलोकन करते हैं तब जो चैतन्यभावमात्र प्रतीत होता है, उसकी सप्ततत्त्वात्मक या नवपदार्थ रूप अवस्थायें अनुभव में नहीं आती।

आचार्य कुन्द कुन्द ने कहा है-

जो पस्सदि अप्पाणं अबद्धपुट्ठं अण्णयं णियदं।

अविसेसमसंजुत्तं तं सुद्धणयं वियाणीहि ॥18॥

अर्थात् जिस दृष्टि से देखने पर आत्मा अबद्धस्पष्ट, अनन्य नियत, अविशेष और संयुक्त दिखाई देता है वह दृष्टि शुद्ध नहीं है।

आचार्य अमृतचन्द्र ने कहा है-

1. एकश्चितः चिन्मय एव भावोः ॥19

अर्थात् चेतन्य-आत्मा का तो एक चिन्मय स्वभाव है।

2. एक वस्तु का दूसरी वस्तु से कोई सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि दोनों के प्रदेश भिन्न-भिन्न होते हैं। इसलिये उनकी एक सत्ता नहीं हो सकती अर्थात् दो वस्तुयें मिलकर एक वस्तु नहीं बन सकती।

3. जिसका स्वभाव अलग-अलग होता है उनका अस्तित्व भी अलग-अलग होता है।

4. कोई वस्तु स्वतन्त्र वस्तु है इसका निश्चय तभी होता है, जब उसमें अपने स्वरूप की सत्ता तथा अन्य के स्वरूप की असत्ता सिद्ध हो।

शरीर और आत्मा की स्वतंत्रता-

आचार्य कुन्दकुन्द ने शरीर और आत्मा के एकत्व का निषेध करते हुये कहा है-

ववहारणयो भासदि जीवो देहो य हवदि खलु इक्को।

ण दु णिच्छयस्य जीवो देहो य कदावि एकट्ठो ॥23

अर्थात् व्यवहार नय से कहा जाता है कि जीव और देह एक है, किन्तु निश्चयनय से देखा जाये तो जीव और देह कभी एक पदार्थ नहीं हो सकते।

इस गाथा के भाव को स्पष्ट करते हुये आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं- जैसे गलाकर मिश्रित किये गये सोने और चांदी के पिण्ड में एक पदार्थ का व्यवहार होता है वैसे ही आत्मा और शरीर एक क्षेत्र में रहते हैं इसलिए व्यवहार मात्र से उन्हें एक कहा जाता है, निश्चयनय से नहीं। निश्चयनय से देखने पर अर्थात् स्वभावगत भिन्नता पर ध्यान देने से ज्ञात होता है कि सोना पीतवर्ण है और चाँदी श्वेतवर्ण। इस प्रकार के स्वभावों से अत्यन्त भिन्नता है। अतः उनका एक पदार्थ होना सिद्ध नहीं होता। इसी प्रकार आत्मा और शरीर के स्वभावगत भेद पर दृष्टिपात करने से प्रतीत होता है कि आत्मा चेतनस्वभाव और शरीर जड़ स्वभाव है। अतः दोनों के स्वभावों में अत्यन्त भेद होने से उनका एक वस्तुत्व घटित नहीं होता। इसलिये उनमें भिन्नत्व ही है।

आत्मा और कर्म में स्वतंत्रता-

और कुन्द कुन्द ने आत्मा के कर्मबद्ध या कर्म संश्लिष्ट होने का निषेध करते हुये कहा है-

जीवे कम्मं बद्धं पुट्ठं चेदि ववहारणयभणिदे।

सुद्धणयस्य दु जीवे अबद्धपुट्ठं हवइ कम्मं ॥

अर्थात् जीव में कर्म बद्धस्पृष्ट है यह व्यवहारनय से कहा गया है किन्तु निश्चय नय से जीव अबद्धस्पृष्ट है।

इस गाथा द्वारा आचार्य कुन्द कुन्द ने निश्चयनय के अवलम्बन द्वारा आत्मा के कर्मबद्ध होने का निषेध कर आत्मा की सत्ता में परद्रव्य की सत्ता के अभाव की ओर ध्यान आकृष्ट किया है।

आत्मा और परद्रव्य के स्वस्वामित्व सम्बन्ध में स्वतन्त्रता-

संसारी जीव में दिखाई देने वाले शरीर के वर्णादि भावों तथा पुद्गल कर्म निमित्तक रागादि भावों के साथ जीव के स्वस्वामि सम्बन्ध का निषेध किया है। आचार्य कुन्दकुन्द इस पर प्रकाश डालते हुये कहते हैं - यद्यपि अरहन्त देव ने जीव में बन्ध पर्याय से अवस्थित कर्म नोकर्म के वर्ण को देखकर आधाराधेय सम्बन्ध के कारण यह जीव का वर्ण है ऐसा उपचार से प्रज्ञापित किया है, तथापि निश्चयनय से विचार करने पर प्रतीत होता है कि जीव नित्य अमूर्त स्वभाव वाला है एवं उपयोग गुण के कारण शेष समस्त द्रव्यों से भिन्न है, अतः उसके कोई वर्ण नहीं है। इसी प्रकार गन्ध, रस, स्पर्श, रूप, देह तथा संस्थान आदि को भी निश्चय द्रष्टा ऋषि व्यवहारनय से जीव का कहते हैं, निश्चयनय से नहीं।

रागादिभाव भी जीव की संसारावस्था में ही व्याप्त होते हैं, मोक्षावस्था उनकी व्याप्ति से रहित होती है। इसलिये उनके साथ भी जीव का तादात्म्य सम्बन्ध नहीं होता। अतः रागादिभाव भी जीव के भाव नहीं हैं, अर्थात् जीव नहीं है।

परद्रव्य के साथ जीव के स्वस्वामि सम्बन्ध का निश्चय नय से अभाव प्रतिपादित करने के लिये कुन्दकुन्द देव ने एक सुन्दर युक्ति दी है। वे कहते हैं ऐसा कौन ज्ञानी होगा जो यह कहे कि यह परद्रव्य मेरा द्रव्य है ? ज्ञानी तो निश्चितरूप से निजात्मा को ही अपना परिग्रह मानता है। वह सोचता है कि यह जड़ परद्रव्य मेरा परिग्रह हो तो उसमें मेरा अभिन्न होने का प्रसंग आयेगा, जिससे मैं भी जड़ ठहरूंगा, किन्तु मैं तो ज्ञाता हूँ। इसलिये जड़ द्रव्य मेरा परिग्रह नहीं है। मेरी अपनी वस्तु तो एकमात्र ज्ञायक भाव वही मेरा स्व है, उसी का मैं स्वामी हूँ। जीव को अपने नियतस्वलक्षण के द्वारा यह निर्णय करना चाहिये कि मेरे भीतर जो यह चैतन्यभाव है वहीं निश्चयनय से मैं हूँ। इसके अतिरिक्त जितने भी भिन्न लक्षण वाले भाव मुझमें दिखाई देते हैं वे मुझसे भिन्न तत्त्व हैं, मैं नहीं हूँ।

आत्मा और परद्रव्य के कर्ता-कर्म सम्बन्ध में स्वतन्त्रता-

द्रव्य का अपना परिणाम कर्म कहलाता है और उसका जन्मदाता द्रव्य उसका कर्ता है जैसा कि कहा गया है-

यः परिणमति स कर्ता यः परिणामो भवेत्तु तत्कर्म। 32

आचार्य कुन्दकुन्द ने कहा है-

जीव के शुभाशुभ भावों के निमित्त से पुद्गल द्रव्य कर्म रूप से परिणमित हो जाता है और पुद्गल कर्मों के निमित्त से जीव राग द्वेष मोह रूप में परिणमित होता है, किन्तु न तो जीव से पुद्गल कर्मों की उत्पत्ति होती है। न पुद्गल कर्मों से जीव राग द्वेष मोह- परिणामों की। पुद्गल द्रव्य से ही पुद्गल उत्पन्न होते हैं और मोह राग द्वेष की उत्पत्ति जीव से होती है। जीव और पुद्गल इन कार्यों में केवल एक-दूसरे के निमित्त बनते हैं।

आत्मा और परद्रव्य के भोक्ताभोग्य सम्बन्ध में स्वतन्त्रता-

स्वभावभेद की अपेक्षा से ही केवली भगवान ने चेतन-अचेतन परद्रव्य के साथ जीव के भोक्ता-भोग्य सम्बन्ध का निषेध किया है। जीव चेतन है पुद्गल अचेतन है चेतन को अचेतन का स्पर्श नहीं हो सकता, तब भोग कैसे सम्भव है ? प्रदेशभेद के कारण एक जीव दूसरे जीव का भी स्पर्श नहीं कर सकता।

इसलिये चेतन के द्वारा चेतन परद्रव्य का भी भोग सम्भव नहीं है।

स्वभाव के साथ ही जीव का तादात्म्य होता है और उसी का भोग सम्भव होता है, जैसा कि कहा गया है-जीवस्य स्वपरिमैरे सह कर्तृकर्मभावो भोक्तृभोग्यभावश्च।

अतः मुक्त जीव अपने स्वभावोत्थ अतीन्द्रिय सुख का भोग करता है तथा संसारी जीव शुभाशुभ कर्म तथा इष्टानिष्ट इन्द्रिय विषयों के निमित्त से होने वाले अपने सुख-दुःखरूप परिणामों का वेदन करता है। इसलिये जीव मौलिक- अभेदावलम्बी निश्चयनयरूप प्रमाणैकदेश से निजस्वभाव का ही भोक्ता है उक्त कथन आचार्य कुन्दकुन्द की निम्नलिखित गाथा से स्पष्ट होता है-

णिच्छयणयस्स एवं आदा अप्पाणमेव हि करेदि।

वेदयति पुण्णो तं चेव जाण अत्ता दु अत्ताणं॥35॥

आत्मा की परद्रव्य के ग्रहण त्याग में स्वतन्त्रता-

आत्मा को परद्रव्य के ग्रहण त्याग का निषेध करते हुये कुन्दकुन्द ने कहा है-

आत्मा आहारक नहीं, क्योंकि आहार पुद्गलमय होने से मूर्त और आत्मा अमूर्त है। जो परद्रव्य है उसे ग्रहण करने या छोड़ने की शक्ति आत्मा में नहीं है, स्वभाव से, न कर्मोदय के प्रमेय से। अतः समस्त परद्रव्यों से भिन्न होने के कारण आत्मा जीव या अजीव किसी भी परद्रव्य को न ग्रहण करता है न त्यागता है।

आत्मा का तादात्म्य स्व परिणाम से होता है, न त्यागता है। और उसी से निवृत्त होता है। अतः अभेदावलम्बी निश्चय दृष्टि में आत्मा स्वपरिणाम के ही ग्राहक और त्याग के रूप में प्रतिबिम्बित होता है। इसके अनुसार आत्मा की जो परद्रव्येच्छारूप परिणाम में प्रवृत्ति और उससे निवृत्ति होती है उन्हें उपचार से परद्रव्य का ग्रहण और त्याग कहा जाता है।

आत्मा की परद्रव्य से निमित्त नैमित्तिक सम्बन्ध में स्वतन्त्रता

पुद्गल कर्मों के निमित्त से जीव रागद्वेष मोह रूप में परिणमित होता है जीव के रागद्वेषमोह परिणाम के निमित्त से पुद्गल द्रव्य कर्म रूप परिणमित होता है। जब इस बाह्य सम्बन्ध पर ध्यान देते हैं। तब जीव और पुद्गल के निमित्त नैमित्तिक सम्बन्ध की सत्यता का बोध होता है।

आत्मा की आधार आधेय के साथ स्वतन्त्रता -

निश्चयदृष्टि का अनुसरण करते हुये अरहन्तदेव ने आत्मा और परद्रव्य में आधाराधेय सम्बन्ध का भी अभाव बतलाया है। स्पष्ट करते हुये आचार्य अमृतचन्द्र ने कहा है-

एक वस्तु में दूसरी वस्तु की सत्ता नहीं है, क्योंकि दोनों के प्रदेश परस्पर भिन्न हैं। इसलिये उनकी एक सत्ता की उपपत्ति नहीं होती। एक सत्तात्मक न होने से उनमें आधार-आधेय संबंध भी नहीं है। वस्तु स्वरूप में ही स्थित होती है। अतः स्वरूप के ही साथ उसका आधाराधेय सम्बन्ध घटित होता है।

पुद्गल कर्म निमित्तक रागादिभावों के साथ आत्मा के आधार आधेय सम्बन्ध का निषेध करते हुये आचार्य कुन्दकुन्द ने कहा है-

चैतन्य परिणामभूत दर्शनज्ञानरूप उपयोग, उपयोग में ही स्थित क्रोधादि भावों में नहीं और क्रोध की सत्ता क्रोध में ही है। उपयोग में नहीं। आठ प्रकार के ज्ञानावरणादि कर्मों में तथा शरीरादि नो कर्मों में भी उपयोग स्थिति नहीं है और उपयोग में इन कर्म नोकर्म का अस्तित्व नहीं है। कारण यह है कि इनके स्वरूप अत्यन्त विपरीत हैं अतः इनमें परमार्थतः आधाराधेय सम्बन्ध नहीं है।

इस प्रकार परमार्थ से एक द्रव्य-दूसरे द्रव्य से स्वतन्त्र है, किन्तु व्यवहार से विचार करने पर एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य के साथ नहीं है। अतः पूर्वोक्त समस्त विवेचन नय दृष्टि से ही समझना चाहिये सर्वथा एकान्त से नहीं।

हमारे गौरव

राष्ट्रकूट वंशी तृतीय इन्द्र

इन्द्र तृतीय (914-922 ई.)- कृष्ण द्वितीय को अपनी प्रायः वृद्धावस्था में ही राज्य प्राप्त हुआ था और उसके पुत्र जंगतुंग की मृत्यु उसके जीवनकाल में ही हो गयी थी। अतएव कृष्ण के उपरांत उसका पौत्र इन्द्र तृतीय नित्यवर्ष रट्टकन्दर्प राजा हुआ। उसने मालवा के उपेन्द्र परमार को पराजित करके अपने अधीन किया और बेंगि के चालुक्यों को भी अपनी अधीनता स्वीकार करने पर विवश किया। कन्नौज के महीपाल को भी उसने युद्ध में पराजित कर दिया बताया जाता है उसके बाद दुर्धर सेनापति नरसिंह और श्री विजय दोनों ही जैनधर्म के अनुयायी थे। श्री विजय का विरूद्ध, अरविनगोज था, और वह श्रेष्ठ कवि भी था-शस्त्र और शास्त्र दोनों ही विद्याओं में अद्वितीय समझा जाता था। जीवन के अंतिम भाग में संसार का परित्याग करके वह जैनमुनि हो गया था। राष्ट्रकूट इन्द्र तृतीय इतना भारी दानी था कि 914 ई. में कुरन्धक नामक स्थान में जब उसका पट्टबन्धोत्सव मनाया गया तो कहा जाता है कि उसने विविध धर्म गुरुओं धर्मायतनों और याचकों को चार सौ ग्राम दान में दिये थे। उसके वजीरखेड़ा ताम्रशासन में लिखा है कि उसनी जननी लक्ष्मी देवी चेदिनरेश कोक्कल की पौत्री और शंकरगण की पुत्री तथा चालुक्य सिन्दुक की देहिनी थी, और पिता कृष्णराज का महापराक्रमी हिमांशु-वंश-तिलक पुत्र राजकुमार जंगतुंग था जिसने अनेक शत्रुओं का दर्पदलन किया था। लेख में स्वयं इन्द्र की प्रशस्ति और उसके अनेक विरुद्धों को देने के उपरांत लिखा है कि उसने राजधानी मान्यखेट में विराजते हुये अपने पट्टबन्धोत्सव (राज्याभिषेक) के निर्विघ्न सम्पादन से आनिन्दित होते हुये अपने राष्ट्रपति, विषयपति, ग्रामकूट भुक्तक, नियुक्तक, अधिकारिक, महत्तर आदि विविध प्रशासन अधिकारियों को सम्बोधन करके कहा था कि वे उसका आदेश सुने और सर्वत्र प्रचारित कर दें कि सम्राट ने उपर्युक्त उपलक्ष्य में अपने माता पिता एवं स्वयं अपने पुण्य और यश की अभिवृद्धि के लिये पूर्व पुरुषों द्वारा देवभोग एवं अग्रहार निमित्त जो दान आदि पूर्वकाल में दिये गये थे उनकी वह पुष्टि करता है और स्वयं बीस लाख द्रव्य (मुद्रायें) तथा पचास अधिक ग्रामों का षष्ठांश (राज्यकर) उसी हेतु अर्पित करता है। इसी प्रसंग में शक 836 (सन् 914 ई.) की फाल्गुन शुक्ला सप्तमी शुक्रवार को उसने नित्य की बलिचरू-सत्र तपोवन के सन्तर्पणार्थ, देवगुरु की पूजार्थ तथा खण्ड-स्फुटित सम्पादनार्थ चन्दनपुरी पत्तन में स्थित बसदि (जिनमंदिर एवं संस्थान) के लिये दो ग्राम द्रविड़ संघवीगण चीत्रायान्वय के वर्धमान गुरु के शिष्य लोकभद्र मुनि को समर्पित किये थे। उसी के वजीरखेड़ा से प्राप्त दूसरे ताम्रशासन के अनुसार इन्हीं गुरु को वडनगरपत्तन की बसदि के लिये छह ग्राम प्रदान किये थे। लगता है कि यह संस्था वाटनगर की या वाट ग्रामपुर की वही प्राचीन चन्द्रप्रभ-बसदि थी जिसके संस्थापक और प्रथम अधिष्ठाता धवलाकार वीरसेन स्वामी थे। इन दोनों दान प्रशस्तियों के रचयिता कोई कवि राजशेखर थे। इसमें सन्देह नहीं है कि अपने पूर्वजों की भाँति राष्ट्रकूट इन्द्र तृतीय भी जिनेन्द्र का भक्त था। अपने अभीष्ट की प्राप्ति की इच्छा से उसने भगवान शान्तिनाथ का एक पाषाण निर्मित सुन्दर पाद पीठ बनवाया था।

स्थिरता और अनुशासन के प्रतीक भगवान बाहुबली

* डॉ. सुनील संचय जैन (ललितपुर) *

1037 साल पुरानी परंपरा पूरे गौरव के साथ हम सब के समक्ष श्रवणबेलगोला में शुरू हो गई है। लाखों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में नई इमारत यहां लिखी जा रही है। कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में स्थित विंध्यगिरि पहाड़ी पर भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक का भव्य और ऐतिहासिक आयोजन का शुभारंभ देश के राष्ट्रपति महामहिम रामनाथ जी कोविंद के कर कमलों से हुआ है। भारत गणराज्य के उपराष्ट्रपति महामहिम वैकैया नायडू ने भी 10 फरवरी को श्रवणबेलगोला पहुँचकर राज्याभिषेक किया। यह आयोजन हर 12 साल पर होता है। इस मौके पर 1037 साल पुरानी इस विशाल मूर्ति का दूध, दही, घी, केसर, जल समेत कई पवित्र वस्तुओं से अभिषेक किया जाता है। 6 माह तक महामस्तकाभिषेक चलता रहा। पिछला अभिषेक 2006 में हुआ था। जिसका शुभारंभ तत्कालीन राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी ने किया था। पूरा आयोजन पूज्य कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी करा रहे हैं। ये उनके नेतृत्व में लगातार चौथा महामस्तकाभिषेक है। वहीं परम पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी भी तीसरी बार अपना मङ्गल सान्निध्य प्रदान कर रहे हैं।

इस मूर्ति का सौन्दर्य अपने आप में इतना विशेष है कि वर्तमान में उपलब्ध सभी मूर्तियों में यह अनुपमेय ही है। शिल्पी ने मूर्ति को सर्वांगीण सुन्दर बनाने में कोई कमी नहीं रखी है। गोम्मटेश्वर द्वार के बाईं तरफ एक पाषाण पर एक शिलालेख है जो कि शक 1102 का है। उसमें कन्नड़कवि पं. वोप्पण ने मूर्ति की महिमा को प्रगट करते हुए एक काव्य कहा है जिसका अर्थ यह है -

जब मूर्ति आकर में बहुत ऊँची और बड़ी होती है तब उसमें प्रायः सौन्दर्य का अभाव रहता है। यदि मूर्ति बड़ी भी हुई और उसमें सौन्दर्य भी रहा तो भी उसमें दैवी चमत्कार का होना असम्भव-सा है किन्तु आश्चर्य है कि यहाँ इस गोम्मटेश्वर की मूर्ति में तीनों का मेल दिख रहा है। अर्थात् यह मूर्ति 58 फूट ऊँची होने से बहुत बड़ी है, सौन्दर्य में बेजोड़ है और दैवी चमत्कार को प्रकट करने वाली है। अतः यह प्रतिबिम्ब सम्पूर्ण विश्व के द्वारा पूजित होने से अपूर्व ही है।

गोमटेश्वर के दर्शन से शांति और उल्लास की अनुभूति होती है :

श्रवणबेलगोला हमें अपने खोए हुए अस्तित्व के पास ले जाता है। भगवान बाहुबली की प्रतिमा देखकर आत्मा मंत्रमुग्ध हो जाती है और इसके आगे सिर श्रद्धा से झुक जाता है। यहाँ के आध्यात्मिक वातावरण से मन जुड़ता जाता है, शांति का आत्मिक आनंद यहां जो मिलता है वह शब्दों में नहीं कहा जा सकता। यहां आये दर्शनार्थियों को इस प्रतिमा के दर्शन मात्र से शांति और उल्लास की अनुभूति होती है। स्थिरता और अनुशासन के प्रतीक गोमटेश्वर भगवान बाहुबली आज के युग में अपनी शांति, त्याग और अहिंसा के संदेश के साथ और भी प्रासंगिक होते जा रहे हैं। श्रवणबेलगोला आने का मतलब है अपने स्वर्णिम इतिहास से जुड़ना महामस्तकाभिषेक के दौरान श्रवणबेलगोला चमक उठता है। श्रवणबेलगोला में हजारों-लाखों श्रद्धालुओं का विशाल

सैलाव अपने आप में देखने योग्य है। परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की गोमटेश अष्टक में गोमटेश्वर की छवि दर्शाती यह पंक्तियाँ मनोहारी हैं- नील कमल के दल-सम जिन के युगल-सुलोचन विकसित हैं, शशि-सम मनहर सुखकर जिनका मुख-मण्डल मृदु प्रमुदित है। चम्पक की छवि शोभा जिनकी नम्र नासिका ने जीती, गोमटेश जिन-पाद-पद्म की पराग नित मम मति पीती ॥

चंद्रगुप्त मौर्य और उनके गुरु भद्रबाहु:

इस क्षेत्र के ज्ञात इतिहास से लेकर श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु से लेकर आगे तक अनेक महान आचार्य हो चुके हैं। पूरे विश्व में एक ही पत्थर से निर्मित इस विशालकाय मूर्ति का निर्माण 983 ई. में गंग राजा के एक मंत्री चामुण्डराय ने करवाया था। श्रवणबेलगोला में जहां बाहुबली की विश्व प्रसिद्ध प्रतिमा जैनों की आस्था का केंद्र है, वहीं चंद्रगिरि पर्वत पर मौर्य वंश के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य और उनके गुरु भद्रबाहु की समाधि और गुफा भी है। यहीं पर इन लोगों ने अपने जीवन का आखिरी समय भगवान को याद करते हुए बिताया था।

चंद्रगुप्त ने अपना साम्राज्य पुत्र बिंदुसार को सौंप दिया और जैन मुनि भद्रबाहु के साथ श्रवणबेलगोला आ गए। यहां आकर तपस्या करते हुए सल्लेखना पूर्वक प्राण त्याग दिया।

तीर्थंकर नहीं होते हुए भी बाहुबली भगवान की विशाल मूर्तियों की स्थापना की गई।

कहा जाता है कि चंद्रगिरि पर्वत से चामुण्डराय ने बाण छोड़ा था जो कि सामने के पर्वत के शिखर से टकराया था। वहीं शिलाखंड 1000 वर्षों से भगवान् बाहुबली के प्रतिबिंब रूप से असंख्य प्राणियों को आत्मशांति का अनुभव करा रहा है। चामुण्डराय ने अपनी मां की इच्छापूर्ति के लिए विंध्यगिरि पर इस विशाल प्रतिमा का निर्माण कराया था। विंध्यगिरि के सामने स्थित चंद्रगिरि पर्वत का प्राचीन नाम कटवप्र है।

अहिंसक युद्ध के सूत्रधार बाहुबली:

बाहुबली भगवान के प्रति आम जनता में अकाट्य श्रद्धा और विश्वास है। बाहुबली का व्यक्तित्व कुछ ऐसा ही था, जिन्होंने सर्वप्रथम अहिंसा युद्ध का समर्थन किया और अहिंसा युद्ध करने को तत्पर हो गए। कहा जाता है कि साम्राज्य को लेकर और आपसी मतभेद के चलते भरत और बाहुबली के बीच कुल तीन प्रतियोगितायें हुई थी, पहला नयन-युद्ध, जल-युद्ध और मल्ल युद्ध। लेकिन बाहुबली ने अपने बड़े भाई भरत से तीनों युद्ध जीत लिये थे। अहिंसा युद्ध में अपने बड़े भाई भरत से विजय होने के बाद सब कुछ छोड़ संन्यास मार्ग को अपना कर ध्यानस्थ हो गए। एक वर्ष तक कठोर साधना की।

जैन धर्म में पहले मोक्षगामी:

कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में स्थित भगवान बाहुबली की विशाल प्रतिमा भारत के अद्भुत स्मारकों में शुमार है। श्रवणबेलगोला में मुख्य आकर्षण का केन्द्र बाहुबली की विशाल प्रतिमा ही है। धार्मिक रूप से यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि जैनियों का मानना है कि मोक्ष (जीवन-मरण के चक्र से छुटकारा) की प्राप्ति सर्वप्रथम बाहुबली को हुई थी। बाहुबली की यह प्रतिमा दसवीं शताब्दी की है पर आज भी जिस शान से पर्वत शिखर पर विराजमान है, वह दुनिया

भर से आने वाले श्रद्धालुओं और सैलानियों को चकित करती है।

ऐतिहासिक हैं चंद्रगिरि और विंध्यगिरि पर्वत

इस श्रवणबेलगोल तीर्थ में आमने-सामने दो पर्वत हैं। जिसे कन्नड़ भाषा में एक पर्वत को चिक्कवेट्ट दूसरे को दोदुबेट्ट कहते हैं। हिन्दी में इसे छोटा पर्वत और बड़ा पर्वत कहते हैं। यही पर्वत चन्द्रगिरि और विंध्यगिरि के नाम से वर्तमान में प्रसिद्धि को प्राप्त हैं। सम्राट चंद्रगुप्त से सम्बन्ध रखने के कारण ही इस पर्वत का नाम चंद्रगिरि पड़ गया है। इसका वर्णन यहाँ के अनेक शिलालेखों में उत्कीर्ण है। यहाँ पर सल्लेखना व्रत लेकर समाधिमरण करने वाले त्यागियों की संख्या सैकड़ों-हजारों में बतलाई जाती है। 555 ऐसे शिलालेख मिलते हैं जिसमें इन सभी तथ्यों का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त पता नहीं कितने शिलालेख नष्ट हो गये हैं। इस तीर्थ के आस-पास 30-40 मील की दूरी तक प्राचीन कन्नड़ भाषा के सैकड़ों शिलालेख बिखरे पड़े हैं। जिनमें अतीत युग का जैन इतिहास उत्कीर्ण पड़ा है। मैसूर विश्वविद्यालय ने यहाँ के प्रमुख शिलालेखों का संकलन भी किया है।

विंध्यगिरि पर्वत पर स्थित गोमटेश्वर बाहुबली की यह मूर्ति 30 किलोमीटर दूर से भी दिखाई देती है। इस प्रतिमा के बारे में मान्यता है कि इस मूर्ति में शक्ति, साधुत्व, बल तथा उदारवादी भावनाओं का अद्भुत प्रदर्शन होता है। यह मूर्ति मध्यकालीन कर्नाटक की शिल्पकला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

हर 12 वर्ष के अंतराल में महामस्तकाभिषेक क्यों ?

विश्व की सबसे बड़ी एक शिला से निर्मित बाहुबली की ध्यानस्थ दिगम्बर प्रतिमा का 12 वर्ष के अंतराल पर ही महामस्तकाभिषेक किया जाता है, जो जैन समुदाय का महाकुंभ माना जाता है। कहा जाता है कि बाहुबली ने अपने बड़े भाई भरतेश्वर के साथ युद्ध करने के बाद विराग भाव से 12 वर्ष की तपस्या की थी। श्रवणबेलगोला की विंध्यगिरि पहाड़ी पर स्थित बाहुबली की प्रतिमा को गढ़ने के लिए 12 वर्षों का समय लगा था। गंग वंश के प्रधानमंत्री चामुण्डराय ने अपनी मां की इच्छा पूर्ति के लिए इस प्रतिमा की स्थापना की थी। इन 12 अंकों को ध्यान में रखते हुए बाहुबली का प्रति 12 वर्ष के अंतराल में महामस्तकाभिषेक किया जाता है।

विश्व भर में आश्चर्य और श्रद्धा का केन्द्र रहे, दक्षिण में बिराजे गोमटेश बाहुबली एकमात्र ऐसे भगवान हैं, जो संपूर्ण दुनिया में जैन-धर्म के गौरव को बढ़ाते हैं। शिल्पकला में इनके जैसा कोई नहीं है। चेहरे का अद्वितीय सौन्दर्य और अतिशय कद की वजह से इनकी प्रसिद्धि बहुत ज्यादा है। खुली पहाड़ी पर उत्तर मुखी, खुले में खड़े होने के बावजूद, किसी भी पंछी का शरीर पर ना बैठना भी गोमटेश बाहुबली को अलग प्रसिद्धि दिलाता है। इस आयोजन में कई सारे जैनाचार्यों, एवं मुनियों की उपस्थिति भी कार्यक्रम की सफलता को सुनिश्चित किया है।

आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज एवं पूज्य स्वस्ति श्री चारूकीर्ति जी स्वामी के अथक प्रयासों से यह आयोजन सफलतम, सफल होता हुआ अभूतपूर्व ऊंचाईयों को प्राप्त हुआ, यह सुनिश्चित है।

सायेटिका का रोग कारण व नियंत्रण

✽ जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरीनगर) ✽

सायेटिका एक नर्व है जो एक बड़ी मोटी नर्व है जो पैर की एड़ी के पिछले भाग से होकर कमर तक जाकर मेरूदंड से होती हुई मस्तिष्क तक जाती है। नर्व (नस) में दो शक्तियाँ होती हैं एक प्रवाहकत्व (Conductivity) तथा उसे उत्तेजित होने योग्य शक्ति, किसी बाहर की उत्तेजना मिलने पर उसे ग्रहण करना और उसका जबाब देने की शक्ति होती है। इस सायेटिका नर्व में किसी कारण वश प्रदाह हो जाने को सायेटिका रोग कहते हैं। सायेटिका नर्व मानव शरीर में सबसे लम्बी और व्यापक एकल नर्व है। इसका दर्द कमर के निछले भाग से आरम्भ होता है जो जाँघ के पिछले भाग से होता हुआ घुटने से एड़ी तक फैल जाता है। कभी कभी दर्द जाँघ के सामने तरफ भी होता है क्योंकि सायेटिका नर्व की शाखायें जाँघ के सामने तरफ फैली रहती हैं। सायेटिका का दर्द असहनीय होता है, जो सायेटिका नर्व को नुकसान का परिणाम होता है जिसके साथ नर्व अति के अन्य लक्षण दर्द के साथ भी उत्पन्न हो सकते हैं। दर्द के आक्रमण बाद अंग सुन्न होना, बैठने के बाद उठने में चलने में दर्द, पैर में खींचन होना, सुई गढ़ने जैसा दर्द, पैरों में झुनझुनाहट। रोग बहुत पुराना हो जाता है तो पैर और जांघ की पेशी सूख जाती हैं कभी कभी पक्षाघात भी हो जाता है।

सायेटिका रोग शरीर के ऊपर अधिक भार पड़ना, चोट लगना, मिचकोड आना, बहुत ज्यादा सर्दी लग जाना, गीली या सीलन जगह में रहना, कब्ज बनी रहना, वात गठिया रोग, वजन बढ़ना, कमर के आस पास अंगों में ट्यूमर होना, प्रसव के समय असावधानी होना, के शेरूका की बीमारी, बैठना व खड़ा गलत ढंग से होना, ज्यादा आराम, करना, हड्डियाँ घिस जाना, मुलायम गद्दे पर सोना, ऊँची हील की चप्पल पहिनना जीवन शैली में बदलाव होना, मानसिक तनाव, लगातार मोबाइल का उपयोग व टी.वी. देखना, बहुत दिनों तक मलेरिया बुखार का होना व नियंत्रण हेतु कुनीन दवा का अधिक उपयोग इसके कारण बनने में सहायक हैं।

सायेटिका दर्द में गर्म पानी में सिकाई से अस्थि रूप से आराम मिलता है, रोग वाली जगह को रूई या फ्लानैल से हमेशा बांध कर रखना बेस्टर्न टॉयलेट का उपयोग करना आदि। इसके अतिरिक्त योगासन, सेतु बंध आसन, गुजंग आसन, प्राणायाम कपाल भारती, व्यायाम आदि नियंत्रण में सहायक हैं। अधिक परेशानी व कष्ट होने पर सभी चिकित्सा पद्धति से आराम मिल जाता है। योग्य प्रशिक्षक व चिकित्सक के देखरेख में इलाज करवाना चाहिये।

रोग के आक्रमण के पूर्व सावधानी रखने से बचा जा सकता है जिसमें कुर्सी पर बैठने पर पैरों और तखनों के बीच 90 डिग्री को कोण, बसबटी पर जमें पैरों व तलवों से शरीर का 40% भार कम पड़ जाता है। खड़े होने पर एक दम सीधे, कंधे बराबरी की स्थिति, घुटने एक दूसरे की ओर मुंह किये हुए सिर और रीढ़ की हड्डी सीधी रखना, सीधी गर्दन सायेटिका नर्व के जोड़ों को संतुलित रखनी है। ऊँची हील की चप्पल पहिनने से अधिकांश शरीर का वजन एड़ी पर पड़ते हैं व पैरों के अगले हिस्से पर कृत्रिम दबाव डालते हैं व पेट को आगे खींचते हैं और पुठों को पीछे जो रीढ़ की हड्डी पर भार का संतुलित करता है। नियत समय पर भोजन, सोना, उठना, सोने के बिस्तर का सही चुनाव, वजन न बढ़ने देना आदि कारणों को दूर करके सुखमय जीवन पा सकते हैं।



हास्य तरंग

1. आपरेशन से पहिले बेहोशी का इंजेक्शन लगाने पर डॉक्टर- महिला रोगी से पूछते हैं-आपकी उम्र 27 वर्ष डॉक्टर आप सही उम्र बता रही हैं क्योंकि उम्र के हिसाब से बेहोशी की दवा की मात्रा तय होती है- महिला जी 34 वर्ष डॉक्टर देख लीजिये दवाई की कम ज्यादा मात्रा से रोगी ऑपरेशन के दौरान ही होश में आ जाते हैं या कोमा में चले जाते हैं एवं कभी कभी किडनी भी फैल हो सकती है। महिला एक दम से चीखते हुये बोली 50 वर्ष अब चाहे ऑपरेशन थ्रेटर से मेरी लाश ही क्यों न जायें।
2. पति-रेडियों सुन रहा था। पत्नी-क्या सुन रहे हो। पति- पी.एम. मोदी जी के मन की बात ! पत्नी-मेरी भी तो मन की कभी सुन किया करो। पति -जो तुम कहती है उसे मन की बात नहीं मन की भड़ास कहते हैं।
3. नेता जी चुनाव लड़ने के लिये आवेदन फार्म भर रहे थे। फार्म में कालम था क्या तुम किसी अपराध में गिरफ्तार हुये हो ? उन्होंने लिखा-नहीं, उसके बाद कालम में लिखा था-क्यों ? नेताजी ने लिखा- ले देकर मामला सुलझा लेने से पकड़ा नहीं गया।
4. भावित-मम्मी आप कितनी सुन्दर और स्मार्ट हो, पापा तो टकले, बूढ़े दिखते हैं। मम्मी ने खुश होकर दस रुपये दिये। भावित ने मुँह बनाकर कहा पर पापा तो बीस रुपये देते हैं।
5. स्कूल टीचर ने भावित से पूछा-मैं सुन्दर हूँ कौन सा काल है। भावित तपाक से बोला भूतकाल।

जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरीनगर इन्दौर)

भव्य वेदी एवं शिखर शिलान्यास
समारोह

इन्दौर-श्री दिगम्बर जैन मंदिर खांतीवाला टैंक में मुनि श्री प्रशान्त सागर महाराज जी के संसंध सान्निध्य में दिनांक 21 फरवरी 2019 को मंदिर जी का भव्य शिखर एवं वेदी शिलान्यास कार्यक्रम ब्र. पंडित श्री रतनलाल जी, ब्र अनिल भैया, ब्र अभय भैया के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

हथकरघा कार्यक्रम सम्पन्न

सागर- आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के संसंध सान्निध्य में सागर केन्द्रिय जेल द्वारा हथकरघा कार्यक्रम दिनांक 16,17 फरवरी 2019 को सम्पन्न हुआ। जिसमें देश के विभिन्न हस्तियों ने भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया। जिसका सफल संचालन ब्र. रेखा दीदी (पूर्व डी.एस.पी) ने किया।

उच्च शिक्षा हेतु सम्पर्क करें

जो विद्यार्थी जैन दर्शन में P.H.D और D Lit कर रहे हैं या प्राकृत कोर्स पढ़ना चाहते हैं वह (श्रुत सिद्धान्त शोधपीठ) श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर में संपर्क करें ! ऐसे छात्रों को साहित्य आदि की व्यवस्था है।

सम्पर्क करें : ब्र. जिनेश मलैया इन्दौर मो. 8989505108, पं. सुरेश जैन मारौरा इन्दौर मो. 6260964818, वर्तमान में ब्र. समता दीदी इन्दौर मो. 8989845294 एवं श्रीमति अल्पना सुबोध जैन इन्दौर मो. 8819052830

श्रुत सिद्धान्त शोध पीठ इन्दौर से P.H.D कर रहे हैं। तथा 10 विद्यार्थी प्राकृत कोर्स श्रवणबेलगोला से कर रहे हैं।

बाल कहानी

ठगी चार लाख की

गुना शहर में केन्ट के पास एक शहीद पुरा है उस शहीद पुरा में एक फूलचंद कुशवाह नाम का एक व्यक्ति रहता था। उसकी पत्नी का नाम कलीबाई था। कलीबाई बहुत समझदार और श्यानी थी कलीबाई पढ़ी-लिखी तो थी परंतु मात्र ग्यारवीं तक पढ़ी थी। कलीबाई हमेशा लखपती बनने का सपना देखती थी। कलीबाई के मोहल्ले में ही रूकसाना नाम की एक महिला रहती थी। रूकसाना ठग विद्या में बहुत निपुण थी वह मोहल्ले की कई महिलाओं को अपने चंगुल में फसायें हुई थी रूकसाना की बातें सुनकर सब उसे जादू वाली बाई कहते थे। वह सबको कोई न कोई प्रलोभन अवश्य देती थी। और कई लोगों को डरबा भी देती थी। वह कहती थी अगर तुमने समय पर पूजा नहीं कराई तो कुछ भी हो सकता है। कलीबाई को रूकसाना ने कहा था हम तुम्हें तीन साल में करोड़पति बना देंगे। बस तुम्हें कुछ पूजा करानी पड़ेगी। रूकसाना के वचन जाल में उलझ कर कली ने हर-समय कुछ न कुछ रुपये देना शुरू कर दिया। रूकसाना एक पेनडुलम चमकता हुआ उसे दे जाती थी। और कहती थी ये पेनडुलम एक दिन सोने के बन जायेंगे इसमें लगा काँच हीरा बन जायेंगा। कलीबाई तीन साल में चार लाख रुपये की रकम रूकसाना को भेंट दे दी। तीन साल के बाद न तो कोई तमगा (पेनडुलम) सोने का बना और न कोई काँच हीरे का। कलीबाई ने जब अपने पति फूलचन्द को यह बात बताई तब फूलचन्द ने पूरी बात सुनकर यह निष्कर्ष निकाल दिया की कलीबाई ने चार लाख रुपये बर्बाद कर दिये। और अपने ठगी की फरियाद कलेक्टर तक ले गया। कई लोगों ने फूलचंद का साथ दिया और कई महिलाओं ने रूकसाना से ठगने की बात फूलचंद के साथ कलेक्टर को बताई। ओर कलेक्टर राजेश जैन ने सबकी कथा-व्यथा सुनकर रूकसाना को सजा दिलाने का आश्वासन दिया।



❖ छिपकली दौड़

खिलाड़ियों की संख्या : 15-20

खेल वर्ग : विभिन्न प्रकार की दौड़

खेल विधि : दोनों हथेलियों तथा पैरों की ऊंगलियों के बल पर छिपकली की तरह धरती के बहुत निकट लेटना इसी स्थिति में उछल-उछल कर क्रमशः आगे बढ़ते हुए निर्धारित स्थान तक जाना।

❖ दंड गोल

खिलाड़ियों की संख्या: 15-20

खेल वर्ग : विभिन्न प्रकार की दौड़

खेल विधि : संख्या के दो दल, दोनों की अलग-अलग पहचान रहेगी। मैदान के दोनों छोरों पर एक मीटर व्यास का एक छोटा गोला बनाकर उसमें एक ईंट रखेंगे। शिक्षक बीच में दंड उछालेगा, इसे झपटकर अपने साथियों को देते हुए विपक्षी दल के गोले में रखी ईंट को स्पर्श करना है। ऐसा करने पर एक अंक मिलेगा। निर्धारित समय में अधिक अंक बनाने वाला विजयी होगा।

❖ मरखनी गाय

खिलाड़ियों की संख्या : 15-20

खेल वर्ग : स्पर्श का खेल

खेल विधि : एक स्वयं-सेवक अपने हाथों से पीछे की ओर सिर को पकड़ेगा अब वह दोड़कर अपनी कोहनियों (मरखनी गाय के सींग) से सबको छूकर खेल से बाहर करेगा।

संस्कार खेल

शारीरिक विकास के कुछ खेल

संस्कार गीत

संस्कार गढ़ेंगे



संस्कार गढ़ेंगे हम नित आगे बढ़ेंगे हम
जीवन में बुराई से हर पल ही लड़ेंगे हम

1.

हम रोज किताबें पढ़ते
संस्कार नहीं आते हैं
गुरुदेव चरण पाकर
संस्कार भी आते हैं
संस्कार सहित शिक्षा
लेकर ही पढ़ेंगे हम

2.

संस्कार नहीं जिसके
वो शिक्षा कैसी हो
संस्कार से अंकुर से
जीवन भी सुभाषित हो
फलवान वृक्ष जैसे फूलेंगे हम

3.

मुक्ति का मारग तो
संस्कार से मिलता है
मधु संचय जैसा ही,
जीवन मधुरिम बनता है
पीढ़ी दर पीढ़ी ही
संस्कार गढ़ेंगे हम

बाल कविता

जज्बा



जज्वे से जीता जाये जग
जज्वे से खुल जाता मग
जज्वा ही पहचान बनाता
जज्वा जीना हमें सिखाता
जज्वा जिसका हो बुलंद
वहीं काटता जग के बन्ध
हारी पारी जज्वा जीते
जज्वा न सोचे जो दिन बीते
जज्वा में ही सारा कमाल
जज्वा करता ऊँचा भाल
जज्वा जीते सभी लड़ाई
जज्वा करता सभी भलाई
जज्वा से तुम ऊँचे उठना
जीत जीत के पन्ना लिखना
जज्वो की तारीफ करे जग।

समाचार

मुनि दीक्षा सम्पन्न

किशनगंज (बिहार)- मुनि श्री पुण्य सागर जी महाराज के करकमलों से 6 से 11 फरवरी 2019 पंचकल्याणक के अवसर पर ज्ञानकल्याण दिनांक 10 फरवरी 2019 को श्री राजकुमार दिलहरा पश्चिम बंगाल को मुनि दीक्षा दी गई। जिनका नाम **मुनि श्री उत्सव सागर जी** रखा गया।

आगामी दीक्षाये

बीनाबारह-आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बीनाबारह में दिनांक 04 से 10 मार्च 2019 को पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव के अवसर पर ब्र. बहनों को 50 से अधिक आर्थिका दीक्षाये दी जावेगी।

बांसवाड़ा (राज.)- गणिनी आर्थिका श्री सुभूषणमति माताजी के करकमलों से 2 मार्च 2019 को 2 ब्रह्मचारी बहनों को श्री दिगम्बर जैन मंदिर कामर्शियल कॉलोनी बांसवाड़ा ने दीक्षाये दी जावेगी।

धरियावत (राज.)- श्री दिगम्बर जैन मंदिर नंदनवन धरियावत राजस्थान में दिनांक 8 मार्च 2019 को आर्थिका श्री प्रशान्तमति माता जी के करकमलों से ब्र. हीना दीदी गद्दी, ब्र. सारिका दीदी अर्थुना, ब्र. शैला दीदी कर्नाटक, ब्र. दीप्ती दीदी महाराष्ट्र को आर्थिका दीक्षा दी जावेगी।

समाधि

धर्मस्थल-आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री निष्प्रह सागर जी महाराज का समाधिमरण दिनांक 19 फरवरी 2019 को प्रातः 7.05 बजे श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र धर्मस्थल में हुआ।

रीवा- आचार्य श्री अनेकान्त सागर महाराज जी के सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री अनन्त सागर महाराज का समाधिमरण रीवा में 10 फरवरी 2019 को हुआ।

अरहन्तगिरी- आचार्य श्री सुविधी सागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनकी ही शिष्या आर्थिका श्री सुप्रणवमति माता जी का समाधिमरण 31 जनवरी 2019 दोपहर 3 बजे हुआ।

रांची (झारखंड)- आचार्य श्री विराग सागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री विश्वदेह सागर महाराज का समाधिमरण रांची झारखंड में दिनांक 31 जनवरी 2019 को दोपहर 12.45 बजे हुआ।

पंचकल्याणक सम्पन्न

जबलपुर- श्री दिगम्बर जैन वर्णी गुरुकुल जबलपुर में दिनांक 17 से 23 फरवरी 2019 तक पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव आचार्य विद्यासागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री योगसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में तथा ब्र. विनय भैया के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें दिनांक 24 फरवरी को भगवान श्री मुनि सुव्रतनाथ जी का महामस्तकाभिषेक कलशारोहण, ध्वजारोहण का कार्य सम्पन्न हुआ। दिनांक 23 एवं 24 फरवरी को ब्रह्मचारी सम्मिलन हुआ। जिसमें लगभग 60 ब्रह्मचारी भाईयों ने भाग लिया।

प्राकृत शिविर सम्पन्न

इन्दौर - श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इन्दौर में दिनांक 17 फरवरी से 24 फरवरी 2019 तक प्राकृत शिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमें शिक्षण का कार्य ब्र. समता दीदी ने कराया।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये माह : मार्च 2019

01. जीवन में ज्ञान का प्रयोजन मात्र क्षयोपशम में वृद्धि नहीं वरन्..... में भी वृद्धि हो ?
02. ज्ञान रूपी दीपक में रूपी चिमनी आवश्यक है अन्यथा वह राग-द्वेष की हवा से बुझ जायेगा ?
03. दीपक लेकर चलने पर भी.....तो अन्धकार में ही चलते हैं। जब चरण भी प्रकाशित होंगे तब केवलज्ञान प्रगट होगा ?
04. स्वस्थ ज्ञान का नाम है और अस्वस्थ ज्ञान का नाम विज्ञान ?
05. ज्ञान स्वयं में सुखद है, किन्तु जब वह मद के रूप में विकृत हो जाता है तब..... बन जाता है ?
06. ज्ञान की शोभा विनय, नम्रता से है वस्तुतः विनय में ही..... सफलीभूत होता है ?
07. दुनियाँ का ज्ञान प्राप्त हो गया पर उससे पृथक् होने की कला नहीं आई तो वह..... किस काम की ?
08. बुद्धि बढ़ने के साथ-साथ..... भी बढ़नी चाहिये। बुद्धि के बढ़ने पर भी विशुद्धि का नहीं होना आश्चर्य की बात है ?
09. बुद्धि कच्चे माल की तरह है और विवेक पक्के माल की तरह बुद्धि की परिपक्व दशा का नाम ही है ?
10. शब्द सो बोध नहीं और बोध सो शोध नहीं। शब्दों के पौधों पर बोध के फूल खिलते हैं और बोध के फूलों से..... के फल मिलते हैं ?
11. बोध की चरम सीमा होने पर शोध हुआ करता है और वह शोध..... मूलक होता है ?
12. पाचन क्षमता के अभाव में जिस तरह अकेले घी पीने मात्र से कोई पहलवान नहीं बनता, ठीक इसी तरह..... ग्रन्थों के स्वाध्याय मात्र से कोई ज्ञानी नहीं बनता ?
13. ज्ञानी का मद अज्ञानियों के लिये का कारण बनता है ?
14. ज्ञानी भोक्ता-पुरुष भोग-विलास का दास नहीं होता बल्कि उदास होकर..... की ओर बढ़ता है ?
15. ज्ञानी का हमेशा (चौबीसों घंटे)..... चलता रहता है क्योंकि उसकी प्रत्येक क्रिया सावधानी पूर्वक होती है ?
16. अज्ञानी को कषाय करने में आनन्द आता है और ज्ञानी को कषाय..... में आनन्द आता है ?
17. क्रोध को जानना और उसे समता के साथ देखते रहना ही एक मात्र का लक्षण है। जो क्रोध को न जानकर क्रोध करता है वह अज्ञानी है ?
18. जिस प्रकार नवनीत दूध का सारभूत रूप है, वैसी ही सब लब्धियों का सार है ?
19. साध्य के बारे में दुनियाँ में कभी विसंवाद नहीं होते, विसंवाद होते हैं मात्र..... में मंजिल में विसंवाद कभी नहीं होता, विसंवाद होता मात्र पथ में ?
20. पथ पहले विचारों में बनते हैं तदनु रूप विचारों के पथ में आते हैं ?
21. हम उत्सर्ग (मुख्य) मार्ग पर न करें और न ही अपवाद (गौण) मार्ग का अपवाद ?
22. एकांत से निमित्त को मुख्य मानकर उस की ओर ही देखने से..... में कमजोरी आती है ?
23. जो व्यक्ति के पथ पर नहीं चला वह दूसरों का भी हित नहीं कर सकता ?
24. वीतरागता आत्मा का स्वभावभूत गुण है उसके बिना हमारा..... नहीं हो सकता ?

25. पुण्य से नहीं पुण्य के फल से डरो, नियम से पाओगे। क्योंकि पुण्य के फल का भोग आरंभ आदि के बिना नहीं हो सकता और आरंभ आदि में हिंसादि पाप होता ही है ?
26. बचाने का भाव को हम कभी भी हिंसा नहीं कह सकते। यदि बचाने के भाव को हिंसा कहा जाये तो.....को भी हिंसा कहना पड़ेगा। जो आगम के लिये इष्ट नहीं है ?
27. जो विश्व को जानने का प्रयास करेगा वह बन नहीं सकता किन्तु जो स्वयं को जानने का प्रयास करेगा वह स्वयं को तो जान ही लेगा साथ ही सर्वज्ञ भी बन जायेगा ?
28. हम सब ब्रह्मा के अंश नहीं हैं किन्तु हम सबमें ब्रह्मा जैसे है ?
29. सम्यग्दर्शन अनुकम्पा की अपेक्षा नवनीत की तरह कोमल है किन्तु.....की अपेक्षा वज्र से भी ज्यादा कठोर है ?
30. दर्शन विशुद्धि मात्र सम्यग्दर्शन नहीं है, दृष्टि में निर्मलता होना दर्शन विशुद्धि है और दृष्टि में..... आती है तत्त्व चिंतन से ?
31. पर्याय दृष्टि को अपनाने से ही में पक्षपात की तरंगें उठती है ?
32. जैसे-जैसे तत्त्व समझ में आता है वैसे-वैसे उस का भी बढ़ता जाता है ?
33. जीवन का लक्ष्य मात्र तत्त्वचर्या ही नहीं बल्कि.....भी होना चाहिये ?
34. जो भाषाविद् नहीं है, वह भी नहीं ऐसा निर्णय करना गलत है ?
35. भाषा की बनाई जा सकती है पर भावों की नहीं ?
36. उत्तम चारित्र और समता आना ही सब.....का सार है ?
37. जनता की भीड़ से भी अधिक घातक की भीड़ है ?
38. जमाने के अनुसार हम बदल सकते हैं लेकिन.....नहीं बदल सकते ?
39. जब मिथ्यात्व का विमोचन होता है तब की पहचान होती है ओर जब राग-द्वेष का विमोचन होता है तब उस सत्य की उपलब्धि ?
40. प्रभु की देशना में बाहरी बाते भले ही चलती रहें लेकिन वे सब.....के लिये ही चलती हैं ?
41. स्व. गुलाबचन्द्र मलैया स्मृति विद्वत् पुरस्कार किसको दिया गया ?
42. प्रो. भागचन्द्र जैन भास्कर डॉ. पुष्पलता जैन विद्वत् पुरस्कार किसको दिया गया ?
43. ब्र. संजीव भैया कटंगी को गढ़ाकोटा पंचकल्याणक में कौन सी उपाधि से सम्मानित किया गया ?
44. ब्र. अरूण भैया कटंगी को गढ़ाकोटा पंचकल्याणक में कौन सी उपाधि से सम्मानित किया गया ?
45. ब्र. शेलू भैया कटंगी को गढ़ाकोटा पंचकल्याणक में कौन सी उपाधि से सम्मानित किया गया ?
46. अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद् के गढ़ाकोटा पंचकल्याणक के अवसर पर चुनाव हेतु चुनाव अधिकारी किसे बनाया गया ?
47. अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद् के गढ़ाकोटा पंचकल्याणक के अवसर पर अधिवेशन में अध्यक्ष किसे चुना गया ?
48. मनुष्य के शरीर में कितनी स्वेद ग्रंथियां पायी जाती है ?
49. दिनांक 14 से 19 जनवरी 2019 तक हुये पंचकल्याणक किस परिवार के द्वारा कराया गया ?
50. 21 दिवसीय शांतिविधान कहां पर सम्पन्न हुआ ?

(10 प्रश्न संस्कार सागर फरवरी 2019 , 40 प्रश्न दिव्यवाणी सागर बूंद समाय, ज्ञानी/अज्ञानी, तत्त्व सिद्धांत से लिये गये हैं।
यह ग्रंथ आप मंगाना चाहते हैं तो सम्पर्क करे - फोन 0731- 4003506

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा: मार्च 2019

प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम स्थान

उम्र सदस्यता क्र.

पूर्ण पता

पिन कोड फोन नं..... (एस.टी.डी.)

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम हस्ताक्षर
नियम :- जब तक दूसरा प्रश्न-पत्र भरकर नहीं भेजते तब तक के लिए।

वर्ग पहेली 239

1	2	3		4	5		6	
8				8				
			9			10		11
	12	13		14	15		16	
17		18	19	20				
		21				22	23	
24	25		26	27	28		29	30
31		32		33		34		
		35			36			

बाये से दाये

1. ऋतु राज, एक श्रेष्ठ ऋतु -3
4. रत्न मालिका के रचयिता -5
7. लगातार, अनवरत -3
8. मुर्दा मृत्यु को प्राप्त देह -2
9. लीन होने का भाव -2
10. विवेक शून्य व्यक्ति -3
12. यश, कीर्ति -2
14. फिरकनी -2
16. रत्न, मोती आदि -2
18. चेतन युक्त द्रव्य, जीवनमय द्रव्य -4
20. गुण और पर्याय के समूह को कहते हैं -2
21. एक सर्वनाम अन्य पुरुष अनिश्चय वाचक -2
22. राजस्थान गुजरात की एक नदी -2
24. बल गुल्म -2
26. ममत्व, मेरापन -3
29. गर्व, अहं घमण्ड -2
31. नाश करने वाला -3
33. लहर, कल्लोल -3
35. व्यसन, आदत -2
36. बिजली आकाशीय बिजली -2

ऊपर से नीचे

1. वस्त्र, चीर -3
2. साधु, ऋषि -2
3. अभाषात्मक ध्वनि का एक रूप -2
4. एक आचार्य जिन्होंने समयसार कलश लिखा -3
5. मृत्यु, अवसान -2
6. श्रद्धदान, शाप से उल्टा -4
11. कस्बा, शहर -3
13. जीवन सहित -3
15. दूध, गोरस, गाय से प्राप्त द्रव्य -2
17. जैनधर्म के 10वें तीर्थंकर -5
19. संदेह, शक (उर्दू) -3
23. बर्फ, ठंडक -2
25. वह खेल जिसमें 52 पत्ते होते हैं -2
27. राय, वोट -2
28. गुजरात के एक जैनतीर्थ सिद्धक्षेत्र -3
30. दमन करने का भाव -3
32. बीता हुआ दिन -2
34. हाथी -2

वर्ग पहेली 238 का हल

1 शि	2 व	3 रा	ज	4 सिं	5 ह	चौ	6 हा	7 न
8 र	ज	नी		9 दू	र		10 य	म
11 पु	न		12 खा	र		13 क्रो		न
र		14 म	न		15 मा	ध	16 वी	
	17 रा	ज	दा	र			18 र	19 वि
20 य	ज	मा	न		21 ना	क		द्या
म				22 त		23 फ	र	सा
24 पा	25 पी		26 त	ना	27 व		28 म	ग
29 ल	त		ह		30 सु	र	न	र

..... सदस्यता क्र.

पता :

वर्ग पहली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को **हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन** (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 10 रु., द्वितीय पुरस्कार 5 रु., तृतीया पुरस्कार 4 रु.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

तेरे पूजन को भगवान



नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि :
प्रथम पुरस्कार १५१ रु.,
द्वितीय ५५ रु.,
तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

सभी स्थानों से प्रकाशित साहित्य एक ही स्थान पर उपलब्ध



सभी प्रमुख प्रकाशनों का साहित्य एक साथ प्रचुर मात्रा में श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर पर उपलब्ध है। अ. भा. दिगम्बर जैन युवक संघ से प्रकाशित लगभग 350 अनुपलब्ध एवं उपयोगी साहित्य का प्रकाशन।

आप पुरस्कार, जन्मदिवस भेंट, पुण्यतिथि भेंट आदि में ऐसा साहित्य एवं गिफ्ट आयटम घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं। इन्दौर से प्रायः सभी स्थानों के लिए बस, टांसपोर्ट, कोरियर, कार्गो सेवा उपलब्ध है। यदि आपको किसी साहित्य की आवश्यकता हो तो सत् साहित्य केन्द्र, इन्दौर के भारतीय स्टेट बैंक के खाता क्र. 63018387218 में अपनी राशि जमा कर कार्यालय में संचित करें।

घर बैठे सत्-साहित्य प्राप्त करें



परिवार सुरक्षा अभियान



परिवार सुरक्षा के सूत्र

- ♦ प्रेम/समर्पण/ धैर्य
- ♦ ममत्व/ममता
- ♦ मैत्री पूर्ण व्यवहार
- ♦ दैनिक परिवार मिलन भोजन माध्यम
- ♦ दैनिक मोबाईल निरीक्षण
- ♦ सतत् संवाद
- ♦ संवेदना का महत्व
- ♦ स्वरोजगार
- ♦ करुणा/क्षमा/सहिष्णुता
- ♦ संयमित वाणी



परिवार सुरक्षा के बाधक तत्व

- ♦ संस्कार शून्य शिक्षा
- ♦ व्हाट्सप सोशल मीडिया के उन्माद
- ♦ द्यूशन/टीवी
- ♦ अहम्/स्वार्थ/वहम्
- ♦ अकेलापन (संवादहीनता)
- ♦ उपभोगवादी सोच
- ♦ नौकरी लालसा (आत्मनिर्भरता का अभाव)
- ♦ बाहरी दखल परिवार
- ♦ पारिवारिक समरसता का अभाव

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर

www.sanskarsagar.org

प्रिंटिंग दिनांक : 26/02/2019, पोस्टिंग दिनांक : 03/03/2019